सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 341, नई दिल्ली । सोमवार, 17 फरवरी 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

कष्ट सहने पर ही हमें अनुभव होता है और दर्द हो, तभी हम सीख पाते हैं।

03 नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर महाकुंभ जा रहे श्रद्धालुओं की दर्दनाक मौत पर...
06 विज्ञान में महिलाओं के लिए भविष्य का निर्माण
08 मेडिकल रिप्रजेंटेटिव के दो दिवसीय क्रिकेट मैच का हुआ शुभारंभ

भीड़ भगदड़ और खूनी खेल... कैसे हुई त्रासदी? पढ़ें आपबीती

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर 25 फुट चौड़े फुटओवर ब्रिज की ओर जाने वाली 42 सीढ़ियों वाली संकरी सीढ़ी पर अचानक भगदड़ मच गई। देखते ही देखते भीड़ भगदड़ और खूनी खेल में बदल गई जिसके चलते 18 लोगों की मौत हो गई और कई लोग घायल हो गए। प्लेटफार्म 14 व 15 पर बिखरी चप्पलें फटे बैग और लावारिस सामान शनिवार रात हुई त्रासदी के मूक गवाह हैं।

संजय बाटला

नई दिल्ली। नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर 25 फुट चौड़े फुटओवर ब्रिज की ओर जाने वाली 42 सीढ़ियों वाली संकरी सीढ़ी पर अचानक भगदड़ मच गई। देखते ही देखते भीड़ भगदड़ और खूनी खेल में बदल गई, जिसके चलते 18 लोगों की मौत हो गई और कई लोग घायल हो गए।

उल्लेखनीय है कि सीढ़ियों, ओवरब्रिज और प्लेटफार्म 14 व 15 पर बिखरी चप्पलें, फटे बैग और लावारिस सामान शनिवार रात हुई त्रासदी के मूक गवाह हैं।

कई महाकुंभ तीर्थयात्री

यह हादसा शनिवार रात 9:55 बजे हुआ, जब हजारों यात्री, जिनमें से कई महाकुंभ तीर्थयात्री थे, स्टेशन पर उमड़ पड़े। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, ट्रेन की घोषणा में गड़बड़ी के कारण भ्रम और घबराहट की स्थिति पैदा हो गई।

वहीं, दिल्ली पुलिस ने कहा कि भ्रम इसलिए हुआ क्योंकि ट्रेनों की घोषणाओं में एक ही नाम 'प्रयागराज' से शुरू हो रहा था।

भगदड़ मचने की वजह

पुलिस ने कहा, "प्रयागराज स्पेशल के प्लेटफॉर्म 16 पर आने की घोषणा से भ्रम की स्थिति पैदा हो गई, क्योंकि प्रयागराज एक्सप्रेस पहले से ही प्लेटफॉर्म 14 पर थी। जो लोग प्लेटफॉर्म 14 पर अपनी ट्रेन तक नहीं पहुंच सके, उन्हें लगा कि उनकी ट्रेन प्लेटफॉर्म 16 पर आ रही है, जिससे भगदड़ मच गई।"

ट्रेन के नाम को लेकर हुई संशय

एक पुलिस अधिकारी ने कहा, ₹इसके अलावा, प्रयागराज जाने वाली चार ट्रेनें थीं, जिनमें से तीन देरी से चल रही थीं, जिससे अप्रत्याशित भीड़भाड़ हो गई।₹ दो अन्य ट्रेनें, स्वतंत्रता सेनानी एक्सप्रेस और भुवनेश्वर राजधानी एक्सप्रेस, पहले से ही देरी से चल रही थीं, जिससे प्लेटफॉर्म 13, 14 और 15 पर बेचैन यात्री खचाखच भरे हुए थे।"

अधिकारी ने बताया, "इसके बाद घोषणा हुई कि प्रयागराज के लिए एक विशेष ट्रेन प्लेटफॉर्म 16 से रवाना होगी।" एक प्रत्यक्षदर्शी ने बताया, "प्रयागराज जाने वाली एक ट्रेन (प्रयागराज एक्सप्रेस) पहले से ही प्लेटफॉर्म 14 पर थी। जब विशेष ट्रेन के बारे में घोषणा की गई, तो कई यात्रियों ने सोचा कि यह उनकी नियमित ट्रेन है और वे प्लेटफॉर्म 16 की ओर दौड़ पड़े।"

प्लेटफॉर्म 16 पर जाने का एकमात्र रास्ता 42-सीढ़ी वाली सीढ़ी थी 25 फुट चौड़ा फुटओवर ब्रिज। जैसे-जैसे हजारों लोग आगे बढ़ते गए, सीढ़ियां खतरनाक रूप से भीड़भाड़ वाली हो गईं। जो लोग ऊपर चढ़ रहे थे, उन्हें नीचे उतरने की कोशिश कर रहे लोगों ने रोक दिया, जिससे लोगों के लिए मुश्किलें खड़ी हो गईं।

बेकाबू भीड़

एक प्रत्यक्षदर्शी ज्ञानेंद्र सिंह ने याद किया,₹भीड़ का बल असहनीय था। लोग फंस गए थे, हिल नहीं पा रहे थे। कुछ लोग अपना पैर खो बैठे और गिर गए, दूसरों को भी अपने साथ घसीटते हुए नीचे ले गए।₹

उन्होंने कहा कि हवा में चीख-पुकार मचने से दहशत फैल गई। ₹अरे रुक जाओ, लोग मर रहे हैं,₹ एक जीवित व्यक्ति चिल्लाया, लेकिन भगदड़ में उसकी आवाज दब गई। पीछे से लगातार दबाव के कारण, कई लोग - खासकर महिलाएं और बुजुर्ग यात्री गिर गए और कुचले गए।

'लोग मेरे ऊपर गिर रहे थे'

प्रत्यक्षदर्शी ने कहा, ₹मैं हिल नहीं पा रहा था। लोग मेरे ऊपर गिर रहे थे,₹ एक जीवित व्यक्ति ने कहा, जो अभी भी कांप रहा था।

बचाव अभियान में शामिल एक रेलवे कर्मचारी ने इस दृश्य को अपने द्वारा देखी गई सबसे भयानक आपदाओं में से एक बताया। उन्होंने कहा, ₹लोगों के पास अपना सामान उठाने का समय नहीं था। वे बस अपनी जान बचाने के लिए भागे। जूते बिना जोड़े के रह गए, टूटी चूड़ियां जमीन पर बिखरी पड़ी थीं, और एक बच्चे का स्कूल बैग लावारिस पड़ा था।"

रेलवे अधिकारियों ने स्वीकार किया वजह

रेलवे अधिकारियों ने स्वीकार किया कि इस त्रासदी में भीड़भाड़ की मुख्य भूमिका थी। 1,500 प्रति घंटे की दर से सामान्य टिकट बेचे जाने के कारण, यात्रियों की बढ़ती भीड़ को संभालना लगभग असंभव हो गया था।

अधिकारियों ने तब से सुरक्षा कड़ी कर दी है और यह पता लगाने के लिए जांच शुरू कर दी है कि क्या गलत हुआ और ऐसी घटनाओं को कैसे रोका जा सकता है। रविवार की सुबह तक, स्टेशन पर सामान्य परिचालन फिर से शुरू हो गया था, लेकिन रात के निशान अभी भी बने हुए हैं।

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर हुए भगदड़ हादसे ने 15 निर्दोष जिंदगियाँ छीन लीं, लेकिन यह घटना हमें चेतावनी भी देती है कि अब बदलाव की घड़ी आ चुकी है। अव्यवस्था, भीड़ नियंत्रण की कमी और सुरक्षा इंतज़ामों की असफलता ने इस त्रासदी को जन्म दिया। अब ज़रूरी है कि हम इससे सबक लें और भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकें। इस हादसे ने यह साफ कर दिया कि भीड़ नियंत्रण और यात्री सुरक्षा के लिए रेलवे को आधुनिक रणनीतियाँ अपनानी होंगी। रेलवे प्रशासन को पहले से ही बड़े आयोजनों और तीर्थ यात्राओं के समय संभावित भीड़ को भांपकर उचित प्रबंध करने चाहिए। नई तकनीकों का उपयोग कर प्रवेश और निकास को सुव्यवस्थित बनाया जाए, ताकि यात्रियों का आवागमन सुचारू रूप से हो। सरकार ने इस घटना पर संवेदना व्यक्त की है और रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने उच्चस्तरीय जांच के आदेश दिए हैं। लेकिन इससे आगे बढ़ते हुए, हमें एक सकारात्मक सोच के साथ ऐसी व्यवस्थाएँ करनी होंगी जो यात्रियों की सुरक्षा को प्राथमिकता दें। बेहतर यातायात प्रबंधन, पर्याप्त पुलिस बल की तैनाती और सूचना प्रणाली को प्रभावी बनाकर हम इस तरह की घटनाओं को रोक सकते हैं। अब समय आ गया है कि रेलवे सिर्फ सफर का माध्यम न रहे, बल्कि एक सुरक्षित और सुगम यात्रा का प्रतीक बने। हमें इस हादसे से प्रेरणा लेकर एक ऐसा तंत्र विकसित करना होगा जहाँ हर यात्री निश्चिंत होकर सफर कर सके। सकारात्मक बदलाव ही सच्ची श्रद्धांजलि होगी! *-प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)*

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर भगदड़... हादसा या साजिश, अश्विनी वैष्णव को लेकर क्या बोले केंद्रीय मंत्री?

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर 15 फरवरी को हुई भगदड़ में 18 लोगों की मौत और कई घायल हो गए। केंद्रीय मंत्री सुकांत मजूमदार ने घटना के पीछे साजिश या फर्जी खबर फैलाने की आशंका जताई और रेल मंत्रालय से जांच की बात की। दो सदस्यीय समिति का गठन कर उच्च स्तरीय जांच शुरू की गई। रेलवे ने मृतकों के परिवारों को मुआवजा देने की घोषणा की।

नई दिल्ली। केंद्रीय मंत्री सुकांत मजूमदार ने कहा कि रेल मंत्रालय इस बात की जांच कर रहा है कि क्या ₹फर्जी खबर₹ फैलाई गई थी, जिसके कारण शनिवार को नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर भगदड़ मच गई। इस हादसे में 18 लोगों की मौत हो गई और कई अन्य घायल हो गए।

उन्होंने यह भी कहा कि भारतीय रेलवे भगदड़ के पीछे ₹साजिश₹ के पहलू की जांच कर रहा है। केंद्रीय मंत्री ने कहा, ₹यह बहुत दुखद घटना है। हम और हमारी सरकार बहुत दुखी हैं।"

'अश्विनी वैष्णव पद के लिए सक्षम'

मजूमदार ने रविवार को कहा, "रेल मंत्रालय इस घटना की जांच कर रहा है ताकि यह पता लगाया जा सके कि क्या कोई साजिश या फर्जी खबर फैलाई गई थी जिसके कारण ऐसी घटना हुई... रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव अपने पद के लिए बेहद सक्षम हैं...₹

इस बीच, 15 फरवरी को नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर हुई भगदड़ की जांच के लिए दो सदस्यीय समिति गठित की गई है। इस भगदड़ में 18 लोगों की मौत हो गई थी और कई अन्य घायल हो गए थे।

रेलवे ने रविवार को बताया कि समिति में उत्तर रेलवे के प्रधान मुख्य वाणिज्य प्रबंधक (पीसीसीएम) नरसिंह देव और प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त (पीसीएससी) पंकज गंगवार शामिल हैं।

रेलवे ने कहा कि समिति ने घटना की उच्च स्तरीय जांच (एचएजी) शुरू कर दी है। जांच के हिस्से के रूप में, समिति ने जांच में सहायता के लिए रेलवे स्टेशन से सभी वीडियो फुटेज सुरक्षित करने का आदेश दिया है।

शनिवार को नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर भगदड़ मच गई जिसमें 18 लोगों की मौत हो गई। यह हादसा रात 10 बजे हुआ, जब लाखों श्रद्धालु महाकुंभ 2025 के लिए प्रयागराज जा रहे थे, जिससे स्टेशन पर काफी भीड़ हो गई।

मृतकों को मुआवजा और नामों की सूची

मृतकों की पहचान 79 वर्षीय आहा देवी, 41 वर्षीय पिंकी देवी, 50 वर्षीय शीला देवी, 25 वर्षीय व्योम, 40 वर्षीय पूनम देवी, 35 वर्षीय ललिता देवी, 11 वर्षीय सुरुचि; 40 साल की कृष्णा देवी, 15 साल के विजय साह, 12 साल के नीरज, 40 साल की शांति देवी, 8 साल की पूजा कुमार, 34 साल की संगीता मलिक और पूनम, 40 साल की ममता झा, 7 साल की रिया सिंह, 24 साल की बेबी कुमारी और 47 साल के मनोज शामिल हैं। भारतीय रेलवे ने मृतकों के परिवारों को 10 लाख रुपये, गंभीर रूप से घायलों को 2.5 लाख रुपये तथा मामूली रूप से घायलों को 1 लाख रुपये मुआवजा देने की घोषणा की है। उत्तर रेलवे के सीपीआरओ ने एएनआई को बताया कि नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर एक दुखद घटना घटी, जब एक यात्री प्लेटफॉर्म 14 और 15 की ओर जाने वाली सीढ़ियों पर संतुलन खो बैठा और फिसल गया, जिसके परिणामस्वरूप कई अन्य घायल हो गए।

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन हादसा: एलजी सक्सेना की पोस्ट पर मचा बवाल, विपक्षी दलों ने उठाए सवाल

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर शनिवार रात हुई भगदड़ पर दिल्ली के उपराज्यपाल वीके सक्सेना के ट्विटर पोस्ट पर राजनीतिक विवाद छिड़ गया है। दरअसल उन्होंने पहले एक ट्वीट किया जिसमें उन्होंने मृतक लोगों के प्रति संवेदना व्यक्त की। वहीं बाद में मृतक होने की जानकारी एडिट कर उसे हटा दिया। इस पर आप सहित अन्य विपक्षी दल ने सवाल उठाए हैं।

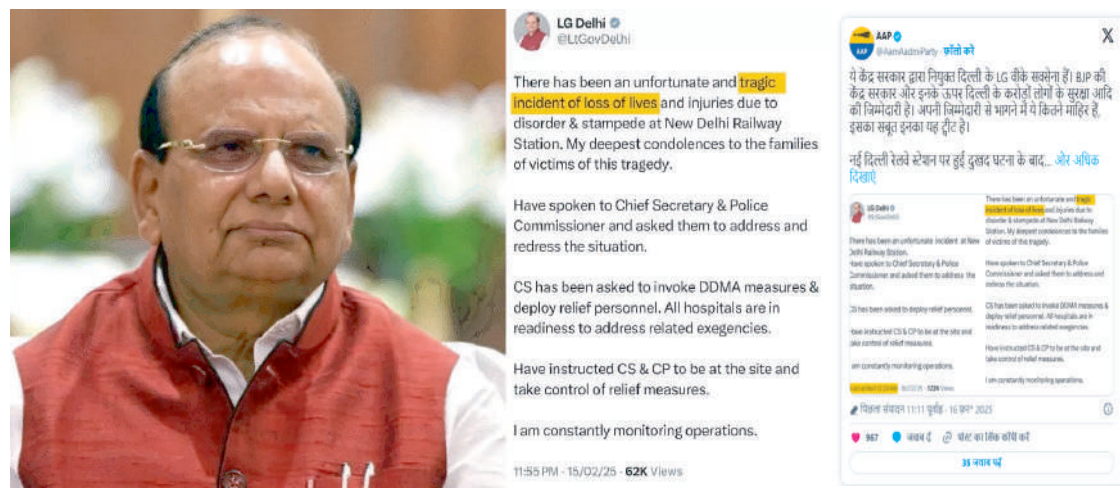

नई दिल्ली। नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर शनिवार रात हुई भगदड़ पर दिल्ली के उपराज्यपाल वीके सक्सेना के ट्विटर पोस्ट पर राजनीतिक विवाद छिड़ गया है। इस घटना में पांच बच्चों सहित 18 लोगों की मौत हो गई और कई अन्य घायल हो गए। एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर सक्सेना ने स्टेशन पर अव्यवस्था और भगदड़ के कारण लोगों के मौत की बात को स्वीकार किया गया था और पीड़ितों के परिवारों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त की थी।

हालांकि इसके कुछ ही मिनट बाद उन्होंने अपना पोस्ट एडिट किया और मौत होने की बात को डिलीट कर दिया था। इसके बाद उन्होंने घटना को केवल दुर्भाग्यपूर्ण बता दिया।

आम आदमी पार्टी ने लगाए आरोप

इसके बाद विपक्षी दलों ने इसकी आलोचना की। उन्होंने वीके सक्सेना और केंद्र पर हादसे को कमतर आंकने की कोशिश करने का आरोप लगाया। आम आदमी पार्टी (आप) ने इसे जिम्मेदारी से बचने की कोशिश बताया है।

जिम्मेदारी से भागने में माहिर: AAP

आम आदमी पार्टी ने एक बयान में कहा, ₹ये केंद्र सरकार द्वारा नियुक्त दिल्ली के LG वीके सक्सेना हैं। BJP की केंद्र सरकार और इनके ऊपर दिल्ली के करोड़ों लोगों के सुरक्षा आदि की जिम्मेदारी है। अपनी जिम्मेदारी से भागने में ये कितने माहिर हैं, इसका सबूत इनका यह ट्वीट है।"

यात्रियों की मौत की बात हटा दी: AAP

इसमें आगे कहा गया, "नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर हुई दुखद घटना के बाद इन्होंने पहले अपने ट्वीट में भगदड़ और यात्रियों के मौत होने की बात स्वीकारी की। इसके बाद अपने आकाओं को बचाने के लिए इन्होंने अपना ट्वीट ही एडिट कर दिया और इसमें यात्रियों के मौत होने की बात ही हटा दी। 15 से ज्यादा लोगों की जान चली गई और केंद्र सरकार-LG दुख जताना तो दूर, इसे स्वीकार तक नहीं कर रहे हैं। इनकी नाकामी का इससे शर्मनाक नमूना और कुछ नहीं हो सकता है।

शिवसेना नेता प्रियंका चतुर्वेदी ने भी उठाए सवाल

शिवसेना (यूबीटी) सांसद प्रियंका चतुर्वेदी ने भी रेलवे अधिकारियों के पोस्ट के साथ वीके सक्सेना के ऑरिजिनल और एडिट ट्वीट्स के स्क्रीनशॉट शेयर करते हुए अधिकारियों के बीच समन्वय की कमी पर सवाल उठाया। भगदड़ शनिवार रात करीब 9:55 बजे उस समय मची जब हजारों यात्री प्लेटफार्म 12, 13 और 14 पर भीड़ जमा हो गए थे, जिनमें से कई लोग महाकुंभ के लिए प्रयागराज जाने के लिए ट्रेनों में चढ़ने का प्रयास कर रहे थे।

15 सालों में देश में कब-कब हुई भगदड़ की बड़ी घटनाएं, कितने लोगों की हुई मौत...

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन में हुई भगदड़ में 18 लोगों की मौत हो गई और 25 लोग घायल हुए थे। इस हादसे ने पुराने दर्दनाक हादसों की याद ताजा कर दी है। स्टेशन पर 2004 2010 2012 2013 और इसके अलावा भी इसी तरह की भगदड़ें पहले मची थी जिसमें कई लोगों की जान गई थीं। इसके बारे में आपको आगे खबर में बताते हैं।

नई दिल्ली। नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर शनिवार देर रात मची भगदड़ ने कई लोगों की जान ले ली। इस हादसे में 18 लोगों की मौत हो गई और 25 से अधिक घायल हुए हैं। बता दें कि महाकुंभ जाने के लिए प्रयागराज की ट्रेन पकड़ने पहुंचे यात्रियों की भीड़ अनियंत्रित हो गईं थी।

इस वजह से ये हादसा हुआ, धार्मिक उत्सव के दौरान हुई इस तरह की भगदड़ की घटना नई नहीं है, पहले भी ऐसी कई घटनाएं घट चुकी हैं और कई लोग अपनी जान गंवा चुके हैं।

पहले भी हुईं है ऐसी घटनाएं

अब आपको विस्तार से बताते हैं, पहले इस तरह की घटना कब और कहां हुई थी।

16 मई, 2010 में नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर भगदड़ मची थी जिसमें 2 लोगों की मौत हो गई और 30 लोग घायल हो गए थे।

10 फरवरी 2013: 10 फरवरी 2013 को कुंभ मेले के दौरान उत्तर प्रदेश के प्रयागराज रेलवे स्टेशन पर अचानक भगदड़ मच गई थी, जिसमें कम से कम 32 लोगों की मौत हो गई थी। जानकारी के मुताबिक 10 फरवरी 2013 को मौनी अमावस्या थी और इस वजह से भारी संख्या में श्रद्धालु स्नान के लिए पहुंचे थे।

3 अक्टूबर 2014: इस दिन पटना के गांधी मैदान में दशहरा के दौरान भगदड़ मची थी, इस वजह से 32 लोगों की मौत हो गई थी।

14 जुलाई 2015: आंध्र प्रदेश के राजमुंदरी में गोदावरी नदी के तट पर आयोजित धार्मिक उत्सव में भगदड़ मचने से 27 लोगों की मौत हो गई।

1 जनवरी 2022 : मां वैष्णो देवी मंदिर कटरा में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ के कारण भगदड़ मचने से 12 श्रद्धालुओं की मौत हो गई।

31 मार्च 2023: इंदौर में रामनवमी के मौके पर आयोजित हवन के दौरान एक प्राचीन कुंए के ऊपर लगी स्लैब ढही 36 लोगों की मौत हो गई।

2 जुलाई 2024 : हाथरस में एक धार्मिक सत्संग के कार्यक्रम में भगदड़ होने से 107 लोगों की मौत।

29 जनवरी 2025: प्रयागराज महाकुंभ में भगदड़ होने से 30 श्रद्धालुओं की मौत।

कैसी मची भगदड़?

नई दिल्ली में हुई हालिया घटना में हुई इस भगदड़ की जांच जारी है। नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म नंबर 13 और 14 पर शनिवार देर रात

उस समय भगदड़ मच गई जब कथित तौर पर यात्रियों के बीच प्रयागराज जा रही दो ट्रेनों के रद्द होने की अफवाह फैल गई।

हादसे के कारण

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर नहीं थी भीड़ प्रबंधन की कोई तैयारी।

तीन ट्रेनों के जाने में विलंब से प्लेटफार्म पर यात्री संख्या बढ़ी।

भीड बढने की चिंता नहीं की गई और जनरल टिकटों को बेचना जारी रखा गया।

सीढ़ियों व उसके आसपास बैठे लोगों को हटाने का।

घायलों को पहुंचाया गया अस्पताल, रेलवे ने दिए उच्चस्तरीय जांच के आदेश।

भगदड़ पर रेलवे ने किया मुआवजे का एलान, मृतकों के परिजनों को 10-10 लाख और घायलों को मिलेंगे 2.5 लाख

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर शनिवार को भगदड़ में 18 लोगों की जान चली गई। घटना रात लगभग 10 बजे हुई। महाकुंभ जाने वाले यात्रियों की भारी भीड़ के बाद स्टेशन पर भगदड़ की स्थिति बनी। इस बीच रेलवे ने घटना पर मुआवजे का एलान किया है। मृतकों के परिजनों को 10-10 लाख और गंभीर घायलों को 2.5 लाख व मामूली घायलों को एक लाख रुपये मिलेंगे।

नई दिल्ली। नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर हुई भगदड़ की घटना पर रेलवे ने मुआवजे का एलान किया है। रेलवे ने भगदड़ में मारे गए लोगों के परिजनों को 10 लाख रुपये का मुआवजा देने की घोषणा की है। वहीं गंभीर रूप से घायलों को 2.5 लाख रुपये और मामूली रूप से घायलों को 1 लाख रुपये की आर्थिक सहायता दी जाएगी। नई दिल्ली स्टेशन पर हुई भगदड़ में अभी तक 18 लोगों की मौत की खबर है। कई यात्री घायल हैं। नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर शनिवार की रात लगभग 10 बजे भगदड़ मची। महाकुंभ जाने वाले यात्रियों की भारी भीड़ स्टेशन पर उमड़ी। देखते ही देखते स्टेशन पर भगदड़ मच गई। एनडीआरएफ कमांडेंट दौलत राम चौधरी ने कहा कि अब स्थिति नियंत्रण में है। हमें प्लेटफॉर्म नंबर 14 पर भगदड़ की सूचना मिली थी। रेलवे बोर्ड ने रविवार को बताया कि मामले की जांच दो सदस्यीय उच्च स्तरीय समिति करेगी। समिति का गठन कर दिया गया है। रेलवे बोर्ड के सूचना एवं प्रचार के कार्यकारी निदेशक दिलीप कुमार ने कहा कि स्थिति नियंत्रण में है। यात्रियों को विशेष ट्रेन से भेज दिया गया है। रेलवे स्टेशन पर ट्रेनों की आवाजाही सामान्य है।

हादसे में इन लोगों की गई जान

आहा देवी (79) पत्नी रविन्दी नाथ निवासी बक्सर (बिहार)
पिंकी देवी (41) पत्नी उपेन्द्र शर्मा निवासी संगम विहार (दिल्ली)
शीला देवी (50) पत्नी उमेश गिरी निवासी सरिता विहार (दिल्ली)
व्योम (15) पुत्र धर्मवीर निवासी बवाना (दिल्ली)
पूनम देवी (40) पत्नी मेघनाथ निवासी सारण (बिहार)
ललिता देवी (35) पत्नी संतोष निवासी परना (बिहार)
सुरुचि (11) पुत्री मनोज शाह निवासी मुजफ्फरपुर (बिहार)
कृष्णा देवी (40) पत्नी विजय शाह निवासी समस्तीपुर (बिहार)
विजय साह (15) पुत्र राम सरुप साह निवासी समस्तीपुर (बिहार)
नीरज (12) पुत्र इंद्रजीत पासवान निवासी वैशाली (बिहार)
शांति देवी (40) पत्नी राज कुमार मांझी निवासी नवादा (बिहार)
पूजा कुमार (8) पुत्री राज कुमार मांझी निवासी नवादा (बिहार)
संगीता मलिक (34) पत्नी मोहित मलिक निवासी भिवाणी (हरियाणा)
पूनम (34) पत्नी वीरेंद्र सिंह निवासी महावीर एक्लेव
ममता झा (40) पत्नी विपिन झा निवासी नांगलोई (दिल्ली)
रिया सिंह (07) पुत्री ओपिल सिंह निवासी सागरपुर (दिल्ली)
बेबी कुमारी (24) पुत्री प्रभु साह निवासी बिजवासन (दिल्ली)
मनोज (47) पुत्र पंचदेव कुशवाह निवासी नांगलोई (दिल्ली)

मूल नक्षत्र में जन्मे जातक का स्वभाव, कैरियर ,रोग और उपायः

ज्योतिषाचार्य पंडित योगेश पौराणिक(इंजी .)

नक्षत्र मंडल में बिच्छू के डंक की तरह दिखने वाले तारे मूल नक्षत्र है। मूल नक्षत्र में मुख्यतः 11 तारे हैं। भारतीय विद्वानों द्वारा इसे शेर की पूंछ सरीखा माना है। मूल का अर्थ है पेड़ की जड़ अतः इस नक्षत्र का नाम ही उसके गुणों की पहचान करा देता है। इस नक्षत्र के नक्षत्रपति केतु तथा अधिपति देवी नृति को माना है। जो कि अधर्म व हिंसा की पुत्री हैं। इसे गंडात नक्षत्र भी माना गया है।

स्वभावः मूल नक्षत्र में जन्मे जातक आध्यात्मिक, योगी, ध्यानी, ज्ञानी, मिथ्याभिमानी, माता , पिता तथा गुरु जनो का सेवक , किसी भी समस्या की तह तक पहुंचकर समस्या का हल खोजने में माहिर तथा लक्ष्य के प्रति ईमानदार होता है। आचार्य वराहमिहिर के अनुसार मूल नक्षत्र में जन्मा जातक दृढ़ निश्चयी,हठी, धनी,विनम्र,दयालु ,सुखी तथा संवेदनशील होता है।

कैरियरः मूल नक्षत्र में जन्मा जातक पुलिस अधिकारी, अन्वेषक, ज्योतिषी, न्यायाधीश,सैनिक, वैध, नेता, गायक, खगोल शास्त्री, परामर्श दाता, कंप्यूटर विशेषज्ञ, जड़ी बूटी व्यापारी, कोयला पेट्रोलियम से संबंधित व्यापार,तंत्र मंत्र से जुड़े कार्य आदि में सफलता प्राप्त करता है।

रोगः मूल नक्षत्र के जातकों को मुख और गले से संबंधित रोग तथा पेट के रोगों से परेशानी होती है।

उपायः मूल नक्षत्र में जन्मे जातकों को भगवान शिव, गणेश तथा मां काली की उपासना अत्यंत लाभकारी होती है। सभी प्रकार के कष्टों से मुक्ति हेतु इन्हे दुर्गा कवच का पाठ करना चाहिए। लाल,काले, गेरुआ रंग का प्रयोग मूल नक्षत्र के जातकों के लिए भाग्यशाली होता है।

ब्रह्माण्ड का परिचय - विशेष कर पृथ्वीलोक के सप्तद्वीप की जानकारी सरल भाषा में (एक योजन यानि 12.8 किलोमीटर होता है।)

जम्बूद्वीप के बाद प्लक्षद्वीप है। यह जम्बूद्वीप से दोगुना विस्तृत है। इसे गोमेद द्वीप भी कहते हैं। इस द्वीप में पाकड़ का वृक्ष है। अग्निदेव इस द्वीप के अधिपति हैं। यह क्षार और इक्षु रस के समुद्र से घिरा हुआ है। वहाँ के मानव सूर्य की आराधना करते हैं। वहाँ मानव के साथ देवता एवं गन्धर्व भी सुखपूर्वक निरन्तर निवास करते हैं। प्रजा को आधि - व्याधि कभी नहीं होती है। वहाँ के मानव की उम्र 10 हजार वर्ष की होती है।

शाल्मली द्वीप प्लक्षद्वीप से दोगुना विस्तृत है। इस द्वीप में सेमल का वृक्ष है। इस वृक्ष पर गरुड़ जी का निवास है। इस द्वीप के मानव वेदस्वरूप ऐश्वर्य सम्पन्न हैं। वे चन्द्रमा की उपासना करते हैं। शाल्मलीद्वीप गन्ने के रस समुद्र और मदिरा के समुद्र से घिरा हुआ है।

शाल्मलीद्वीप से दोगुना विस्तार वाला कुशद्वीप है। यह मदिरा और घी के समुद्र से घिरा हुआ है। इस द्वीप में कुशों का एक महान पुञ्ज प्रकाशित होता रहता है। वहाँ के मानव श्रेष्ठ देवताओं के समान तेजस्वी हैं। वे यज्ञ आदि से श्रीहरि की उपासना करते हैं। वहाँ मानव के साथ दैत्य, दानव, देवता, गन्धर्व, यक्ष, किम्पुरुष आदि निवास करते हैं।

कुशद्वीप से दोगुना विस्तार वाला क्रौंचद्वीप है। इसमें क्रौंच नामक पर्वत विद्यमान है, उसी के कारण इसका नाम क्रौंचद्वीप हुआ। वहाँ के मानव वरुणदेव के उपासक हैं। यह द्वीप दूध से घिरा हुआ है।

क्रौंच द्वीप से दोगुना विस्तृत शाकद्वीप है। यह मट्ठा समुद्र से घिरा हुआ है। इसमें शाक नामक विशाल वृक्ष है। वहाँ के मानव वायु देवता की उपासना करते हैं।

शाक द्वीप से दोगुना विस्तार वाला अन्तिम पुष्कर द्वीप है। यह स्वादिष्ट मीठे जल से घिरा हुआ है। इस द्वीप में भगवान विष्णु ने ब्रह्मा के आसन के रूप में स्वर्ण पत्रों वाले विशाल कमल (पुष्कर) की रचना की है। इसी कारण इस द्वीप का नाम पुष्कर हुआ। इस द्वीप में सिर्फ दो ही वर्ष (देश) हैं। वहाँ के मानव श्रीहरि की उपासना करते हैं। उनमें क्रोध और मात्सर्य नहीं होता। पुण्य और पाप की प्रवृत्ति नहीं होती है। उनकी आयु 10 हजार से लेकर 20 हजार वर्ष तक की होती है। सभी देवताओं की तरह जप करते रहते हैं।

पुष्कर द्वीप के पूर्वी तथा पश्चिमी वर्षों (देश) की सीमा निश्चित करने वाला मानसोत्तर नामक एक ही पर्वत है। इसकी चारों दिशाओं में इन्द्र आदि लोकपालों के चार पुर हैं। इनके ऊपर से होकर सूर्य निकलते हैं और वह सुमेरु की प्रदक्षिणा करते हैं। यहाँ की प्रजा खोंड आदि (मिष्ठान्न) का भोजन करती हैं।

पुष्कर द्वीप के मीठे जल के समुद्र के आगे कोई भी लोक नहीं है। पुष्कर द्वीप से दुगनी स्वर्णमयी भूमि है, जो सभी प्रकार के प्राणियों से रहित है।

उक्त स्वर्णमयी भूमि से आगे लोकालोक पर्वत है और घनघोर अंधकार है।

सभी छह द्वीपों में सात-सात देश हैं। सात-सात पर्वत हैं। सात-सात नदियाँ हैं और चार-चार वर्ण के मानव रहते हैं।

इस प्रकार सातों द्वीप सात समुद्रों से घिरे हुए हैं। द्वीप एवं समुद्र संख्या में समान हैं, किन्तु क्रमशः एक - दूसरे से द्विगुणित विस्तार वाले हैं।

इतिहासकारों के अनुसार - भारतवर्ष के अन्तर्गत नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, बर्मा, चीन, पाकिस्तान, अफ़गानिस्तान, रूस, इराक, ईरान, मिश्र, सऊदी अरब, इजराइल, कजाकिस्तान, मंगोलिया, इण्डोनेशिया, मलेशिया, जावा, सुमात्रा आदि देशों की सीमा से भी अधिक देश थे।

तुलसी के पत्ते इन दिनों नहीं तोड़ने चाहिएः

रविवार, एकादशी, चंद्र ग्रहण, सूर्य ग्रहण, अमावस्या, द्वादशी, चतुर्दशी, पूर्णिमा, संक्रांति.

तुलसी के पत्ते तोड़ने से जुड़े कुछ और नियमः

1. तुलसी के पत्ते तोड़ने से पहले हाथ जोड़कर प्रार्थना करनी चाहिए.
2. तुलसी के पत्तों को नाखूनों से नहीं तोड़ना चाहिए.
3. तुलसी के पत्ते बिना स्नान किए या अशुद्ध हाथों से नहीं तोड़ने चाहिए.
4. सूर्यास्त के बाद तुलसी के पत्ते नहीं तोड़ने चाहिए.
5. घर में जब किसी बच्चे का जन्म हुआ हो, तब तक तुलसी के पत्ते नहीं तोड़ने चाहिए.
6. अगर घर में किसी की मृत्यु हो जाए, तो 13 दिन तक तुलसी के पत्ते नहीं तोड़ने चाहिए.
7. तुलसी के पत्तों को केवल धार्मिक या स्वास्थ्य कारणों से तोड़ा जाना चाहिए.

धड़कन व पित्ता

आवला का ताज़ा रस 50 ग्राम और शहद 50 ग्राम, दोनों को कांच या मिट्टी के बर्तन में मिक्स कर ले, अन्य किसी बर्तन मे नहीं। यह मिश्रण आप सुबह शाम खाली पेट 50 50 ग्राम की मात्रा में प्रयोग करे। यह मिश्रण दिल की धड़कन बढ़ना + घबराहट होना + सांसे तेज चलना और पित्ती की प्रॉब्लम मे बहुत उपयोगी है, एक माह तक लगातर प्रयोग कीजिये। नोट शुगर वाले पेशेंट शहद कम मात्रा मे डालकर लीजिए और जो शहद नहीं खाते वो धागे वाली मिश्री डालकर प्रयोग करें।

पित्ता खाने के फायदे

डायबिटीज में मददगार अगर किसी व्यक्ति को डायबिटीज की बीमारी है, तो ऐसे में पिस्ते का सेवन फायदेमंद हो सकता है। पिस्ता (Pista) एक सुपर हेल्दी नट्स है, इसमें लो-ग्लाइसेमिक इंडेक्स होता है जो डायबिटीज को कंट्रोल करने में मदद कर सकता है।

आंखों के लिए फायदेमंद अगर आप आंखों की रोशनी बढ़ाना चाहते हैं, तो ऐसे में पिस्ता (Pista) का सेवन लाभकारी हो सकता है। बता दें, पिस्ता में ल्यूटिन और जॉक्सन्थिन नामक एंटी ऑक्सीडेंट्स गुण पाए जाते हैं, जो आपको फ्री रेडिकल्स से बचाने का काम कर सकते हैं। पिस्ता को डाइट में शामिल कर आंखों की रोशनी को बढ़ाया जा सकता है।

मोटापा दूर करने के लिए अगर आप अपना वजन कम करना चाहते हैं, तो पिस्ता (Pista) आपके बड़े काम आ सकता है। पिस्ते को मॉडरेशन में खाने से वजन को कम करने में मदद मिल सकती है।

हड्डियों में मददगार अगर आप अपनी हड्डियों को मजबूत बनाना चाहते हैं तो इसमें पिस्ता (Pista) फायदेमंद हो सकता है। पिस्ता, कैल्शियम, पोटैशियम, मैग्नीशियम और विटामिन से भरपूर है। कमजोर हड्डियों को मजबूत बनाने के लिए आप पिस्ते को डाइट में शामिल कर सकते हैं।

कोलेस्ट्रॉल कम करने के लिए अगर आप ब्लड प्रेशर और कोलेस्ट्रॉल को कंट्रोल करना चाहते हैं तो ऐसे में पिस्ते (Pista) को अपनी डाइट में शामिल करें। बता दें, पिस्ता में पाए जाने वाले तत्व कोलेस्ट्रॉल को कम करने में मदद कर सकते हैं।

सूजन दूर करने के लिए पिस्ता (Pista) खाने से शरीर की सूजन को कम किया जा सकता है। पिस्ता में मौजूद एंटी-इंफ्लेमेटरी एंड एंटीऑक्सीडेंट गुण सूजन से राहत पहुंचाने का काम कर सकते हैं।

इम्यूनिटी मजबूत करने के लिए बीमारियों से बचने के लिए व्यक्ति की इम्यूनिटी का मजबूत होना बहुत जरूरी है। इसके लिए आप पिस्ते (Pista) का सेवन कर सकते हैं। पिस्ते में मौजूद टोकोफेरॉल प्रतिरक्षा प्रणाली को बेहतर कर सकता है। मजबूत इम्यूनिटी शरीर को कई संक्रमण से बचाने और शरीर को स्वस्थ रखने में मदद कर सकती है।

केले के चिप्स बनाते समय इन छोटे-छोटे टिप्स को करें फॉलो

केले के चिप्स बनाते समय सही केले का चयन करना बेहद ही जरूरी है। यह आपके टेस्ट पर निर्भर करता है कि आप किस तरह के चिप्स बनाना चाहते हैं। मसलन, क्रिस्पी चिप्स बनाने के लिए कच्चे हरे केले का उपयोग करें।

अक्सर स्नैक्स टाइम में चिप्स खाने का काफी मन करता है। अमूमन यह देखने में आता है कि लोग बाजार से चिप्स लाकर खाना पसंद करते हैं। जबकि ये चिप्स ना केवल महंगे होते हैं, बल्कि सेहत के लिए भी इन्हें अच्छा नहीं माना जाता है। ऐसे में आप खुद घर पर ही चिप्स बनाकर तैयार कर सकते हैं। इनमें केले के चिप्स का स्वाद काफी लाजवाब होता है। केरल के स्पेशल केले के चिप्स लोग बेहद ही चाव से खाते हैं। अगर आप इन्हें घर पर बना रहे हैं तो बस आपको कुछ छोटे-छोटे टिप्स का खासतौर पर ख्याल रखना चाहिए। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको केले के चिप्स बनाने के कुछ आसान टिप्स के बारे में बता रहे हैं-

सही केले का करें चयन

केले के चिप्स बनाते समय सही केले का चयन करना बेहद ही जरूरी है। यह आपके टेस्ट पर निर्भर करता है कि आप किस तरह के चिप्स बनाना चाहते हैं। मसलन, क्रिस्पी चिप्स बनाने के लिए कच्चे हरे केले का उपयोग करें। ये सख्त होते हैं और अच्छी तरह से तले जाते हैं। वहीं, अगर आप हल्के मीठे चिप्स बनाना चाहते हैं तो आधे पके केले का इस्तेमाल करें। हालांकि, यह बहुत अधिक नरम ना हो।

केले को सही तरीके से काटें

केले को सही तरह से काटना भी उतना ही जरूरी है। मसलन, क्रिस्पी चिप्स बनाने के लिए आप पतले स्लाइस करें। एक समान और पतले स्लाइस के लिए एक तेज चाकू या मैंडोलिन स्लाइसर का उपयोग किया जा सकता है। स्लाइस करने के बाद आप नमक के पानी में भिगोएं। यह उन्हें भूरा होने से रोकता है और तलने पर उन्हें क्रिस्पी बनाता है।

इन बातों का भी रखें ध्यान

अगर आप केरल के ऑथेंटिक टेस्ट के लिए आप नारियल तेल का इस्तेमाल करें। इसके अलावा, तेल के तापमान का भी ख्याल रखें। इसे हमेशा मध्यम आंच पर रखें। अगर तेल बहुत ज़्यादा गर्म होगा तो इससे चिप्स जल जाएंगे। वहीं अगर तापमान कम होगा तो इससे चिप्स सॉगी बनेंगे। चिप्स तलते समय इन्हें चलाते रहें। इससे वे एक समान रूप से पकते हैं और वे चिपकते नहीं हैं। जब चिप्स गर्म हों, तभी उनमें नमक व मसाले छिड़कें। गर्म होने पर चिप्स स्वाद को बेहतर तरीके से सोख लेते हैं।

घमरा, एक प्राकृतिक औषधि

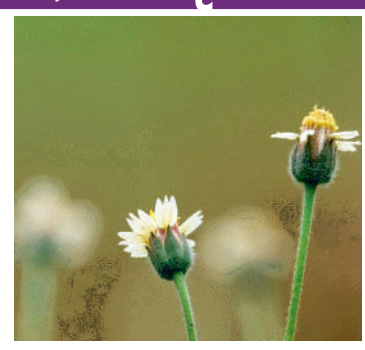

घमरा एक प्राकृतिक औषधि है, जो सदियों से ग्रामीण इलाकों में घावों के उपचार में उपयोग की जा रही है । इसके औषधीय गुण है घावों और संक्रमण के इलाज में प्रभावी बनाते हैं, आयुर्वेद में घमरा का पौधा पारंपरिक रूप से प्रयोग किया जाता है। यह एक तरह का खरपतवार है। लेकिन इसमें कई औषधीय गुण छिपे होते हैं। घमरा का पौधा हमारी कई बीमारियों को दूर करने में मददगार साबित हो सकता है। इसका इस्तेमाल करने से शरीर के घाव, सूजन और संक्रमण को दूर किया जा सकता है। घमरा के इस्तेमाल से शरीर में मौजूद विषाक्त पदार्थों को निकाला जा सकता है। दरअसल, हमारे शरीर के लिवर में डिटॉक्सिफिकेशन मैकेनिज्म में एंजाइम होते हैं। जब शरीर में किसी भी प्रकार की विषाक्तता होती है, जो उस दौरान एंजाइम को रक्त में प्रवाहित किया जाता है। घमरा का इस्तेमाल आप इन एंजाइम को उत्तेजित करने में कर सकते हैं। इसके अलावा घमरा इन एंजाइम को बढ़ावा देते हैं। आयुर्वेदाचार्य बताते हैं कि घमरा एक आयुर्वेदिक औषधिय जड़ी-बूटी है, जिससे शरीर की कई समस्याओं को दूर करने के लिए किया जा सकता है। इस औषधी का इस्तेमाल आप शरीर में होने वाले सूजन को कम करने के लिए भी कर सकते हैं। इसमें मौजूद सूजनरोधी गुण शरीर की चोट, सूजन, कब्ज और दर्द को दूर करने में असरकारी है। आप इन सभी समस्याओं से बचाव के लिए इसका प्रयोग कर सकते हैं। घमरा नियमित रूप से इस्तेमाल करने से आपकी इम्यूनिटी बढ़ सकती है। घमरा के एथनॉलिक अर्क में इम्यूनोस्टिमुलेटरी गुण पाया जाता है । अगर आप अपनी इम्यूनिटी को बढ़ाना चाहते हैं, तो घमरा से तैयार अर्क का इस्तेमाल जरूर करें। गठिया मरीजों को दर्द और सूजन की समस्या काफी ज्यादा देखने को मिलती है। यह दर्द बहुत ही कष्टदायक होता है। इस बीमारी को अर्थराइटिस रोगियों को जोड़ों में दर्द और सूजन काफी ज्यादा होती है। शरीर की इन समस्याओं को दूर करने के लिए आप घमरा का इस्तेमाल कर सकते है। गठिया से प्रभावित स्थान पर घमरा के तेल से मालिश करने से गठिया की परेशानी से राहत मिल सकता है। घमरा में मौजूद घटक कोशिकाओं को आराम दिलाने में मददगार होता है। घमरा के रस के इस्तेमाल से घाव को ठीक करने के लिए किया जाता है। यह एक पारंपरिक तरीका है। इसके औषधीय गुण रक्तस्त्राव को कम करने में असरदार होते हैं। अगर आपको किसी तरह की चोट या फिर जख्म है, या जलने से होने वाले घाव और सफेद दाग पर तो घमरा का उपयोग कर सकते हैं। इसके लिए आपको घमरा के पौधों से रस निकालकर सीधा घाव पर लगाना है। इसमें घाव को ठीक करने की प्रक्रिया काफी तेज होती है। इससे स्किन पर मौजूद संक्रमण को भी दूरघमरा की पत्तियों में मौजूद तेल कैंसर की कोशिकाओं को बढ़ने से रोकता है। अगर आप इसका इस्तेमाल नियमित रूप से करते हैं, तो यह फेफड़ों के कैंसर का विकास कम करता है। इसमें मौजूद एंटऑक्सीडेंट शरीर को कैंसर की कोशिकाओं से बचाव कर सकता है। हाई ब्लड प्रेशर रोगियों के लिए भी घमरा काफी फायदेमंद हो सकता है। इसका इस्तेमाल आप ब्लड प्रेशर में होने वाली समस्याओं को कम करने के लिए कर सकता हैं। ब्लड प्रेशर रोगियों को इसके अर्क का सेवन करना चाहिए। इससे उनकी कई समस्याओं को कम किया जा सकता है। घमरा का अर्क डायबिटीज रोगियों के लिए भी काफी फायदेमंद होता है। इसके पौधों में एंटी-डायबिटीक गुण मौजूद होता है। डॉक्टर बताते हैं कि अगर आप नियमित रूप से इसका सेवन करते हैं, तो रक्त में मौजूद शुगर लेवल को काफी हद तक कम किया जा सकता है। इसके अलावा यह इंसुलिन के उत्पादन को भी बढ़ावा देता है। अगर आपको डायबिटीज की समस्या है, तो घमरा के अर्क का सेघमरा कई औषधीय गुणों से भरपूर होता है।

आयुर्वेद और यूनानी में इसका इस्तेमाल काफी ज्यादा किया जाता है। इसका इस्तेमाल करने से पहले डॉक्टर से जरूरी सलाह लें।

अचाह होने में शरीर की क्या जरूरत.

शरीर के बिना हम क्या कर सकते हैं ? अचाह हो सकते हैं, अक्रिय हो सकते हैं। कुछ भी करनेमें शरीर की जरूरत है, पर कुछ भी न करने में शरीर की क्या जरूरत ? **चाह करने में शरीर की जरूरत है, पर अचाह होने में शरीरकी क्या जरूरत ?** देखने-सुनने में आँख-कान की जरूरत है, पर कुछ भी न देखने-सुनने में आँख-कान की क्या जरूरत ? **क्रिया करने में तो शरीर की जरूरत है, पर क्रिया-रहित होने में शरीर की जरूरत नहीं है।** पापी या पुण्यात्मा शरीरी (स्वयं) बनता है, शरीर नहीं बनता। मोटर के नीचे आकर कोई **आदमी मर गया तो दण्ड ड्राइवर को होगा, मोटर को नहीं**, जबकि ड्राइवरने उस आदमी को छुआ ही नहीं ! अगर उस ड्राइवर के पास एक दूसरा ड्राइवर भी बैठा हो तो उसको दण्ड नहीं होगा। दण्ड चलानेवाले (कर्ता)- को होगा। **कोई भी काम करने में कर्ता की जरूरत होती है,** पर **कोई भी काम न करने में कर्ता की क्या जरूरत है ?** शरीर तो मरने पर यहीं रह जायगा, फिर पाप-पुण्य का फल कौन भोगेगा ? जो शरीर को चलाता है, उसका चालक (कर्ता) बना हुआ है, वह (स्वयं) भोगेगा।

सेहत के लिए सेब या सेब का जूस, सबसे बढ़िया क्या है?

वैसे तो सेब का जूस पीने की तुलना में साबुत सेब खाना अधिक फायदेमंद साबित होता है। सेब फाइबर, आयरन और पाचन लाभ प्रदान करता है, जबकि इसका जूस ब्लड शुगर को बढ़ा सकता है और उच्च फ्रुक्टोज और सुक्रोज के कारण लीवर को नुकसान पहुंचा सकता है।

यह कहावत तो सबने सुनी होगी कि, 'एन एप्पल ए डे, कीप्स डॉक्टर अवे'। लेकिन क्या सेब को साबुत खाना बेहतर है या जूस के रूप में पीना ? एक्सपर्ट से जानिए कि जूस की तुलना में पूरा फल चुनना हमेशा अधिक फायदेमंद क्यों होता है। साबुत सेब फाइबर, विटामिन और खनिजों का एक पूरा पैकेज प्रदान करते हैं। जबकि जूस बनाते समय 4 से 5 सेबों का जूस थीक हो जाता है, जिससे चीनी और कैलोरी की मात्रा काफी बढ़ जाती है, जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है। इसके अतिरिक्त, सेब में घुलनशील फाइबर होता है, जो पाचन में सुधार करता है और आंत में लाभकारी बैक्टीरिया को बढ़ावा देता है। जूस निकालने के दौरान यह फाइबर नष्ट हो जाता है।

सेब बनाम सेब का जूस

हेल्थ एक्सपर्ट के मुताबिक, सेब में आयरन की मात्रा सबसे अधिक होती है, जो रक्त में हीमोग्लोबिन के स्तर को बनाए रखने में मदद करता है और एनीमिया से लड़ सकता है। डॉक्टर का कहना है कि रोजाना एक लाल या हरा सेब खाने से रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत होती है और बीमारियों का खतरा कम हो जाता है। सेब के छिलके में मौजूद पेट्रिन और अन्य पाचन एंजाइम पाचन में सहायता करते हैं, कब्ज और गैस जैसी समस्याओं को रोकते हैं। हालांकि, सेब का जूस पीने से ब्लड शुगर में तेजी से वृद्धि होती है, जिससे लीवर पर दबाव पड़ता है। लेकिन सेब खाने से यह समस्या नहीं होती। इसलिए, एक सेब खाने से उसके जूस पीने के फायदे कहीं अधिक हैं। तो, अगली बार जब आपको सेब का जूस चाहिए, तो इसके बजाय सेब लेने पर विचार करें।

फरवरी-मार्च में ट्रिप होगी शानदार , बनाएं असम जाने का प्लान, इन 5 जगहों को एक्सप्लोर करें

फरवरी-मार्च का ऐसा महीना जहां सर्दी कम हो जाती है और घूमने के लिए सबसे बढ़िया समय है। अगर आप कहीं घूमने का प्लान बना रहे हैं, तो असम की इन 5 शानदार जगहों पर जरुर घूमने जाएं। ट्रिप रहेगी बेहद मजेदार।

घुमक्कड़ लोग घूमने के काफी शौकीन होते हैं। हर जगह घूमने के लिए कहीं न कहीं तैयार रहते है। वैसे फरवरी-मार्च का महीना घूमने और फिरने के लिए सबसे बढ़िया क्योंकि इस दौरान न ज्यादा सर्दी होती है और न गर्मी। अगर आप भी कहीं घूमने का प्लान बना रहे हैं, तो आप असम की इन जगहों पर जरुर घूमने जाएं। भारत के उत्तरपूर्वी कोने में स्थित, असम अपने मनोरम अनुभवों से यात्रियों को आकर्षित करता है। खूबसूरत भारतीय राज्य प्राकृतिक दृश्य और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का सही मिश्रण पेश करता है। जिन लोगों को रोमांच पसंद हैं वे लोग प्राकृतिक सौंदर्य, जानवरों और कई वन्यजीव अभयारण्यों का दौरा कर सकते हैं। जो लोग शांति की तलाश में हैं, उनके लिए हरे-भरे चाय के बागान एक शांति प्रदान कर सकता है। आइए आज आपको इस आर्टिकल में असम के पांच सबसे लोकप्रिय स्थलों पर के बारे में बताते हैं।

हाफलोंग

हाफलोंग असम की सबसे खूबसूरत जगहों में से एक है जहां आप जा सकते हैं। यह राज्य का एकमात्र हिल स्टेशन है, जो समुद्र तल से 2300 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। हाफलोंग असम के दिमा हसाओ जिले में स्थित है। यह स्थान अपने खूबसूरत झरनों और जातीय आदिवासी गांवों के लिए जाना जाता है।

काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान

असम में सबसे लोकप्रिय स्थानों में से एक, काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान गुवाहाटी से लगभग 194 किमी और डिब्रूगढ़ से 252 किमी दूर स्थित है। यह स्थान उन व्यक्तियों के लिए सबसे उपयुक्त है जो शहरी जीवन की हलचल से मुक्ति चाहते हैं और प्रकृति से जुड़ना चाहते हैं। काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान एक शांत स्थान है, जो चाय के बागानों और जंगलों से घिरा हुआ है।

मानस राष्ट्रीय उद्यान

मानस राष्ट्रीय उद्यान असम में एक और लुभावनी जगह है, जो गुवाहाटी से 140 किमी दूर स्थित है। हालांकि यह काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान जितना लोकप्रिय नहीं है, फिर भी यह स्थान एक असाधारण अनुभव का वादा भी करता है। पर्यटक पार्क के अंदर एक जंगली रिसॉर्ट में रुक सकते हैं और रात में पास के जंगली जानवरों की आवाज़ सुन सकते हैं।

गुवाहाटी

असम की वाणिज्यिक राजधानी, गुवाहाटी एक नदी तटीय शहर है जो कई प्राचीन मंदिरों से भरा हुआ है। असम राज्य संग्रहालय देखने से लेकर कामाख्या मंदिर की आध्यात्मिक यात्रा शुरू करने तक, गुवाहाटी में पर्यटकों के लिए कई एक्टिविटी कर सकते हैं।

शिवसागर

शिवसागर असम का एक और अद्भुत शहर है जो डिब्रूगढ़ से लगभग 82 किमी दूर स्थित है। यह ऐतिहासिक शहर अहोम राजवंश की पूर्व राजधानी होने की कई कहानियां समेटे हुए है। यहां पर कई ऐतिहासिक महल, तालाब और मंदिर हैं जिन्हें पर्यटक देख सकते हैं। शिवसागर में कुछ उल्लेखनीय स्मारकों में रंग घर, करेंग घर और तलातल घर शामिल हैं।

भाजपा को लगता है कि उसकी सरकार से कोई गलती ही नहीं हुई है, ये लोग तो मरने के लिए ही पैदा हुए हैं, इसलिए वह कोई सुधार नहीं

सुषमा रानी

नई दिल्ली, आम आदमी पार्टी ने शनिवार रात नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर हुए दर्दनाक हादसे के लिए केंद्र की भाजपा सरकार की बदइंतजामी और निष्क्रियता को जिम्मेदार बताया है। ₹आप₹ के वरिष्ठ नेता और सांसद संजय सिंह ने कहा कि देश में बार-बार रेल घटनाएं हो रही हैं। आखिर और कितनी दुर्घटनाओं के बाद केंद्रीय रेल मंत्री और केंद्र सरकार की जवाबदेही तय होगी? रेलवे प्रशासन की बदइंतज़ामी के कारण हुए इस हादसे में महाकुंभ जा रहे लोग शिकार हुए, लेकिन मृतकों की सही संख्या नहीं बताई जा रही है। स्टेशन पर हजारों की भीड़ थी, लेकिन उसे संभालने के लिए कोई व्यवस्था नहीं थी। रेल मंत्री ने इस हादसे को मानने से ही इंकार कर दिया तो एलजी ने पहले लोगों की मौत की बात स्वीकारी और बाद में ट्वीट ही एडिट कर दिया। उन्होंने कहा कि हर हादसे को भाजपा सरकार दबाने की कोशिश करती है और जब लाशें सामने आ जाती हैं तो लीपापोती करने लगती है, लेकिन इससे सबक लेकर कोई सुधार नहीं करती है।

रविवार को पार्टी मुख्यालय पर प्रेस वार्ता कर संजय सिंह कहा कि रेलवे प्रशासन की बदइंतजामी और निष्क्रियता के चलते शनिवार को नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर एक बड़ा हादसा हुआ। इस हादसे में महाकुंभ स्नान करने जा रहे श्रद्धालुओं और लोग अपने अन्य कामों के लिए जा रहे थे। इस हादसे में मृतकों की सही संख्या अब तक सामने नहीं आई है, जहां कुछ लोग इसे 15 बता रहे हैं, वहीं कुछ 18 का आंकड़ा बता रहे हैं। प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि असल संख्या इससे कहीं अधिक हो सकती है। सरकार की निष्क्रियता और लापरवाही के चलते ऐसी घटनाएं बार-बार होती हैं, लेकिन सरकार सबसे पहले उन्हें दबाने का काम करती है। मृतकों और घायलों के प्रति कोई संवेदना नहीं दिखाई जाती, उल्टे रिपोर्टर्स के मोबाइल तोड़े जाते हैं ताकि वे घटना की सच्चाई को कैमरे में कैद न कर सकें।

संजय सिंह ने कहा कि सरकार पहले घटना को नकारती है कि ऐसा कुछ हुआ ही नहीं है, सब अफवाह और झूठ है। फिर जब मृतकों के शव सामने आ जाते हैं तो ये मना नहीं कर पाते और मजबूरी में उसे स्वीकारते हैं, फिर उस पर लीपापोती शुरू की जाती है। इस देश में यह सब कब तक चलेगा? और कितनी दुर्घटनाओं के बाद देश के रेल मंत्री और केंद्र सरकार की जवाबदेही तय होगी? पटरियों पर तीन-चार ट्रेनें आपस में टकरा जा रही हैं। सैकड़ों की संख्या में लोगों की मृत्यु हो गई। उस घटना को दबा दिया गया, भुला दिया गया। रोजाना ट्रेन दुर्घटनाएं हो रही हैं उन्हें भी दबा दिया गया।

संजय सिंह ने कहा कि शनिवार को नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से जो वीडियो आई वह

बहुत हैरान करने वाला है। रेलवे प्लेटफॉर्म पर हजारों की संख्या में लोग दिख रहे हैं। पूरा प्लेटफॉर्म भरा हुआ है लेकिन उस भीड़ को नियंत्रित करने के लिए कहीं भी रेलवे प्रशासन नहीं दिख रहा है। अचानक भगदड़ हो गई। लोगों की जान चली गई लेकिन रेल मंत्री पूरी घटना से इनकार कर रहे हैं कि कुछ नहीं हुआ। दिल्ली के एलजी ने ट्वीट किया और 29 मिनट बाद उसे एडिट कर दिया। क्या सरकार को यह सब करना चाहिए?

संजय सिंह ने आगे कहा कि एक ट्रेन 12 नंबर प्लेटफॉर्म पर आनी थी लेकिन अनाउंसमेंट हुई कि वह 16 नंबर प्लेटफॉर्म पर आएगी, लोग कह रहे हैं कि उसके कारण भी भगदड़ हुई। हालांकि जब और बातें सामने आएंगी तो इसकी असली वजह पता चलेगी। महाकुंभ के दौरान प्लेटफॉर्म नंबर अचानक बदलने की वजह से ऐसी ही एक घटना उत्तर प्रदेश के रेलवे स्टेशन पर हो चुकी है। तो क्या रेलवे प्रशासन को यह समझ नहीं थी कि इतनी संख्या में लोग इकट्ठा हैं और अगर ऐसे में वह ट्रेन का प्लेटफॉर्म बदलने की घोषणा करेंगे तो उससे भगदड़ की स्थिति पैदा होगी, जोकि हुआ भी। इतनी बड़ी घटना घटने के बाद अब सब उसे इनकार करने में लगे हुए हैं।

उन्होंने कहा कि कई बार ऐसा लगता है कि क्या मरना एक आम आदमी की नियति बन गई है? कभी नोटबंदी के बाद लाइनों में खड़े होकर मरना है, कभी कोरोना की महामारी में मरना है, कभी महाकुंभ में मरना है या कभी ट्रेन तो कभी सड़क दुर्घटना में मरना है। कभी रोजगार मांगने पर मरना है, कभी फसल का सही दाम मांगने पर मरना है, कभी फ्लाईओवर और पुल के टूटने पर मरना है। ऐसा लगता है जैसे मरना हमारी नियति बन गई है और सरकार को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। यह तो संवेदनहीनता की पराकाष्ठा है।

संजय सिंह ने कहा कि इतनी बड़ी-बड़ी घटनाओं पर ऐसे बयान दिए जाते हैं कि सुनकर शर्म आएगी। महाकुंभ में इतने लोग मर गए और ये कह रहे हैं कि उन्हें मोक्ष की प्राप्ति हो गई। मोक्ष की प्राप्ति तो उनको दी जानी चाहिए जो उस बदइंतजामी के लिए जिम्मेदार हैं। उनको भी मोक्ष प्राप्त करने के लिए कहा जाए। लोगों के घाव पर नमक छिड़कने की सरकार की यह प्रवृत्ति कब तक चलती रहेगी? यह बड़ी-बड़ी घटनाओं पर लीपापोती करके अपने गुनाहों को दबाने की कोशिश कब तक चलेगी? जहां शव रखे गए हैं वहां पुलिस के जवानों को लगाया गया। मरे हुए लोगों को सुरक्षा करके और उनकी संख्या को छिपाकर सरकार यह दिखाना चाहती है कि उसे अपनी गलती से सीखना नहीं है, बल्कि लोगों के घाव पर नमक छिड़कना है।

उन्होंने कहा कि जो लोग इस घटना में मारे गए हैं, मैं आम आदमी पार्टी की ओर से गहरी संवेदना व्यक्त करता हूं। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह उनके परिवारजनों को यह अपार कष्ट सहने की शक्ति दे। मृतकों की पुण्यात्मा को अपने चरणों में स्थान दे। और इस सरकार को सद्बुद्धि दे कि वह ऐसी घटनाओं पर संवेदनशीलता दिखाए। ऐसी घटनाओं को दबाने या उस पर लीपापोती की अपनी प्रवृत्ति को छोड़े। भाजपा की सरकार के खिलाफ कुछ भी बोलने वाले को धर्म विरोधी और देश विरोधी बताना, विपक्ष को गाली देने, सोशल मीडिया पर कैंपेन चलाने जैसी घटिया चीजें बंद करो। इससे कुछ फायदा नहीं होने वाला है। इसके बजाय भाजपा इन घटनाओं को रोकने का प्रयास करे। जो भी लोग इस घटना में मारे गए हैं, सरकार को उनके परिवारों को उचित मुआवजा देना चाहिए। देश के रेल मंत्री की जवाबदेही तय होनी चाहिए।

सनातन ही शाश्वत है और शाश्वत ही सत्य है - संत त्रिलोचन दास महाराज 45वें दास धर्म समागम में मनाया गया स्थापना दिवस

सुषमा रानी

नई दिल्ली, तीन दिवसीय 45वें दास धर्म समागम के अंतिम दिन स्थापना दिवस मनाया गया, इस अवसर पर सचखंड धाम के संरक्षक अध्यक्ष संत त्रिलोचन दास महाराज ने संगत को बताया भगवान को अपना मित्र बना लो, उन्होंने आगे बताया कि हम पूरे विश्व में इस तरह के सनातन समागम करेंगे जिसमे सबसे पहले ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड व कनाडा में करने की हमारी कोशिश है और उसमें हम विश्व के सभी सनातनी को जोड़ने की कोशिश कर रहे है। इस अवसर पर गाज़ियाबाद के सांसद अतुल गर्ग व अखिल भारतीय व्यापारी परिसंघ के उपाध्यक्ष सत्य भूषण जैन ने गुरु को शाल पहनाकर सम्मानित किया और कहा कि दास धर्म ने हमेशा ही समाज के गरीब तबके के लिए कार्य किया है और हम सभी का सहयोग महाराज के साथ है। त्रिलोचन दास ने आगे कहा कि सनातन ही शाश्वत है और शाश्वत ही सत्य है जिसका हम सबको अनुसरण करना चाहिए और मेरी पूरी विश्व से यही कामना है की सभी लोग सभी धर्मो का सम्मान करें और एकजुट होकर रहे। इस अवसर पर लंदन के रेडियो एंकर रवि शर्मा भी उपस्थित रहे। संस्था के संरक्षक दास हैरी व दास दीपक मारवाह ने बताया कि इस तीन दिवसीय समागम में लाखो लोगो ने निशुल्क मेडिकल कैम्प व नेत्र चिकित्सा शिविर में अपना इलाज कराया तथा गरीब विद्यार्थियों को पुस्तकें और विधवा महिलाओं को सिलाई मशीनें वितरित की गयी।

दिल्ली के मुख्यमंत्री का नाम कल होगा फाइनल, चुना जाएगा बीजेपी विधायक दल का नेता

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में सरकार गठन को लेकर बड़ा अपडेट सामने आया है। सूत्रों के मुताबिक दिल्ली भाजपा विधायक दल की बैठक कल यानी 17 फरवरी को होगी। न्यूज एजेंसी एएनआई ने सूत्रों के हवाले से बताया कि यह बैठक दिल्ली भाजपा प्रदेश कार्यालय में दोपहर तीन बजे होगी और इसमें विधायक दल का नेता चुना जाएगा। वहीं इसमें कई बड़े नेता भी शामिल होंगे और इसमें नए सीएम पर भी फैसला होगा।

खबर यह है कि नई सरकार का शपथ ग्रहण समारोह 19 या 20 फरवरी को होने की संभावना है। जल्द ही भाजपा विधायक दल की बैठक के लिए पर्यवेक्षकों की नियुक्ति की जाएगी।

20 फरवरी तक नई सरकार का गठन

सरकार गठन से पहले जल्द ही भाजपा विधायक दल की बैठक होगी। शपथ ग्रहण समारोह के बाद 20 फरवरी तक नई सरकार का गठन हो जाएगा। राजौरी गार्डन से जीते मनजिंदर सिंह सिरसा ने कहा कि जल्द ही दिल्ली के नए सीएम को लेकर फैसला लिया जाएगा।

CM पद के लिए इन नामों पर हो रही चर्चा

दिल्ली के सीएम पद के लिए प्रवेश वर्मा और विजेंद्र गुप्ता सबसे आगे चल रहे हैं। वहीं, इसके लिए दिल्ली से पहली बार चुनाव जीतनेवाले चेहरे पर भी नजर रखी जा रही है। इस तरह जिन नामों की चर्चा मुख्यमंत्री को लेकर हो रही है, उनमें शालीमार बाग से विधायक रेखा गुप्ता, ग्रेटर कैलाश से विधायक शिखा राय, मुस्तफाबाद से विधायक मोहन सिंह बिष्ट, मालवीय नगर से विधायक सतीश उपाध्याय, जनकपुरी से विधायक आशीष सूद और उत्तम नगर सीट से जीते पवन शर्मा शामिल हैं।

अंतरराष्ट्रीय बाल कैंसर दिवस (आईसीसीडी)

सुषमा रानी

गुरुग्राम: अंतरराष्ट्रीय बाल कैंसर दिवस (आईसीसीडी) के मौके पर, फोर्टिस मेमोरियल रिसर्च इंस्टीट्यूट, गुरुग्राम ने इंडियन एकेडमी ऑफ पिडियाट्रिक्स तथा इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (हरियाणा) के साथ मिलकर, पिडियाट्रिक कैंसर (बच्चों को प्रभावित करने वाले कैंसर) के शीघ्र निदान और समय पर उपचार के बारे में जागरूकता बढ़ाने के मकसद से आज यहां मीडिया ब्रीफिंग का आयोजन किया। इस दौरान, 'बाल कैंसर के 10 शुरुआती लक्षणों' के बारे में एक पोस्टर जारी किया गया जिसकी मदद से आरंभिक लक्षणों की पहचान करने और उपचार के परिणामों में सुधार संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। इस पोस्टर को डॉ विकास दुआ, प्रिंसीपल डायरेक्टर एवं हेड ऑफ पिडियाट्रिक्स हेमेटोलॉजी, हेमेटो ओंकोलॉजी एंड बोन मैरो ट्रांसप्लांट, फोर्टिस मेमोरियल रिसर्च इंस्टीट्यूट, गुरुग्राम, डॉ अजय अरोड़ा, प्रेसीडेंट, आईएमए, गुरुग्राम, डॉ महावीर जैन, प्रेसीडेंट, आईएमए, हरियाणा, डॉ राहुल भार्गव, प्रिंसीपल डायरेक्टर एंड चीफ, बीएमटी, फोर्टिस मेमोरियल रिसर्च इंस्टीट्यूट, गुरुग्राम, डॉ अरुण दनेवा, सीनियर कंसल्टेंट, पिडियाट्रिक हेमेटो-ओंकोलॉजी एंड बीएमटी, फोर्टिस मेमोरियल रिसर्च इंस्टीट्यूट, गुरुग्राम, डॉ सोहिनी चक्रबर्ती, सीनियर कंसल्टेंट, पिडियाट्रिक हेमेटो-ओंकोलॉजी एंड बीएमटी, फोर्टिस मेमोरियल रिसर्च इंस्टीट्यूट, गुरुग्राम, डॉ स्वाति भयाना, कंसल्टेंट, पिडियाट्रिक ओंकोलॉजी, फोर्टिस मेमोरियल रिसर्च इंस्टीट्यूट, गुरुग्राम, डॉ सुनीशा अरोड़ा, कंसल्टेंट, पिडियाट्रिक ओंकोलॉजी, फोर्टिस मेमोरियल रिसर्च इंस्टीट्यूट, गुरुग्राम, यश रावत, फेसिलिटी डायरेक्टर, फोर्टिस मेमोरियल रिसर्च इंस्टीट्यूट, गुरुग्राम, डॉ नीलम मोहन, नेशनल प्रेसीडेंट-इलेक्ट, आईएपी, डॉ राज मेहता, सचिव, आईएपी, हरियाणा, डॉ अनिल मलिक, प्रेसीडेंट, आईएपी, पलवल तथा डॉ सुमित, सचिव, आईएपी, गुरुग्राम की उपस्थिति में जारी किया गया।

डॉ विकास दुआ, प्रिंसीपल डायरेक्टर एवं हेड ऑफ पिडियाट्रिक्स हेमेटोलॉजी, हेमेटो ओंकोलॉजी एंड बोन मैरो ट्रांसप्लांट, फोर्टिस मेमोरियल रिसर्च इंस्टीट्यूट, गुरुग्राम, ने कहा, "पिडियाट्रिक कैंसर प्रमुख ग्लोबल हेल्थ चैलेंज बन चुका है, और भारत में ही हर साल करीब 50,000 बाल कैंसर के मामले सामने आते हैं। शुरुआती चरण में रोग का पता लगने, सही निदान होने और उपयुक्त उपचार से कैंसरग्रस्त बच्चों के जीवित रहने की संभावना को बेहतर बनाया जा सकता है। परिवार और प्राथमिक देखभाल करने वाले चिकित्सक ही शुरुआती स्तर पर रोग के लक्षणों पर नज़र रखने और रोग का पता लगाने में अहम्भूमिका निभा सकते हैं। यदि कोई बच्चा लंबे समय तक बुखार, त्वचा में पीलापन, आलस्य, अकारण रक्तस्राव (जैसे कि पेशाब में खून), आसानी से खरोंच आदि लगने, या छोटे आकार के लाल धब्बे अथवा रैश उभरने, जैसे लक्षणों के साथ दिखायी दे तो पेरेंट्स को बिना देरी किए मेडिकल जांच करवानी चाहिए। रोग के निदान में देरी से भारत में बच्चों के स्वास्थ्य को लेकर चुनौती बढ़ सकती है, क्योंकि कई ऐसे कैंसर रोगों की आरंभिक चरण में अनदेखी हो जाती है जिनका अन्यथा उपचार संभव होता है। इन प्राइमरी केयर फिज़िशियंस को भी बच्चों में कैंसर के लक्षणों के शुरुआती लक्षणों के बारे में जागरूक बनाना जरूरी है।"

डॉ नीलम मोहन, नेशनल प्रेसीडेंट-इलेक्ट, आईएपी, ने कहा, "कैंसर एक साल से अधिक उम्र के बच्चों की असमय मृत्यु का दूसरा प्रमुख कारण है। बच्चों में कैंसर के लक्षण कई बार अस्पष्ट होते हैं और अन्य कई बाल्यावस्था के रोगों से मेल खाते हैं। पिडियाट्रिक ओंकोलॉजी में प्रगति के बावजूद, कैंसर आज भी बच्चों की मृत्यु का प्रमुख कारण है। इसलिए जल्द से जल्द बाल कैंसर का पता लगाना महत्वपूर्ण होता है ताकि मृत्यु दर को कम रखा जा सके। इसीलिए, यह अभियान इलाज में देरी की वजह से बच्चों को तकलीफ से बचाने पर ज़ोर देता है। उल्लेखनीय है कि कैंसरग्रस्त बच्चों में 80% मामलों में उपचार संभव है।"

डॉ महावीर जैन, प्रेसीडेंट, आईएमए, हरियाणा तथा डॉ अजय अरोड़ा, प्रेसीडेंट, आईएमए, गुरुग्राम, डॉ महावीर जैन, प्रेसीडेंट, आईएमए, हरियाणा ने कहा, "बचपन ही वह दौर होता है जब बच्चे बिना किसी चिंता या परेशानी के जीवन का भरपूर आनंद ले सकते हैं, यह किसी चुनौती से जूझने का समय नहीं होता। हम जानकारी और मेडिकल प्रोफेशनल्स को ट्रेनिंग देकर, कैंसर से पीड़ित बच्चों को जिंदगी जीने का बेहतर मौका दिला सकते हैं। आइये हम हरियाणा समेत अन्य भागों में इस रोग के शीघ्र निदान को वास्तविकता बनाएं, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि डायग्नॉसिस में देरी की वजह से कोई बच्चा तकलीफ सहने को मजबूर न हो। बच्चों को प्रभावित करने वाले सबसे प्रमुख कैंसर में ल्यूकीमिया, ब्रेन ट्यूमर, लिंफोमास और ठोस ट्यूमर जैसे न्यूरोब्लास्टोमा तथा विल्म्स ट्यूमर प्रमुख हैं। बच्चों के कैंसर के रिस्क फैक्टर में प्रायः परिवार में पहले से कैंसर रोग होना, रेडिएशन एक्सपोज़र या कुछ खास तरह की जेनेटिक कंडीशंस प्रमुख हैं।"

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर महाकुंभ जा रहे श्रद्धालुओं की दर्दनाक मौत पर केजरीवाल ने जताया दुख, रात से ₹आप₹ विधायक मदद में जुटे

सुषमा रानी

नई दिल्ली, नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर महाकुंभ जा रहे श्रद्धालुओं की दर्दनाक मौत पर आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने दुख प्रकट किया। दिल्ली की कार्यवाहक मुख्यमंत्री आतिशी समेत आम आदमी पार्टी के विधायक शनिवार देर रात से पीड़ितों की मदद में जुटे रहें। कार्यवाहक मुख्यमंत्री आतिशी में शनिवार को देर रात नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर हुई भगदड़ के पीड़ितों से मुलाकात कर उनका हाल जाना। वह देर रात हादसे की सूचना मिलने के तत्काल बाद एलएनजेपी अस्पताल पहुंची थीं। उन्होंने हादसे में हुई लोगों की मौत को अत्यंत दुखद और हृदयविदारक बताते हुए पीड़ित परिजनों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त की और ईश्वर से सभी को यह दुख सहने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की। उधर, आम आदमी पार्टी के विधायक भी मौके पर पहुंचकर पीड़ित लोगों की हर संभव मदद कर रहे हैं। इस हादसे पर ₹आप₹ के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने दुख व्यक्त करते हुए एक्स पर कहा कि नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर हुए हादसे में महाकुंभ जा रहे श्रद्धालुओं की दर्दनाक मौत बेहद दुखद एवं पीड़ादायक है। ईश्वर उनकी आत्माओं को शांति प्रदान करें। हादसे में जिन परिवारों ने अपनों को खोया उन सभी के प्रति मेरी संवेदनाएँ हैं।

आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं दिल्ली की कार्यवाहक मुख्यमंत्री आतिशी ने कहा कि आधिकारिक तौर पर 15 लोग मृत पाए गए हैं, जिन्हें मृत अवस्था में ही अस्पताल लाया गया। सभी के परिवारों को सूचना दे दी गई है। लगभग उतनी ही संख्या में घायल लोग भी यहां मौजूद हैं। यह बहुत ही दुखद घटना है। जिन लोगों की मृत्यु हुई है, उनकी कोई भरपाई नहीं हो सकती है। लेकिन जो भी मदद संभव हो सकती है, हम जरूर करेंगे। इस इलाके के हमारे दो विधायक पुनरदीप साहनी और आले इकबाल पीड़ितों की मदद के लिए यहां मौजूद हैं।

कार्यवाहक सीएम आतिशी ने बताया कि मैंने अस्पताल प्रबंधन से कहा है कि यदि किसी पीड़ित परिवार को किसी भी तरह की मदद की आवश्यकता हो, तो वे हमारे विधायकों को बताएं। यदि किसी परिवार को अंतिम संस्कार में सहायता चाहिए, किसी से संपर्क करना हो, उन्हें लाना-ले जाना हो, या खाने-पीने की व्यवस्था करनी हो, सब कुछ सुनिश्चित किया जाएगा। इनमें से दो लोगों को छोड़कर बाकी सभी मृतकों की पहचान हो चुकी है। मैंने सभी घायलों से मुलाकात की है और उनका अच्छे से इलाज चल रहा है। 4-5 मरीज़ों को जल्द ही छुट्टी दे दी जाएगी। जिन लोगों का निधन हो गया है, हम उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करते हैं।

उन्होंने कहा कि 15 लोगों को एलएनजेपी अस्पताल में मृत अवस्था में लाया गया था, और लगभग इतनी ही संख्या में घायल भी यहां भर्ती हैं। यह राजनीति करने का समय नहीं है। अभी हमारी जिम्मेदारी बनती है कि चाहे वह दिल्ली सरकार हो, केंद्र सरकार हो, पुलिस हो, एलजी साहब हों या हमारे पार्टी के विधायक हों, लोगों को ज्यादा से ज्यादा मदद पहुंचाए। हम इस मुद्दे पर कोई राजनीति नहीं करना चाहते। जिन लोगों ने अपने परिवार के सदस्यों को खोया है या घायल हैं, हम उनकी मदद के लिए यहां मौजूद हैं।

सीएम आतिशी ने एक्स पर कहा कि महाकुंभ के लिए जा रहे श्रद्धालुओं के साथ इस तरह की घटना बेहद दुखद है। लोगों की सुरक्षा की ना केंद्र सरकार को कोई फ़िक्र है और ना ही आगे यूपी सरकार को। ना प्रयागराज में कोई व्यवस्थाएं हैं और ना ही देश के अलग-अलग राज्यों से आने वाले श्रद्धालुओं के लिए यातायात के कोई ठोस इंतज़ाम हैं। रेलवे विभाग से मेरी विनती है कि लोगों को जल्द से जल्द मदद पहुंचाए। इस हादसे में जिन परिवारों ने अपनों को खोया, उनके प्रति मेरी संवेदनाएँ हैं। ईश्वर सभी को यह दुःख सहने की शक्ति दें।

जामा मस्जिद पुलिस स्टेशन के एसएचओ आदर्श प्रकाश को सर्वश्रेष्ठ रनर-अप पुलिस स्टेशन का पुरस्कार मिलने पर बधाई

सुषमा रानी, नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस के 78वें स्थापना दिवस के अवसर पर राजधानी में आयोजित सम्मान समारोह में दक्षिण जिले के अंबेडकर नगर थाने को राजधानी के 225 थानों में से एक बार फिर सर्वश्रेष्ठ थाने का पुरस्कार दिया गया है, जबकि जामा मस्जिद थाने और कीर्ति नगर थाने को विशेष रूप से प्रथम रनर-अप चुना गया, जबकि शाहिदा जिले के आनंद विहार थाने को द्वितीय रनर-अप चुना गया है। दरअसल अंबेडकर थाने को प्रथम थाने का दर्जा दिया गया, जबकि जामिया मस्जिद थाने के एसएचओ आदर्श प्रकाश को सर्वश्रेष्ठ रनर-अप थाने का पुरस्कार दिया गया। वर्तमान में थाने में एसएचओ आदर्श प्रकाश सहित 90 पुलिस कर्मियों का स्टाफ है। आपको बता दें कि जामा मस्जिद थाने को यह पुरस्कार दूसरी बार मिला है, इससे पहले 2009 में यह पुरस्कार मिला था। गौरतलब है कि थाने की सबसे अच्छी साफ-सफाई, पुलिसकर्मियों का बेहतरीन रवैया, थाने में आने वाले लोगों के लिए बेहतरीन सुविधाएं, बेहतर स्टाफ वेलफेयर, क्राइम ग्राफ में बढ़ोतरी और घरेलू हिंसा के विभिन्न मामलों को सुलझाने में आगे रहने के साथ-साथ थाने में आने वाले लोगों से अच्छा तालमेल बनाए रखने और उनकी समस्याओं को दूर करने के कारण थाने का चयन दिल्ली में किया जाता है। थाने का चयन करने के लिए एक स्पेशल सीपी और 2 ज्वाइंट सीपी की देखरेख में एक चयन समिति का गठन किया जाता है। इस संबंध में जामा मस्जिद थाने को सर्वश्रेष्ठ रनर-अप थाने का पुरस्कार मिलने पर रहमतुल्लाह ग्रुप (जामी मस्जिद, दिल्ली-6) के चेयरमैन हाजी मुहम्मद आदम रहमान कुरैशी ने एसएचओ जामिया मस्जिद आदर्श प्रकाश को बधाई दी और शुभकामनाएं दीं और उम्मीद जताई कि अगली बार जामिया मस्जिद थाना सर्वश्रेष्ठ पहला स्थान प्राप्त होगा। हाजी आदम ने भी अपनी शुभकामनाएं व्यक्त की और घोषणा की कि जल्द ही पुरानी दिल्ली के जामा मस्जिद क्षेत्र में एक बड़ा कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के लोग SHO आदर्श जी का भव्य स्वागत होगा।

गाजियाबाद रेलवे स्टेशन पर भी भारी भीड़, ऐसा है प्लेटफॉर्म नंबर-2 का हाल

परिवहन विशेष न्यूज

प्रयागराज में महाकुंभ मेले को लेकर ट्रेनों में श्रद्धालुओं की भीड़ बढ़ गई है। ट्रेनों में यात्रियों को सीट नहीं मिल रही है। नई दिल्ली हादसे के बाद गाजियाबाद के रेलवे स्टेशन पर भी लोगों की भारी भीड़ है।

गाजियाबाद। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में महाकुंभ मेला चल रहा है। जहां अलग-अलग राज्यों से श्रद्धालु बस, ट्रेनों के जरिए पहुंच रहे हैं। स्नान के लिए लोगों की भीड़ कम होने का नाम नहीं ले रही है। रविवार सुबह गाजियाबाद के रेलवे स्टेशन पर भी लोगों की भारी भीड़ नजर आई। गाजियाबाद रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर दो पर यात्री रेल का इंतजार करते देखें। वहीं जब ट्रेन स्टेशन पर पहुंची तो ट्रेन के अंदर घुसने के लिए यात्रियों में होड़ लग गई।

स्टेशन पर ट्रेन पहुंचते ही खिड़कियों और गेट से घुसते यात्री

दिल्ली से अलीगढ़ होते हुए कानपुर जाने वाली गोमती एक्सप्रेस वे में सवार होने के लिए यात्री खिड़कियों से अंदर जाते हुए देखे। बीती रात को नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर भी भारी भीड़ की वजह से भगदड़ मच गई। इस हादसे में 18 लोगों की मौत हो गई तो वहीं 20 लोग घायल हो गए। वीकेंड पर महाकुंभ में स्नान के लिए जाने वाले श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ रही है। राजधानी दिल्ली से लेकर उत्तर प्रदेश के कई जिलों में रेलवे स्टेशनों पर भारी भीड़ देखी जा रही है।

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर भारी भीड़ के चलते 18 की मौत

प्रयागराज की ट्रेन पकड़ने के लिए नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर यात्रियों की उमड़ी भारी भीड़ के चलते भगदड़ में 18 लोगों की मौत हो गई। रेलवे ने इस घटना के उच्चस्तरीय जांच के आदेश दिए। रेलवे और दिल्ली पुलिस ने अपनी जांच शुरू कर दी है। प्रत्यक्षदर्शियों से पूछताछ, सीसीटीवी फुटेज खंगाले जा रहे हैं।

दिल्ली पुलिस जांच में जुटी

दिल्ली पुलिस ने नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर मची भगदड़ की घटना की जांच शुरू कर दी है। जांच का नेतृत्व डीसीपी रैंक के अधिकारी कर रहे हैं। मानक संचालन प्रक्रिया के अनुसार, भगदड़ जैसी स्थिति को नियंत्रित करने के लिए पुलिस मुख्यालय द्वारा छह अतिरिक्त कंपनियों की आपूर्ति की गई। इसकी जानकारी दिल्ली पुलिस ने दी है।

घायलों का इलाज कर रही 15 डॉक्टरों की एक टीम

एलएनजेपी अस्पताल के सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक, ज्यादातर मरीजों के निचले अंगों में चोट है और कुछ को हड्डियों में चोट है। चार लोगों को निगरानी में रखा गया है और बाकी को प्राथमिक उपचार के बाद छुट्टी दे दी गई है। ज्यादातर मरीजों की हालत स्थिर है। 15 डॉक्टरों की एक टीम घायल मरीजों की देखभाल कर रही है।

प्रत्यक्षदर्शी कुली ने बताई हादसे की कहानी

रेलवे स्टेशन पर कुली का काम करने वाले एक व्यक्ति ने बताया कि मैं 1981 से कुली का काम कर रहा हूं। लेकिन पहले कभी ऐसी भीड़ नहीं देखी थी। प्रयागराज स्पेशल को प्लेटफॉर्म नंबर 12 से रवाना होना था, लेकिन इसे प्लेटफॉर्म नंबर 16 पर शिफ्ट कर दिया गया। जब प्लेटफॉर्म 12 पर इंतज़ार कर रही भीड़ और बाहर से इंतजार कर रही भीड़ प्लेटफॉर्म 16 पर पहुंचने की कोशिश कर रही थी, तो लोग आपस में टकराने लगे और एस्केलेटर और सीढ़ियों पर गिरने लगे।

बिल्डर प्रोजेक्ट को नहीं बेच सकेंगे, 2707 एजेंटों पर कार्रवाई; एनसीआर के 1867 सूची से बाहर

परिवहन विशेष न्यूज

यूपी रेरा के अफसरों ने बताया कि प्रोजेक्टों के एजेंट पेज से भी इनका नाम हटा दिया गया है। प्रदेश का कोई भी बिल्डर इन एजेंट के माध्यम से अपने प्रोजेक्ट को बिकवा नहीं सकता है। साथ ही एजेंट भी काम नहीं कर सकते है। अगर कहीं पर ऐसा मामला मिला तो संबंधित के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

नोएडा। उत्तर प्रदेश भूसंपदा विनियामक प्राधिकरण (यूपी रेरा) ने 2707 एजेंटों को अपनी पंजीकृत सूची से बाहर कर दिया है। इन एजेंटों के बिल्डर प्रोजेक्टों को बेचने पर भी रोक लगा दी है। इनमें एनसीआर के 1867 और नॉन एनसीआर के 840 एजेंट शामिल है। यूपी रेरा ने चेतावनी दी है कि अगर किसी ने बिल्डर प्रोजेक्ट को बेचा तो उन पर कार्रवाई की जाएगी। साथ ही इस संबंध में बिल्डरों को भी चेतावनी जारी की है।

यूपी रेरा में इस समय 6715 एजेंट पंजीकृत थे। इनमें एनसीआर के 4448 और नॉन एनसीआर के 2267 एजेंट शामिल है। यूपी रेरा ने पिछले वर्ष सभी एजेंट के लिए प्रशिक्षण लेना जरुरी कर दिया था। प्रशिक्षण के बाद सभी को यूपी रेरा का प्रमाण पत्र हासिल करना था। उसके आधार पर ही यूपी रेरा में उनका पंजीकरण होगा। साथ ही बिना प्रमाण पत्र के नवीनीकरण पर भी रोक लगा दी थी।

अब प्रदेश के 2707 एजेंटों का पंजीकरण समाप्त हो गया है। वो नवीनीकरण भी नहीं करा सकते है। जिस पर यूपी रेरा ने शनिवार को इन 2707 एजेंटों को अपनी पंजीकृत सूची से बाहर कर दिया है। साथ ही किसी भी बिल्डर प्रोजेक्टों को बेचने पर रोक लगा दी है।

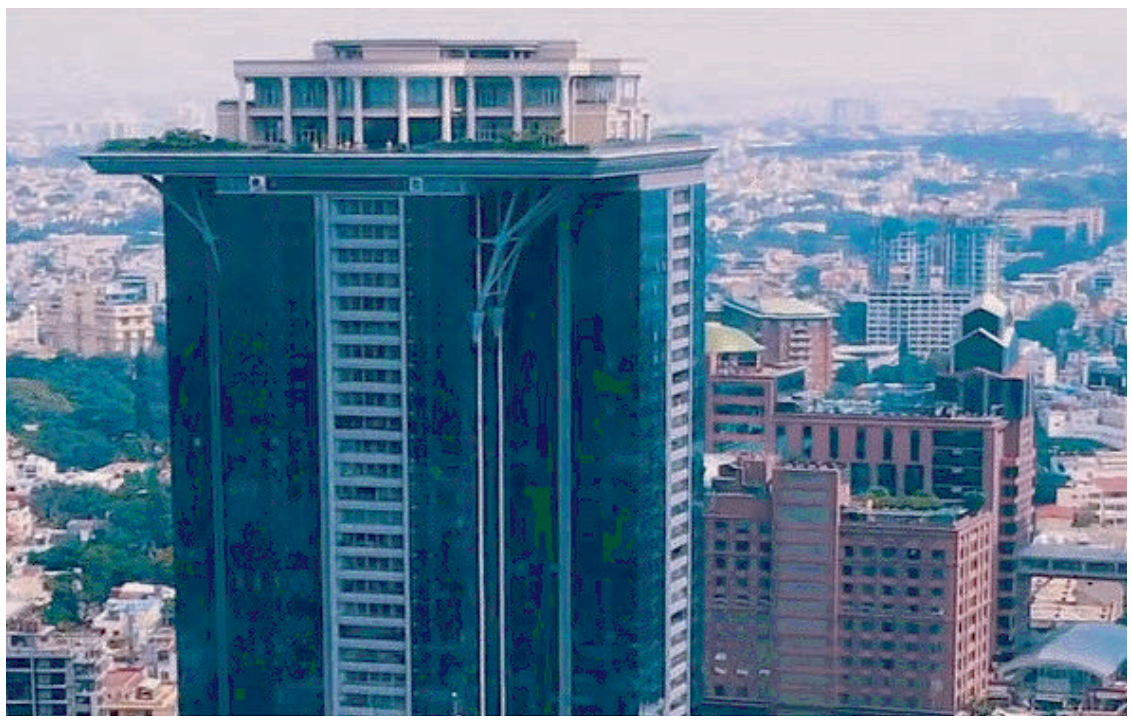

अब तक 416 ने लिया प्रशिक्षण, 240 पुराने

यूपी रेरा ने दिसंबर माह से एजेंटों का प्रशिक्षण शुरू किया है। लखनऊ में 5 और गौतमबुद्ध नगर में एक बैच पूरा हो चुका है। वहीं कानपुर में भी प्रशिक्षण शुरू होगा। अफसरों ने बताया कि अब तक 416 एजेंटों को प्रशिक्षण दिया जा चुका है। इनमें एनसीआर के 179 और नॉन एनसीआर के 237 एजेंट शामिल है। जबकि इन 416 में से 240 एजेंट पुराने है।

नियमों की अनदेखी कर रहे है एजेंट

यूपी रेरा ने प्रचार प्रसार के लिए नियम निर्धारित किए हुए है, लेकिन ज्यादातर एजेंट उनका उल्लंघन कर रहे है। प्रचार प्रसार में यूपी रेरा का पंजीकरण और अन्य जानकारी नहीं दे रहे है। साथ ही पंजीकरण से पूर्व ही प्रोजेक्ट को बेच रहे है। काफी जगह खरीदारों के साथ व्यवहार भी गलत मिला है। इस मनमानी को रोकने के लिए यूपी रेरा ने प्रशिक्षण देने का फैसला लिया। जहां एजेंटों को नियमों का पाठ पढ़ाया जा रहा है। पढ़ने के बाद उनको परीक्षा पास करनी जरुरी है। परीक्षा पास करने पर ही प्रमाण पत्र जारी किया जा रहा है।

प्रदेश के 2707 एजेंटों का पंजीकरण समाप्त हो चुका है। वो अब किसी प्रोजेक्टों को नहीं बेच सकते है। उनको प्रशिक्षण लेकर अपना पंजीकरण कराना होगा। प्रशिक्षण में एजेंटों को काम करने का तरीका सिखाया जा रहा है। प्रशिक्षण के प्रमाण पत्र से ही एजेंटों का यूपी रेरा में पंजीकरण होगा। बिना प्रमाण पत्र के नवीनीकरण भी नहीं होगा।

ऐसी अदालत जहां बिना वकील और कोर्ट फीस के मिलता है न्याय, देनी होगी बस सादे कागज पर अर्जी

परिवहन विशेष न्यूज

अगर आप बीमा कंपनियों, अस्पतालों, स्कूलों की मनमानी से परेशान हैं और सस्ता सुगम हल चाहते हैं, तो स्थायी लोक अदालत आपके लिए बेहतर जगह है। जहां न तो वाद दायर करने के लिए वकील की जरूरत और न कोर्ट की फीस की। सिर्फ प्रार्थना पत्र के माध्यम से अदालत वाद का निस्तारण करती है।

ग्रेटर नोएडा स्थित सूरजपुर की जिला कोर्ट में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की बिल्डिंग में स्थायी लोक अदालत स्थापित है। पूर्व जिला जज प्रमोद कुमार शर्मा स्थायी लोक अदालत के चेयरमैन हैं। कुमकुम नागर व बिब्बन शर्मा सदस्य हैं। स्थायी लोक अदालत में 50 से अधिक मुकदमे के निस्तारण पर काम चल रहा है।

चेयरमैन प्रमोद कुमार शर्मा ने बताया कि अदालतों को लेकर लोगों में भ्रांति है कि कानूनी पचड़े में पड़ने पर कई साल बर्बाद हो जाएंगे। समय पर राहत मिलनी नहीं है। इस कारण लोग अधिकारों पर चोट होने के बावजूद सब कुछ सहते हुए अदालत का रुख नहीं करते हैं। जबकि विधिक सेवा प्राधिकरण अधिनियम की धारा-22 के तहत स्थायी लोक अदालतों की स्थापना और उनके समक्ष प्रकरण दायर करने का प्रावधान है। इसमें जनोपयोगी सेवाओं से जुड़े मामले पेश किए जा सकते हैं। कोई व्यक्ति जन उपयोगी सेवाओं को लेकर हुए विवाद के निपटारे के लिए व्यक्तिगत रूप से स्थायी लोक अदालत के समक्ष सादा कागज पर प्रार्थना पत्र दे सकता है।

इसमें विवाद के संबंध में आवश्यक विवरण सहित प्रार्थी पक्ष का संपूर्ण विवरण देना होगा। इसके बाद अदालत के अध्यक्ष व सदस्य इस पर सुनवाई करते हैं। इसके तहत परिवहन सेवा जिसमें वायु, सड़क और जल मार्ग से यात्रियों एवं माल ले जाने की सेवा, डाक और दूरभाष सेवा, बिजली और जलापूर्ति सेवा, सार्वजनिक स्वच्छता संबंधी सेवा, अस्पताल या औषधालय की सेवा, शैक्षणिक सेवा संस्थान, बीमा सेवा, जीवन बीमा और सामान्य बीमा, रियल एस्टेट से संबंधित मामले के निस्तारण के लिए वाद दाखिल किया जा सकता शामिल है। हालांकि न्यायालयों में पहले से चल रहे व विचाराधीन प्रकरणों में, किसी भी कानून व विधि के तहत ऐसे अपराध, जिनमें राजीनामा नहीं हो सकता है। जहां विवाद में संपत्ति का मूल्य एक करोड़ रुपये से अधिक हो ऐसे मामलों में प्रार्थना पत्र नहीं दिया जा सकता है। अदालत के पास विकल्प होता कि पक्षकारों में सुलह व बातचीत के जरिए विवाद का सौहार्द्रपूर्ण तरीके से निपटारा किया जाए। सुलह से निपटारा नहीं होने पर विवाद का गुणावगुण दोनों पक्षकारों के जवाब और दस्तावेजों सहित अन्य उपलब्ध सामग्री के आधार पर फैसला पारित करना होता है। अदालत सिविल प्रक्रिया संहिता व भारतीय साक्ष्य अधिनियम के प्रति बाध्य नहीं है।

स्थायी लोक अदालत से विवाद निपटाने के फायदे

-अदालत द्वारा गुणावगुण या दोनों पक्षों की सहमति से किया गया प्रत्येक निर्णय अंतिम होगा और इसके सभी पक्षकारों पर बाध्य होगा। फैसले के खिलाफ सिर्फ हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में अपील की जा सकती है।

-अदालत द्वारा किया गया प्रत्येक निर्णय सिविल न्यायालय की डिक्री समझा जाएगा और इसे किसी भी मूल वाद, आवेदन और निष्पादन कार्रवाइयों में प्रश्नगत नहीं किया जा सकता है।

-अदालत अपने द्वारा किए गए निर्णय की पालना व निष्पादन के लिए क्षेत्रीय अधिकारिता रखने वाले न्यायालय को भिजवा सकती है और जिस न्यायालय को भिजवाया जाएगा, वह उस निर्णय या आदेश की पालना उसी तरह करेगा जैसे स्वयं द्वारा पारित निर्णय एवं डिक्री की करवाता है।

-अदालत में दायर की जाने वाली अर्जी पर कोई शुल्क व कोर्ट फीस नहीं लगती है।

-अदालत में किसी विवाद के संबंध में अर्जी पेश किए जाने के बाद उसी विवाद को लेकर नियमित न्यायालय में कार्रवाई नहीं की जा सकती है।

61वाँ म्युनिख (जर्मनी) सुरक्षा सम्मेलन 14-16 फ़रवरी 2025 का आगाज़

भारत एक सफ़ल
लोकतांत्रिक देश जो लोगों के जीवन को बेहतर बना रहा है
आज़ादी के बाद भारत ने लोकतंत्र को अपनाया क्योंकि हमारी संस्कृति शुरू से ही परामर्श और बहुलतावाद पर आधारित रही है, सराहनीय विचार

– एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं
गोंदिया महाराष्ट्र

गोंदिया- वैश्विक स्तरपर दुनियाँ का करीब करीब हर देश किसी न किसी वैश्विक मंच में हितधारक होने के नाते से जुड़ा है, जिससे उनके हितों को बल मिलता है व उनके देश के बारे में दुनियाँ को गहराई से जानने में अनेक देश उत्सुक होते हैं, जिससे उन्हें वैश्विक पहचान मिलती है, उनकी खूबियाँ वैश्विक पटल पर आती है। अनेक अंतरराष्ट्रीय मंच अधिकृत हैं जिनमें पारित प्रस्ताव को सभी सदस्य देशों को मानना पड़ता है, तो कई निजी मंच भी होते हैं जिनमें से एक है, म्युनिख (जर्मनी) सुरक्षा सम्मेलन जो अभी जर्मनी के म्यूनिख में 61 वाँ सम्मेलन 16 फरवरी 2025 को समाप्त हुआ, जिसमें तीनों दिन तक अमेरिकी उपराष्ट्रपति, भारतीय विदेश मंत्री और गृहमंत्री यूक्रेन के राष्ट्रपति सहित 60 से अधिक नेता क्रमवार शामिल हुए। तीन दिनों तक अनेक विषयों पर चर्चा की गई जिसमें यूक्रेन-रूस युद्ध समस्या सुलझाना, लोकतंत्र को मजबूत करना सहित तीनों दिन अनेक विषयों पर क्रमवार चर्चा की गई। इस सम्मेलन में, संवाद के माध्यम से शांति विषय के अंतर्गत, नाटो और यूरोपीय संघ के सदस्य देशों के वरिष्ठ राजनेताओं, राजनयिकों, सैन्य और सुरक्षा विशेषज्ञोंके साथ- साथ चीन, भारत ईरान जापान दक्षिण कोरिया और रूस जैसे अन्य देशों के वरिष्ठ राजनेताओं, राजनयिकों, सैन्य और सुरक्षा विशेषज्ञों को सुरक्षा और रक्षा नीतियों में वर्तमान मुद्दों पर चर्चा करने के लिए आमंत्रित किया गया है।सम्मेलन का उद्देश्य सामयिक मुख्य सुरक्षा मुद्दों पर चर्चा करना तथा नेटवर्क सुरक्षा की अवधारणा के अनुरूप वर्तमान और भविष्य में मुख्य सुरक्षा चुनौतियों पर बहस और विश्लेषण करना है। सम्मेलन का मुख्य बिंदु 21वीं सदी में ट्रान्साटलांटिक संबंधों के विकास के साथ-साथ यूरोपीय और वैश्विक सुरक्षा पर चर्चा और विचारोंका आदान-प्रदान है।सम्मेलन निजी तौर पर आयोजित किया जाता है और इसलिए यह कोई आधिकारिक सरकारी कार्यक्रम नहीं है। इसका उपयोग केवल चर्चा के लिए किया जाता है।चूँकि भारत ने म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन में सहभागी होकर अपने विचार रखे इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे 6वें म्युनिख (जर्मनी) सुरक्षा सम्मेलन 14 से 16 फरवरी 2025 का आगाज़।

साथियों बात अगर हम म्युनिख सुरक्षा सम्मेलन को समझने की करें तो, पिछले चार दशकों में म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा नीति निर्णयकर्ताओं द्वारा विचारों के आदान-प्रदान के लिए सबसे महत्वपूर्ण स्वतंत्र मंच बन गया है। हर साल यह दुनियाँ भर के 70 से अधिक देशों के लगभग 350 वरिष्ठ लोगों को वर्तमान और भविष्य की सुरक्षा चुनौतियों पर गहन बहस में शामिल होने के लिए एक साथ लाता है। उपस्थित लोगों की सूची में राष्ट्राध्यक्ष,सरकार और अंतरराष्ट्रीय संगठनों के प्रमुख, मंत्री,संसद के सदस्य,सशस्त्र बलों,विज्ञान,नागरिक समाज के उच्च पदस्थ प्रतिनिधि,साथ ही व्यापार और मीडिया शामिल हैं।यह सम्मेलन हर साल फरवरी में आयोजित किया जाता है।इसका आयोजन स्थल म्यूनिख, बवेरिया जर्मनी में होता है। इस सम्मेलन में, संवाद के माध्यम से शांति विषय के अंतर्गत, नाटो और यूरोपीय संघ के सदस्य देशों के वरिष्ठ राजनेताओं, राजनयिकों, सैन्य और सुरक्षा विशेषज्ञों के साथ-साथ चीन, भारत, ईरान, जापान, दक्षिण कोरिया और रूस जैसे अन्य देशों के वरिष्ठ राजनेताओं, राजनयिकों, सैन्य और सुरक्षा विशेषज्ञों को सुरक्षा और रक्षा नीतियों में वर्तमान मुद्दों पर चर्चा करने के लिए आमंत्रित किया गया था। सम्मेलन का उद्देश्य सामयिक मुख्य सुरक्षा मुद्दों पर चर्चा करना तथा नेटवर्क सुरक्षा की अवधारणा के अनुरूप वर्तमान और भविष्य में मुख्य सुरक्षा चुनौतियों पर बहस और विश्लेषण करना है। सम्मेलन का मुख्य बिंदु 21वीं सदी में ट्रान्साट लांटिक संबंधों के विकास के साथ-साथ यूरोपीय और वैश्विक सुरक्षा पर चर्चा और विचारों का आदान-प्रदान हैसम्मेलन निजी तौर पर आयोजित किया जाता है और इसलिए यह कोई आधिकारिक सरकारी कार्यक्रम नहीं है।बाध्यकारी अंतर-सरकारी निर्णयों के लिए प्राधिकरण मौजूद नहीं है। इसके अलावा, सामान्य परंपराओं के विपरीत - कोई आम अंतिम विज्ञप्ति नहीं है। उच्च स्तरीय बैठक का उपयोग प्रतिभागियों के बीच अलग-अलग पृष्ठभूमि चर्चाओं के लिए भी किया जाता है। अपवाद वैश्विक राजनीतिक निर्णयों की प्रस्तुति है, जैसे कि संयुक्त राज्य अमेरिका और रूस के बीच न्यू स्टार्ट निरस्त्रीकरण समझौते के लिए अनुसमर्थन के साधनों काआदान-प्रदान जो 2011 में सुरक्षा सम्मेलन के समापन पर आयोजित किया गया था।

साथियों बात अगर हम म्युनिख सुरक्षा सम्मेलन में केंद्रीय गृहमंत्री भारत द्वारा प्रतिनिधित्व कर अपने विचार प्रकट करने की करें तो, उन्होंने आतंकवाद के खिलाफ मुद्दे पर अपने विचार रखे।उन्होंने कहा कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में देशों के बीच एकता जरूरी है।पीएम के नेतृत्व में भारत आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में वैश्विक समुदाय के साथ मजबूती से खड़ा है। आतंकवाद की फंडिंग के लिए सीमा पार संबंध तेजी से बढ़ रहे हैं। साथ ही नई तकनीक के विकास के कारण आतंकवादियों के लिए धन के प्रवाह के लिए उपयोग किए जाने वाले स्रोत, तरीके और चैनल तेजी से पेचीदा होते जा रहे हैं। यह वैश्विक सुरक्षा के लिए बड़ी चुनौती बन रहे हैं।उन्होंने आतंकी फंडिंग का मुकाबला करने, जोखिमों को लेकर सतर्क होने और नई दिल्ली में आयोजित एनएमएफटी सम्मेलन 2022 की चर्चा को आगे बढ़ाने के लिए बहुपक्षीय सहयोग के मुद्दे पर सम्मेलन की मेजबानी करने के लिए जर्मन सरकार का आभार जताया।

साथियों बात अगर हम भारतीय विदेश मंत्री द्वारा रखें अपने विचारों की करें तो, भारत चुनौतियों के बावजूद लोकतंत्र के प्रति वफादार है। भारत हमारे सामने आने वाली सभी चुनौतियों के बावजूद, यहां तक कि कम आय के बावजूद, लोकतांत्रिक मॉडल के प्रति वफादार रहा है, जो कि दुनियाँ के हमारे हिस्से में भी देखने को मिलता है। हम लगभग एकमात्र देश हैं जिसने ऐसा किया है। उन्होंने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, भारत को एक ऐसे लोकतंत्र के रूप में रेखांकित किया जो परिणाम देता है। प्रचलित राजनीतिक निराशावाद से असहमत। विदेशी हस्तक्षेप पर अपने विचार व्यक्त किए। जयशंकर के अलावा, पैनल में नॉर्वे के प्रधानमंत्री जोनास गहर स्टोर, अमेरिकी सीनेटर एलिसा स्लोटकिन और वारसॉ के मेयर रफाल ट्रजास्कोवस्क शामिल थे। उन्होंने यह भी कहा कि भारत 80 करोड़ लोगों को पोषण सहायता देता है। इस प्रकार उन्होंने अमेरिकी सीनेटर एलिसा स्लोटकिन की इस टिप्पणी का खंडन किया कि लोकतंत्र खाने की व्यवस्था नहीं करता।

साथियों बात अगर हम अंतिम सत्र भूमि बहाली और सुरक्षा पर बातचीत की करें तो, जब भूमि संघर्ष का स्रोत बन जाती है? तीन अरब लोगों के लिए, भूमि उनके अस्तित्व और विकास के लिए महत्वपूर्ण है, लेकिन वैश्विक भूमि का 20 से 40 प्रतिशत हिस्सा पहले से ही क्षरित या क्षरित हो रहा है, कई समुदाय इस महत्वपूर्ण संसाधन को अपनी आँखों के सामने गायब होते हुए देखते हैं। जैसे-जैसे स्वस्थ भूमि दुर्लभ होती जाती है, उत्पादक भूमि पर प्रतिस्पर्धा और विवाद अधिक होते जाते हैं। पिछले 60 वर्षों में, 40 प्रतिशत अंतरराज्यीय संघर्ष प्राकृतिक संसाधनों से जुड़े रहे हैं। हालाँकि, भूमि बहाली की सहयोग, लचीलापन-निर्माण और शांति-प्रेरक क्षमता का अभी भी पूरी तरह से लाभ नहीं उठाया गया है। इस अंतर को पाटने के लिए, मरुस्थलीकरण से निपटने के लिए संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (यूएनसीसीडी) ने भूमि, शांति और सुरक्षा के बीच संबंधों पर ग्राउंड फॉर पीस रिपोर्ट तैयार की, जिसे थिंक टैंक एडेल्फी रिसर्च ने साकार किया और 2024 में यूएनसीसीडी के 16वें सम्मेलन में प्रस्तुत किया। रिपोर्ट के निष्कर्षों के आधार पर, यूएनसीसीडी और एडेल्फी रिसर्च द्वारा आयोजित यह वार्तालाप इस बात की पड़ताल करता है कि सुरक्षा समुदाय के लिए भूमि क्यों मायने रखती है। यह भूमि क्षरण, संघर्ष और मानव सुरक्षा के बीच संबंधों और संघर्ष को रोकने, सहयोग को बढ़ावा देने और लचीलेपन को मजबूत करने में भूमि बहाली की भूमिका पर प्रकाश डालता है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि 61वाँ म्युनिख (जर्मनी) सुरक्षा सम्मेलन 14-16 फ़रवरी 2025 का आगाज़।भारत एक सफ़ल लोकतांत्रिक देश जो लोगों के जीवन को बेहतर बना रहा है।आज़ादी के बाद भारत ने लोकतंत्र को अपनाया क्योंकि हमारी संस्कृति शुरू से ही परामर्श और बहुलतावाद पर आधारित रही है, सराहनीय विचार है।

हिल होल्ड, ईएसपी जैसे संरक्षा विशेषताएं के साथ मारुति ने इस एसयूवी में दी 6 एयरबैग की सुरक्षा, कीमत में भी हुई बढ़ोतरी

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में Maruti Suzuki की ओर से वाहनों को ऑफर किया जाता है। कंपनी की ओर से Sub Four Meter SUV सेगमेंट में Maruti Breeza को लाया जाता है। 2025 में इस एसयूवी को खरीदना अब और ज्यादा सुरक्षित हो गया है। कंपनी ने इसमें ESP, Hill Hold के साथ ही 6 Airbag सुरक्षा को भी दे दिया है। इसे किस कीमत पर खरीदा जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

ज्यादा सुरक्षित हुई Maruti Brezza

मारुति की ओर से ब्रेजा एसयूवी को पहले से ज्यादा सुरक्षित करने की कोशिश की गई है। जिसके तहत अब इस एसयूवी में स्टैंडर्ड तौर पर 6 Airbag को दिया गया है। स्टैंडर्ड होने के कारण अब इस सेफ्टी फीचर को एसयूवी के सभी वेरिएंट्स में ऑफर किया जा रहा है।

Maruti Brezza Safety Features

मारुति ब्रेजा में कंपनी की ओर से ईएसपी, हिल होल्ड असिस्ट, फ्रंट सीट बेल्ट प्री-टेंशनर, फोर्स लिमिटर, रिवर्स पार्किंग सेंसर, इंफोग्राफिक डिस्प्ले, हाई स्पीड अलर्ट वार्निंग, सीट बेल्ट रिमाइंडर लैंप, एंटी थेफ्ट सिक्योरिटी सिस्टम, इंजन इमोबिलाइजर, आइसोफिक्स चाइल्ड एंकरेज, शोल्डर हाइट एडजस्टेबल फ्रंट सीट बेल्ट जैसे सेफ्टी फीचर दिए जाते हैं।

Maruti Brezza Engine

Maruti Brezza में 1.5 लीटर की क्षमता का के15सी स्मार्ट हाइब्रिड इंजन दिया जाता है। जिससे इसे 103.1 पीएस की पावर और 136.8 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। इसमें 48 लीटर का फ्यूल टैंक दिया गया है और मैनुअल ट्रांसमिशन के साथ इस एसयूवी को एक लीटर में 19.89 किलोमीटर तक चलाया जा सकता है। ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन के साथ यह एसयूवी 19.80 किलोमीटर की माइलेज देती है।

Maruti Brezza Dimansion

Maruti Breeza की कुल लंबाई 3995 एमएम है। इसकी चौड़ाई 1790 एमएम, ऊंचाई 1685 एमएम है। इसका व्हीलबेस 2500 एमएम है और 328 लीटर का बूट स्पेस मिलता है।

कितनी है कीमत

मारुति की ओर से ब्रेजा की कीमत को February 2025 में अपडेट किया गया है। अब इस एसयूवी को 8.54 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत से खरीदा जा सकता है। इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 13.98 लाख रुपये रखी गई है।

Maruti Brezza का किनसे है मुकाबला

मारुति की ओर से ब्रेजा को Sub Four Meter SUV सेगमेंट में लाया जाता है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला Hyundai Venue, Tata Nexon, Kia Sonet, Kia Syros, Mahindra XUV 3XO, Skoda Kylaq जैसी एसयूवी के साथ होता है।

कल लॉन्च होगी बीवाईडी सीलियन 7 इलेक्ट्रिक एसयूवी, बुक करवाने से पहले जान लें कैसे हैं फीचर्स

परिवहन विशेष न्यूज

बीवाईडी सीलियन 7 चीन की प्रमुख Electric वाहन निर्माता BYD की ओर से भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। 17 February 2025 को नई Electric SUV के तौर पर पेश की गई Sealion 7 की कीमतों की घोषणा कर दी जाएगी। इसमें किस तरह के फीचर्स और रेंज मिलती है। कितनी कीमत पर इसे लाया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। चीन की प्रमुख इलेक्ट्रिक वाहन निर्माता BYD की ओर से भारतीय बाजार में Electric SUV and Sedan Car को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। कंपनी की ओर से 17 February 2025 को नई गाड़ी के तौर पर BYD Sealion 7 को लॉन्च कर दिया जाएगा। इसे किस कीमत पर लाया जा सकता है। इसमें किस तरह के फीचर्स को दिया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

कल लॉन्च होगी BYD Sealion 7 Electric SUV

बीवाईडी की ओर से भारतीय बाजार में नई इलेक्ट्रिक एसयूवी के तौर पर BYD Sealion 7 को लॉन्च किया जाएगा। इस गाड़ी को 17 February 2025 को औपचारिक तौर पर लॉन्च कर दिया जाएगा। इससे पहले इसे Bharat Mobility 2025 के तहत आयोजित किए गए Auto Expo 2025 में पेश किया जा चुका है।

BYD Sealion 7 Features

BYD Sealion 7 इलेक्ट्रिक एसयूवी में कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया गया है। इसमें 12 स्पीकर, वायरलेस फोन चार्जर, वॉटर ड्रॉप टेल लैंप, व्हीकल टू लोड, 15.6 इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, नापा लैदर सीट, 128 कलर एंबिएंट लाइट्स, पैनोरमिक सनरूफ, हेड-अप डिस्प्ले जैसे कई फीचर्स दिए गए हैं।

BYD Sealion 7 Battery and Range

कंपनी की ओर से इसमें 82.56 kWh की क्षमता की बैटरी को दिया गया है। गाड़ी को सिर्फ प्रीमियम और परफॉर्मेंस वेरिएंट्स में लाया गया है। इसमें लगी मोटर से इसे 390 किलोवाट की पावर और 690 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। गाड़ी में लगी मोटर से इसे 4.5 सेकेंड में ही 100 किलोमीटर की स्पीड पकड़ सकती है। सिंगल चार्ज में इसे 567 किलोमीटर की अधिकतम रेंज मिलती है। गाड़ी के साथ कंपनी 7KW की क्षमता का चार्जर दिया जाएगा।

BYD Sealion 7 Price and Delivery Date

कंपनी की ओर से Sealion 7 इलेक्ट्रिक एसयूवी की कीमत की जानकारी अभी नहीं दी गई है। लेकिन संभावना है कि इसे 50 लाख रुपये एक्स शोरूम कीमत के आस-पास लॉन्च किया जाएगा। एसयूवी के लिए बुकिंग 18 जनवरी 2025 से जारी है। लॉन्च से पहले बुक करने पर कंपनी की ओर से स्पेशल बेनिफिट्स को दिया जाएगा। 70 हजार रुपये में एसयूवी को बुक करवाया जा सकता है।

किनसे होगा मुकाबला

BYD Sealion 7 इलेक्ट्रिक एसयूवी को कंपनी की ओर से प्रीमियम सेगमेंट में लाया जाएगा। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला Hyundai Ioniq5, Kia EV6, BMW iX7 जैसी इलेक्ट्रिक एसयूवी के साथ होगा।

महंगा हो गया मारुति वैगन आर को खरीदकर घर लाना, किस वेरिएंट की कितनी बढ़ी कीमत, अब किस कीमत पर मिलेगी गाड़ी

परिवहन विशेष न्यूज

मारुति वैगन आर की कीमत में बढ़ोतरी प्रमुख वाहन निर्माता Maruti Suzuki की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। Dzire और Swift के बाद हैचबैक सेगमेंट में ऑफर की जाने वाली Maruti Wagonr को खरीदना अब महंगा हो गया है। कंपनी ने इस गाड़ी की कीमत में कितनी बढ़ोतरी की है। किस वेरिएंट की कीमत को कितना बढ़ाया गया है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में कई बेहतरीन कारों और एसयूवी की बिक्री करने वाली प्रमुख वाहन निर्माता Maruti Suzuki की ओर से Hatchback सेगमेंट में लंबे समय से ऑफर की जाने वाली Maruti Wagon R की कीमतों को बढ़ा दिया गया है। नई जेनरेशन Dzire और Swift के बाद अब Wagon R की कीमत में कितनी बढ़ोतरी हुई है। किस वेरिएंट की कीमत को कितना बढ़ाया गया है। अब इसे किस कीमत पर खरीदा जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

महंगा हुआ Maruti Wagon R को खरीदना

मारुति की ओर से हैचबैक सेगमेंट में ऑफर की जाने वाली Maruti Wagon R को खरीदना महंगा हो गया है। कंपनी ने इसकी कीमतों में बढ़ोतरी कर दी है। यह बढ़ोतरी फरवरी 2025 में की गई है और इसे आधिकारिक वेबसाइट पर भी अपडेट किया गया है।

पहले ही दी गई थी जानकारी

मारुति सुजुकी ओर से साल 2024 के आखिर में ही कीमतों को बढ़ाने की जानकारी दे दी गई थी। कंपनी ने बताया था कि वह नए साल में अपने पोर्टफोलियो की कारों की कीमतों में बढ़ोतरी करेगी। लेकिन यह बढ़ोतरी अलग अलग गाड़ी पर अलग अलग होगी। जिसके बाद अब फरवरी में कीमतों को बढ़ाया गया है।

कितनी बढ़ी कीमत

जानकारी के मुताबिक मारुति की ओर से अपनी Wagon R की कीमत में 15 हजार रुपये तक की बढ़ोतरी की गई है। कंपनी की ओर से अलग अलग वेरिएंट की कीमतों को एक समान बढ़ाने की जगह अलग अलग बढ़ाया है।

किन वेरिएंट्स की कीमतों में हुई बढ़ोतरी

मारुति की ओर से VXI 1.0 AGS, ZXI 1.2 AGS, ZXI+ 1.2 AGS और ZXI+ AGS ड्यूल टोन वेरिएंट्स की कीमत में 15 हजार रुपये बढ़ाए गए हैं। अन्य सभी वेरिएंट्स की कीमतों में 10 हजार रुपये तक की बढ़ोतरी की गई है।

किस कीमत पर मिलेगी गाड़ी

मारुति की ओर से वैगन आर के बेस वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 5.64 लाख रुपये रखी गई है। इसके अलावा VXI की कीमत 6.09 लाख रुपये, ZXI की कीमत 6.38 लाख रुपये, LXI CNG 6.54 लाख रुपये, VXI AGS 6.59 लाख रुपये, ZXI+ 6.85 लाख रुपये, ZXI AGS 6.88 लाख रुपये, VXI CNG 6.99 लाख रुपये और ZXI+ AGS 7.35 लाख रुपये एक्स शोरूम कीमत पर मिलेगी।

किनसे है मुकाबला

मारुति वैगन आर को हैचबैक सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। कंपनी की ओर से इस गाड़ी का बाजार में मुकाबला Maruti Celerio, S Presso, Renault Kwid, Hyundai Grand Nios i10 जैसी हैचबैक कारों के साथ ही Nissan Magnite, Renault Kiger और Tata Punch जैसी एसयूवी के साथ भी होता है।

80 हजार रुपये से कम कीमत पर मिलती है हीरो की यह बाइक, जनवरी 2025 में भी लाइन लगाकर लोगों ने खरीदी, ऐसा रहा टॉप-5 का हाल

परिवहन विशेष न्यूज

देश में हर महीने लाखों की संख्या में दो पहिया वाहनों की बिक्री होती है। January 2025 के दौरान देश में किस कंपनी की ओर से कितनी Bike Sale की गई हैं। किन बाइक्स को सबसे ज्यादा पसंद (Bike Sale in January 2025) किया गया है। किस कंपनी की कौन सी बाइक Top-5 की लिस्ट में शामिल हुई है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत में बड़ी संख्या में लोग Bike चलाना पसंद करते हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक January 2025 के दौरान बाइक सेगमेंट ने कैसा प्रदर्शन किया है। किस कंपनी की किस बाइक को सबसे ज्यादा पसंद किया गया है। Top-5 में किन बाइक्स को जगह मिली है। हम इसकी जानकारी आपको इस खबर में दे रहे हैं।

कितनी हुई बिक्री

भारतीय बाजार में बीते महीने लाखों की संख्या में लोगों ने बाइक्स को खरीदा है। जानकारी के मुताबिक January 2025 के दौरान देशभर में Top-5 बाइक्स की कुल 628536 यूनिट्स की बिक्री हुई है।

पहले नंबर पर रही Hero Splendor

हीरो मोटोकॉर्प की ओर से भारत में काफी लंबे समय से Hero Splendor बाइक को ऑफर किया जाता है। हर महीने इस बाइक की सबसे ज्यादा बिक्री होती है। January 2025 के दौरान भी यह बाइक सबसे ज्यादा पसंद की जाने वाली बाइक की लिस्ट में पहले पायदान पर रही है। बीते महीने इसकी कुल 259431 यूनिट्स की बिक्री की गई है। पिछले साल इसी अवधि के दौरान इसकी कुल 255122 यूनिट्स को खरीदा गया था।

दूसरे नंबर पर रही Honda Shine

जापानी दो पहिया निर्माता Honda की ओर से Shine को बाजार में बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। बिक्री के मामले में यह बाइक दूसरे नंबर पर रही है। January 2025 के दौरान इस बाइक की कुल 168290 यूनिट्स की बिक्री हुई है। जबकि पिछले साल इस दौरान इस बाइक की 145252 यूनिट्स की बिक्री हुई थी।

तीसरे नंबर पर रही Bajaj Pulsar

बजाज की ओर से पल्सर बाइक को कई सेगमेंट में बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। बीते महीने के दौरान देशभर में 104081 यूनिट्स को खरीदा गया है। इसके पहले साल 2024 में इसी अवधि के दौरान इस बाइक को 128883 लोगों ने खरीदा था। आंकड़ों के मुताबिक इस बाइक की बिक्री में करीब 20 फीसदी तक की कमी दर्ज की गई है।

अगले नंबर पर आई Hero HF Dlx

हीरो मोटोकॉर्प की HF Dlx बाइक को भी काफी पसंद किया जाता है। बीते महीने के दौरान इस बाइक की कुल 62223 यूनिट्स को खरीदा गया है। जबकि January 2025 के दौरान इसकी 78767 यूनिट्स को देशभर में खरीदा गया था।

Top-5 में शामिल हुई TVS Apache

TVS की बाइक Apache को भी Top-5 में जगह मिली है। कंपनी की ओर से ऑफर की जाने वाली TVS Apache बाइक को भी बीते महीने के दौरान 34511 लोगों ने खरीदा है। पिछले साल January महीने में इस बाइक को 31222 लोगों ने खरीदा था।

17 फ़रवरी को भारत आएगी ऑडी की नई आरएस क्यू8 परफॉर्मेंस , 4 लीटर इंजन के साथ 50KMPH टॉप स्पीड, मिलेंगे बेहतरीन फीचर्स

परिवहन विशेष न्यूज

लग्जरी वाहन निर्माता Audi की ओर से भारतीय बाजार में कई वाहनों की बिक्री की जाती है। कंपनी की ओर से जल्द ही नई गाड़ी के तौर पर Audi RS Q8 Performance को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। इस गाड़ी में किस तरह के फीचर्स को दिया जा सकता है। कितना दमदार इंजन इसमें मिल सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में कई कंपनियों की ओर से स्पोर्ट्स और लग्जरी कारों को ऑफर किया जाता है। जर्मनी की वाहन निर्माता Audi भी कई सेगमेंट में अपनी कारों को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाती है। जल्द ही ऑडी की ओर से भारत में नई गाड़ी के तौर पर दमदार इंजन और फीचर्स के साथ किसे लाने की तैयारी हो रही है। नई गाड़ी को कब लॉन्च किया जाएगा और इसकी संभावित कीमत क्या हो सकती है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

जल्द लॉन्च होगी नई गाड़ी

Audi की ओर से जल्द ही नई गाड़ी को भारत लाने की तैयारी की जा रही है। कंपनी की ओर से Audi RS Q8 Performance को लॉन्च किया जा सकता है। इस गाड़ी में दमदार इंजन और बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जाएगा।

कितना दमदार होगा इंजन

Audi RS Q8 Performance में कंपनी की ओर से चार लीटर की क्षमता का V8 इंजन दिया जाएगा। जिससे इसे 631 हॉर्स पावर और 627 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलेगा। इस गाड़ी में कंपनी की ओर से 8स्पीड ट्रिपट्रॉनिक ट्रांसमिशन को दिया जाएगा। इसे सिर्फ 3.4 सेकेंड में ही 0-100 किलोमीटर प्रति घंटे की स्पीड से चलाया जा सकता है। इसकी टॉप स्पीड 250 किलोमीटर प्रति घंटा तक होगी।

कैसे होंगे फीचर्स

Audi RS Q8 Performance एसयूवी में कंपनी की ओर से कई बेहतरीन फीचर्स और सेफ्टी फीचर्स को दिया जाएगा। इसमें 22 और 23 इंच अलॉय व्हील्स, 360 डिग्री कैमरा, 12.3 इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, 12.3 इंच डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, 23 स्पीकर के साथ Bang and Olufsen का ऑडियो सिस्टम, ऑडी कनेक्ट केयर, हेड-अप डिस्प्ले, फ्रंट में हनीकॉम्ब ग्रिल, मैट्रिक्स एलईडी लाइट्स, डिजिटल ओएलईडी टेल लाइट्स, आरएस एक्सटीरियर और इंटीरियर पैकेज, कार्बन पैकेज, स्पोर्ट सीट्स, सिरेमिक ब्रेक, एक्टिव रोल स्टेबलाइजेशन, रियर स्पोर्ट डिफरेंशियल, आरएस के मुताबिक ट्यून्ड एडेप्टिव एयर सस्पेंशन, पैनोरमिक सनरूफ, एडेप्टिव क्रूज कंट्रोल असिस्ट के साथ लेन गाइडेंस, इंटरसेक्शन असिस्ट, रिमोट पार्क असिस्ट प्लस, नाइट विजन असिस्ट जैसे कई फीचर्स को दिया जाएगा।

कब होगी लॉन्च

कंपनी की ओर से भारतीय बाजार में इस एसयूवी को 17 February 2025 को औपचारिक तौर पर लॉन्च कर दिया जाएगा। लॉन्च के पहले ही इस गाड़ी के लिए बुकिंग को शुरू किया जा चुका है। पांच लाख रुपये में ऑनलाइन और ऑफलाइन मोड से इसके लिए बुकिंग करवाई जा सकती है।

कितनी होगी कीमत

भारत में इस गाड़ी को लॉन्च करने के बाद ही सही कीमत की जानकारी मिल पाएगी। लेकिन उम्मीद की जा रही है इसे दो करोड़ रुपये से ज्यादा की एक्स शोरूम कीमत पर लाया जा सकता है। बाजार में इसका सीधा मुकाबला Lamborghini Urus और Prosche जैसी एसयूवी के साथ होगा।

आयकर ढांचा बनाम आर्थिक विकास

विजय गर्ग

आगामी वित्तवर्ष के लिए बजट में सबसे अधिक चर्चा आयकर में दी गई छूट के इर्द-गिर्द ही है। कोई दो मत नहीं कि केंद्र सरकार ने इस बार आयकर सीमा में अप्रत्याशित वृद्धि की है। इस संबंध में यह मांग अरसे से हो रही थी। यह एक दबाव भी था। मगर क्या सरकार का यह कदम आने वाले समय में आर्थिक विकास में तेजी लाएगा या इसे ऐसी आर्थिक नीति के तौर पर जाना जाएगा, जिसमें राजनीतिक दृष्टिकोण बड़ा रुख रखता था, यह अभी स्पष्ट नहीं है। प्रारंभिक तौर पर इसमें यह देखने को मिलता है कि आयकर छूट से नागरिकों के पास वित्तीय तरलता में तो बढ़ोतरी होगी और साथ इसके प्रत्यक्ष तौर पर दो फायदे भारतीय अर्थव्यवस्था में देखने को मिलेंगे।

पहला, व्यक्तियों की क्रय क्षमता बढ़ेगी और दूसरा, उनकी बचत बढ़ेगी। तीसरा । फायदा यह भी हो सकता सकता है कि कुछ व्यक्तियों को इस वित्तीय बचत से अपने ऋण के भुगतान में भी सहायता मिले, जो पिछले कुछ वर्षों से अपने पास कम वित्तीय तरलता से जूझ रहे थे। यानी संभव है कि क्रेडिट कार्ड के बकाया भुगतान या मकान बनाने के लिए उनके द्वारा लिए गए वित्तीय ऋणों की ऋणों की मासिक किस्तों के कारण आर्थिक तरलता में हुई कमी को एक सहारा मिले।

इस पक्ष पर अगर सिलसिलेवार समझने की कोशिश की जाए, तो कुछ आंकड़ों को भी साथ लेकर चलना पड़ेगा। आर्थिक सर्वेक्षण के अंतर्गत सरकार ने आगामी वित्तीय वर्ष के लिए सामान्य विकास की दर को दस फीसद द के आसपास प्रस्तावित किया है और महंगाई को पांच फीसद से कम । कम इससे स्पष्ट है कि जीडीपी की वास्तविक विकास की दर छह से सात फीसद के बीच ही रहने की संभावना है। इसलिए मोटे तौर पर सभी को यह बात समझनी होगी कि अर्थव्यवस्था में आर्थिक विकास की दर को बनाए रखने के लिए क्रय क्षमता में तेजी रखना सरकार की प्राथमिकता में है। इसके साथ ही तस्वीर का दूसरा पक्ष एक अलग असलियत को रखता है और वह यह बताता है कि भारत में से

आयकर देने वालों की संख्या मात्र आठ करोड़ के आसपास है, जो आबादी का मात्र का मात्र पांच फीसद है। इससे पहले आयकर सीमा सात लाख रुपए थी, जिसे सरकार ने इस बार बजट में बढ़ा कर बारह लाख रुपए कर दिया, लेकिन इस आयकर सीमा के अंतर्गत आने वाले करदाता तीन करोड़ या उससे कम ही हैं। यानी तीन करोड़ करदाता जो औसतन 15 करोड़ जनसंख्या का ही प्रतिनिधित्व करते हैं और उन्हें ही इस कर मुक्त सीमा का फायदा मिलेगा। तो क्या 140 करोड़ से अधिक जनसंख्या वाले मुल्क में आर्थिक विकास की जिम्मेदारी चाहे क्रय क्षमता बढ़ाने के संदर्भ में हो या आर्थिक बचत के हिसाब से, मुल्क के इस छोटे से तबके पर ध्यान देना तर्कसंगत है? जबकि भारत जीडीपी के हिसाब से चाहे विश्व में पांचवीं अर्थव्यवस्था का मुकाम रखता है, पर प्रति व्यक्ति आय के हिसाब से विश्व में बहुत पीछे है।

आयकर सीमा में बढ़ोतरी का प्रावधान

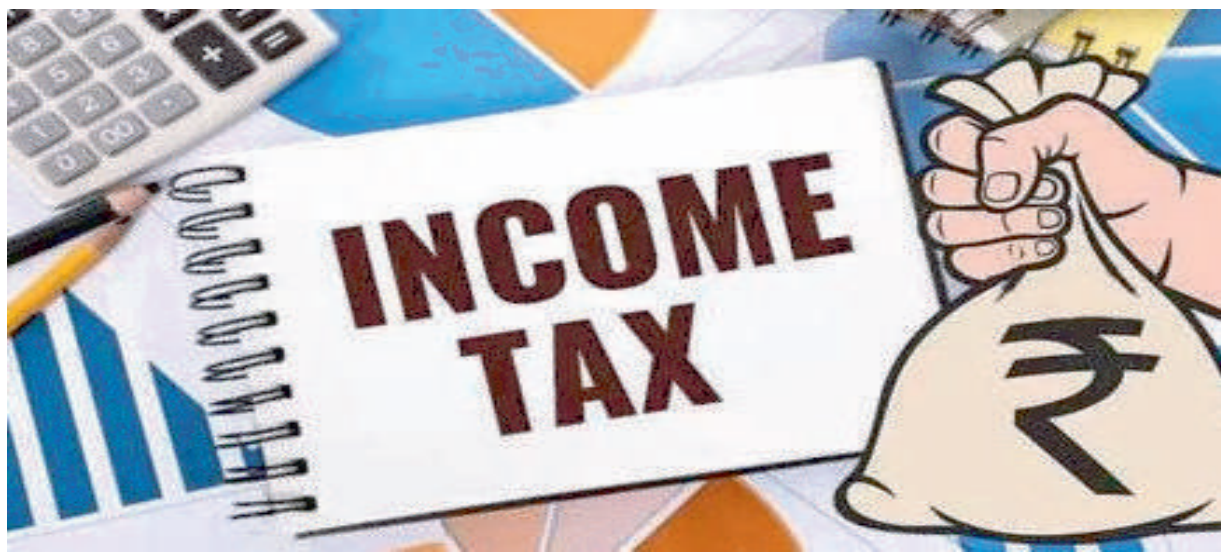

वित्तवर्ष 2025- 26 अप्रैल से लागू होगा। अब इस संदर्भ में यह बात भी समझनी होगी कि आगामी वित्तवर्ष की पहली दो तिमाहियों तक इस प्रावधान के सकारात्मक असर देखने को नहीं मिलेंगे। क्योंकि दिवाली तीसरी तिमाही में आती है और भारत में क्रय क्षमता का असली शक्ति प्रदर्शन उसी दौरान होता है। इस बजट के बाद से एक और चर्चा बहुत आम रही है कि आयकर की इस सीमा में बड़ी वृद्धि को मध्यवर्गीय व्यक्ति और उसके परिवार से प्रत्यक्ष तौर पर जोड़ दिया गया है, जो कि उचित नहीं है। भारत में मध्यवर्गीय व्यक्ति आबादी के करीबन 60 फीसद से अधिक का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि आयकर सीमा में बढ़ोतरी का फायदा मात्र तीन करोड़ परिवारों को होने वाला है, जो कुल जनसंख्या दस फीसद हिस्से का प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए इस करमुक्त सीमा के प्रावधान को

पूर्ण रूप से मध्यवर्गीय व्यक्ति के साथ जोड़ना अनुचित है। क्योंकि ये प्रावधान उच्च मध्यवर्गीय व्यक्ति को ही प्रभावित करते हैं।

वित्तवर्ष 2017-18 से वर्ष 2024-25 तक वेतन भोगी व्यक्तियों की आय में छह फीसद से अधिक की कमी देखी गई गई है, ₹जबकि स्वनियोजित रोजगार वाले लाखों व्यक्तियों की आय में नौ फीसद से अधिक की कमी दर्ज की गई है। यहां यह बताना अत्यंत आवश्यक है कि जिन आयकरदाताओं को इस आयकर सीमा में बढ़ोतरी से फायदा होगा, वे कूल बेतेनी भाबका है, जिनके वेतन में पिछले छह- वेतन भोगियों का मात्र 25 फीसद है, बाकी बचा 75 फीसद वह वेतन सात वर्षों में बहुत अधिक वृद्धि दर्ज नहीं हुई है और इसके अलावा महंगाई दर का चार से पांच फीसद के बीच बने रहना तथा खाद्य पदार्थ की महंगाई का आठ फीसद के स्तर पर पहुंचना, उनके लिए अत्यंत कष्टदायक है, क्योंकि जीएसटी की दरों में किसी भी तरह के परिवर्तन की कोई उम्मीद अभी नहीं दिखती है।

सरकार ने बजट प्रस्तुत करते समय आयकर सीमा में इतनी बड़ी राहत देकर एक तरह से तकरीबन एक लाख करोड़ रुपए के आर्थिक नुकसान को भी प्रस्तावित किया है। ज्ञात रहे कि तीन-चार वर्ष पहले जब सरकार ने कंपनियों के करों की दर में कमी की थी, तो उसने एक प्रकार से डेढ़ लाख करोड़ का घाटा प्रस्तावित किया था। जबकि वित्तीय नुकसान उससे दोगुना हुआ था। यह समझना भी अत्यंत आवश्यक है कि इस आयकर सीमा में बढ़ोतरी से प्रति व्यक्ति आय और न्यूनतम आयकर की सीमा के बीच का अंतर छह गुना से अधिक हो गया है। क्या यह पक्ष भारत में गरीबों के पैमाने को अत्यंत प्रभावित नहीं करेगा ? तनहा करणार आर्थिक विषमता को और अधिक गहरा नहीं करेगा ? नब्बे के दशक के आर्थिक सुधारों के समय भारत में प्रति व्यक्ति आय और न्यूनतम आर्थिक सीमा के बीच का अंतर तीन गुना हुआ करता था। अमेरिका में आज यह अंतर दोगुने से भी कम है। ऐसे समय में भारत में इसका छह आने वाले समय में आर्थिक विकास में किस

के स्तर पर पहुंचना, गुना अधिक सुविधाजनक होगा, यह अभी बहुत स्पष्ट नहीं है।

फिर भी, इस कदम के बहुत सकारात्मक पक्ष आने वाले समय में ही दिखेंगे। इससे निजी आर्थिक निवेश को मिलेगा। क्योंकि यह व्यक्ति की आर्थिक क्षमता को यकीनन बढ़ाएगा। इसके अलावा लोगों की इससे बढ़ने वाली आर्थिक बचत का फायदा भी आने वाले दिनों में भारतीय पूंजी बाजार, बैंकिंग क्षेत्र, जमीन-जायदाद कारोबार क्षेत्र आदि में देखने को मिलेगा। इसके अलावा विभिन्न वैश्विक परिस्थितियों में हो रहे बदलाव के कारण भी भारत के घरेलू बाजार में आर्थिक तरलता में बढ़ोतरी आवश्यक थी, जिसे राजग सरकार ने समय रहते ही भांप लिया और उन अप्रत्याशित वैश्विक कदमों से निपटने के लिए सरकार का एक महत्त्वपूर्ण कदम समझा जा सकता है।

विज्ञान में महिलाओं के लिए भविष्य का निर्माण

विजय गर्ग

ट्रेलब्लाजिंग महिला वैज्ञानिकों ने बाधाओं को धता बताते हुए साबित किया कि समावेश केवल निष्पक्षता का मामला नहीं है बल्कि वैज्ञानिक और सामाजिक प्रगति के लिए एक आवश्यकता है

21 वीं शताब्दी में, जहां वैज्ञानिक सफलताएं हमारी दुनिया को आकार देती रहती हैं, विज्ञान में महिलाओं का लगातार अंडरप्रेन्टेशन एक शानदार मुद्दा बना हुआ है। बुनियादी विज्ञान से लेकर अंतरिक्ष विज्ञान तक विविध क्षेत्रों में महिलाएं दुनिया भर की कुछ सबसे बड़ी वैज्ञानिक उपलब्धियों में सबसे आगे रही हैं। इन प्रेरक रोल मॉडल के बावजूद, प्रणालीगत बाधाएं विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (एसटीईएम) में महिलाओं की भागीदारी को रोकती रहती हैं। यह समय है कि हम इन चुनौतियों का सामना करें और एक ऐसा भविष्य बनाएं जहां महिलाएं वास्तव में विज्ञान में पनप सकें। यदि हम अपनी आधी आबादी को बाहर करते हैं तो हम किस तरह की वैज्ञानिक दुनिया का निर्माण कर रहे हैं?

महिलाओं की पूरी भागीदारी के बिना, हम प्रतिभा, रचनात्मकता और अभिनव समाधानों के एक विशाल पूल तक पहुंच खो देते हैं जो हमारी कुछ सबसे बड़ी चुनौतियों का समाधान कर सकते हैं। कई लड़कियों को रूढ़ियों के कारण कम उम्र से विज्ञान का पीछा करने से हतोत्साहित किया जाता है जो इन क्षेत्रों को ₹अनुपयुक्त₹ या ₹बहुत कठिन₹ के रूप में फ्रेम करते हैं तथाकथित "टपका हुआ पाइपलाइन" हाई स्कूल के रूप में जल्दी के रूप में अपने टोल लेने के लिए शुरू होता है, कम लड़कियों विज्ञान से संबंधित अध्ययन और कॅरिअर के लिए चुनते हैं ।

यहां तक कि जो लोग इन प्रारंभिक बाधाओं से गुजरते हैं, उनके लिए भी चुनौतियां उच्च शिक्षा और पेशेवर जीवन में बनी रहती हैं। अनुसंधान में महिलाओं को मेंटरशिप की कमी, फंडिंग और काम पर रखने और पदोन्नति में प्रणालीगत पूर्वाग्रहों तक असमान पहुंच का सामना करना पड़ता है।

संख्या अपने लिए बोलती है: यूनेस्को की रिपोर्ट है कि विश्व स्तर पर एसटीईएम के केवल 35 प्रतिशत छात्र ही महिलाएं हैं, और नेतृत्व भूमिकाओं में उनका प्रतिनिधित्व और भी कम है। भारत में, उच्च शिक्षा पर अखिल भारतीय सर्वेक्षण (AISHE) इस बात की पुष्टि करता है कि जहां विज्ञान का पीछा करने वाली महिलाओं की संख्या बढ़ी है, वहीं शीर्ष अनुसंधान पदों और नेतृत्व भूमिकाओं में उनकी उपस्थिति अभी भी निराशाजनक है।

इन बाधाओं के बावजूद, कई भारतीय महिला वैज्ञानिकों ने यथास्थिति को परिभाषित किया है और उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। डॉ। इंदिरा हिंदुजा ने 1986 में भारत के पहले टेस्ट-ट्यूब बेबी को विकसित करके प्रजनन चिकित्सा में क्रांति ला दी और युग्मक इंट्राफैलोपियन ट्रांसफर (GIFT) तकनीक का नेतृत्व किया। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) में मुख्य वैज्ञानिक के रूप में डॉ। सौम्या स्वामीनाथन के नेतृत्व ने वैश्विक स्वास्थ्य नीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसरो की वरिष्ठ वैज्ञानिक कल्पना कालाहस्ती ने भारत के विजयी चंद्रयान -3 मिशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और 2023 में प्रकृति के उल्लेखनीय आंकड़ों की सूची में स्थान अर्जित किया। इन ट्रेलब्लेज़र ने न केवल वैज्ञानिक ज्ञान की सीमाओं को धक्का दिया, बल्कि विज्ञान में महिलाओं की भावी पीढ़ियों के लिए मार्ग प्रशस्त करते हुए सामाजिक बाधाओं को भी तोड़ दिया। क्या इससे समाज को कोई फर्क पड़ता है? जब महिलाएं वैज्ञानिक नवाचार में सबसे आगे होती हैं तो समाज अधिक समावेशी और व्यापक समाधानों से लाभान्वित होता है। मातृ स्वास्थ्य, लिंग-विशिष्ट चिकित्सा और सामुदायिक स्वास्थ्य हस्तक्षेप जैसे क्षेत्र अक्सर उन महिला वैज्ञानिकों के कारण पनपते हैं जो इन चुनौतियों को पहले से समझते हैं। समावेश सिर्फ निष्पक्षता के बारे में नहीं है - यह विज्ञान को समृद्ध करने के बारे में है। तो, हम कैसे आगे बढ़ते हैं? विज्ञान में महिलाओं के लिए भविष्य बनाने के लिए कई मोर्चों पर सामूहिक प्रयास की आवश्यकता होती है।

हमें महिलाओं की उन्नति में बाधा डालने वाली संरचनात्मक बाधाओं को खत्म करना चाहिए, मेंटरशिप कार्यक्रम प्रदान करना चाहिए और समान भर्ती, धन और कैरियर प्रगति के अवसरों को सुनिश्चित करने वाली नीतियों को बढ़ावा देना चाहिए। शैक्षिक संस्थानों को लड़कियों को एसटीईएम क्षेत्रों को आगे बढ़ाने के लिए सक्रिय रूप से प्रोत्साहित करना चाहिए, जबकि कार्यस्थलों को लचीले कार्य वातावरण की पेशकश करनी चाहिए जो महिलाओं को व्यक्तिगत और व्यावसायिक जिम्मेदारियों को संतुलित करने की अनुमति देते हैं।

यह इन बाधाओं को फाड़ने और भविष्य बनाने का समय है जहां हर युवा लड़की जो वैज्ञानिक बनने का सपना देखती है, वह बिना सीमाओं के ऐसा कर सकती है। जब महिलाओं को विज्ञान में योगदान करने के समान अवसर दिए जाते हैं, तो हम सभी लाभ प्राप्त करने के लिए खड़े होते हैं - ग्राउंडब्रेकिंग खोजों से लेकर अधिक समावेशी और समृद्ध दुनिया तक।

भारतीय छात्रों के लिए सर्वश्रेष्ठ अध्ययन स्थल

विजय गर्ग

जब भारतीय छात्र विदेशी शैक्षणिक कार्यक्रमों में भाग लेते हैं, तो वे उच्च गुणवत्ता वाले सीखने और दुनिया भर में सांस्कृतिक अनुभव को सुरक्षित करते हैं। विदेश में पढ़ाई से जुड़े खर्च भारतीय छात्रों के लिए एक बड़ी चुनौती हैं। कई देश छात्रों को उचित लागत पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच प्रदान करते हैं। भारतीय छात्रों के लिए सात कम लागत वाले अध्ययन स्थल इस प्रकार उपलब्ध हैं:

1. । जर्मनी सार्वजनिक जर्मन विश्वविद्यालय किसी भी देश के छात्रों को मुफ्त ट्यूशन की पेशकश करते हुए दुनिया भर में उत्कृष्ट शिक्षा प्रदान करते हैं। स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय छात्रों को जर्मन सार्वजनिक विश्वविद्यालयों में ट्यूशन फीस का भुगतान करने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन आमतौर पर न्यूनतम प्रशासनिक शुल्क का भुगतान करने की आवश्यकता होती है। रहने का खर्च औसत 70,000 रुपये और 80,000 रुपये प्रति माह के बीच, आवास, भोजन, परिवहन और अन्य आवश्यक चीजों को कवर करता है। डीएएडी छात्रवृत्ति कई छात्रवृत्ति के बीच है जो विदेश में पढ़ने वाले छात्रों को वित्तीय सहायता प्रदान करती है।

2. । मलेशिया प्रमुख अंतरराष्ट्रीय छात्र मलेशिया को अपने अध्ययन गंतव्य के रूप में चुन रहे हैं क्योंकि यह उचित शिक्षा लागत और जीने के लिए मध्यम खर्च प्रदान करता है। स्नातक कार्यक्रमों के लिए ट्यूशन फीस 1.5 लाख रुपये से लेकर 4 लाख रुपये प्रति वर्ष तक है, जबकि मास्टर कार्यक्रमों की कीमत 4 लाख रुपये से 9 लाख रुपये सालाना के बीच है। इस स्थान पर प्रत्येक माह जीवित रहने का कुल खर्च 40,000 रुपये और 50,000 रुपये के बीच आता है। शिक्षा की भाषा के रूप में संस्कृतियों और अंग्रेजी की विस्तृत श्रृंखला मलेशिया में अध्ययन करने के लिए कई भारतीय छात्रों को आकर्षित करती है।

3 । फ्रांस फ्रांस का हर सार्वजनिक संस्थान एक किफायती शिक्षा कार्यक्रम चलाता है। स्नातक के कार्यक्रमों के लिए ट्यूशन फीस प्रति वर्ष लगभग 2.5 लाख रुपये है, जबकि मास्टर के कार्यक्रम 9 लाख रुपये से लेकर 15 लाख रुपये सालाना तक हैं। शेष क्षेत्रों की तुलना में पेरिस में शहर के स्थान के परिणामों के आधार पर जीवन में असमानता सबसे महंगी है। फ्रांस में अध्ययन करने की अंतर्राष्ट्रीय छात्र अपील बढ़ जाती है क्योंकि फ्रांसीसी संस्थान विदेशी छात्रों को छात्रवृत्ति के कई अवसर प्रदान करते हैं।

4 । नॉर्वे हर कोई, नागरिकता की परवाह किए बिना, नॉर्वे में मुफ्त सार्वजनिक विश्वविद्यालय नामांकन प्राप्त करता है, जो एक ऐसे राष्ट्र के रूप में एक स्थिति बनाए रखता है जो असाधारण जीवन स्तर प्रदान करता है। स्थानीय रहने की लागत को देखते हुए इस देश में आर्थिक खर्च लगभग 1.5 लाख रुपये से 2 लाख रुपये प्रति माह तक पहुंच जाता है। भारतीय छात्रों को नॉर्वे आकर्षक लगता है क्योंकि ट्यूशन फीस मौजूद नहीं है, जबकि अंग्रेजी सिखाने वाले कार्यक्रम सार्वजनिक विश्वविद्यालयों में उपलब्ध हैं।

5. । आयरलैंड भारतीय छात्र अपने गतिशील सांस्कृतिक वातावरण के साथ-साथ उचित ट्यूशन फीस के कारण आयरलैंड को अपने अध्ययन गंतव्य के रूप में चुनते हैं। स्नातक कार्यक्रमों के लिए ट्यूशन फीस INR 6.3 लाख से INR 10 लाख प्रति वर्ष तक है, जबकि मास्टर कार्यक्रमों की लागत INR 12 लाख और INR 25 लाख सालाना के बीच है। इस स्थान पर मासिक रहने का खर्च INR 70,000 और INR 1 लाख वार्षिक के बीच आता है। जो छात्र स्नातक के बाद काम करने के अवसर चाहते हैं, वे अपने अध्ययन के बाद के कार्य कार्यक्रमों के कारण आयरलैंड को एक आकर्षक गंतव्य पाएंगे।

6 । पोलैंड भारतीय छात्र तेजी से अपनी शिक्षा के लिए पोलैंड का चयन करते हैं क्योंकि देश सस्ती शैक्षणिक लागतों को एक साथ रहने और बेहतर शैक्षिक गुणवत्ता की सस्ती लागत प्रदान करता है। स्नातक कार्यक्रमों के लिए ट्यूशन फीस 2 लाख रुपये से लेकर 4 लाख रुपये प्रति वर्ष तक है, जबकि मास्टर कार्यक्रमों की कीमत 2.5 लाख रुपये से 5 लाख रुपये सालाना के बीच है। इस स्थान पर मासिक खर्च 40000 रुपये से 60000 रुपये के भीतर आता है। देश अधिक छात्रों को आकर्षित करता है क्योंकि यह ऐतिहासिक मूल्य और एक आदर्श केंद्रीय यूरोपीय स्थिति का संयोजन प्रदान करता है।

7. । मेक्सिको मेक्सिको में किफायती जीवन खर्च के साथ संयुक्त कम ट्यूशन की कीमतें भारतीय छात्रों के लिए एक किफायती शैक्षिक वातावरण बनाती हैं जो वहां अध्ययन करना चाहते हैं। स्नातक कार्यक्रमों के लिए ट्यूशन फीस INR 50,000 से INR 2 लाख प्रति वर्ष तक है, जबकि मास्टर कार्यक्रमों की लागत INR 70,000 और INR 2.5 लाख सालाना के बीच है। मेक्सिको में औसत रहने की लागत प्रति माह 40,000 और 70,000 रुपये के बीच है। मैक्सिकन शिक्षण संस्थानों में स्पेनिश बोलने वाली कक्षाओं में भाग लेते समय छात्र अपनी शिक्षा को जीवंत सांस्कृतिक सेटिंग में खोज सकते हैं।

निष्कर्ष विदेश में अध्ययन करने की योजना बनाने वाले छात्रों को अपना निर्णय लेते समय ट्यूशन खर्च और बुनियादी रहने की लागत शामिल करने की आवश्यकता है। जो छात्र स्थानीय रीति-रिवाजों के बारे में सीखने के साथ-साथ छात्रवृत्ति के अवसरों की जांच करते हैं, उन्हें विदेश में अधिक संतुष्टिदायक शैक्षिक अनुभव प्राप्त होगा। ये देश कम कीमतों पर उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करते हैं, इस प्रकार भारतीय छात्रों को ऋण मुक्त अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन के अवसरों के लिए उत्कृष्ट विकल्प प्रदान करते हैं।

केंद्रीय बजट और हमारा प्रदेश

आशा की जानी चाहिए कि प्रदेश के तीर्थों, देवस्थलों के विकास व उनकी कनेक्टिविटी बढ़ाने के लिए केंद्र से उचित सहायता प्राप्त होगी। पहाड़ी क्षेत्रों में मेडिकल टूरिज्म को बढ़ावा देने का भी विचार है

केंद्रीय बजट पर देश के प्रत्येक राज्य व समाज के प्रत्येक वर्ग की निगाहें टिकी रहती हैं कि उन्हें इससे क्या मिला? केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने एक फरवरी 2025 को 2025-26 का बजट लोकसभा में प्रस्तुत करते हुए देश के विकास और कल्याण के लिए कई बड़ी घोषणाएं कीं। लेकिन बिहार और असम के सिवाय किसी राज्य का विशेष जिक्र नहीं हुआ। जब बिहार में मखाना बोर्ड और असम में यूरिया संयंत्र स्थापित करने का विशेष उल्लेख किया गया, तो हिमाचल प्रदेश सहित कई राज्य कह उठे कि हमारे राज्य को तो कुछ नहीं मिला। लेकिन ऐसा कहना सही नहीं होगा। राष्ट्रीय योजनाओं व कार्यक्रमों से हर राज्य को लाभ मिलता आया है और मिलता ही रहेगा। आखिर हमारा भारत, संघीय ढांचा ही तो है। राज्यों को मिल कर ही देश बना है। देश में एक ही तो नागरिकता है। जो देश का है वह राज्यों का भी है। यहां बजट में की गई कुछ घोषणाओं का जिक्र करना जरूरी है, जिससे अन्य राज्यों के साथ-साथ हिमाचल प्रदेश को भी बहुत फायदा मिलने वाला है। कृषि व बागवानी : प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना लागू करने की घोषणा हुई है जिसमें कम उत्पादकता, कम फसलों की बुआई और औसत से कम ऋण मानदंडों वाले 100 जिलों में उत्पादकता व भंडारण बढ़ाने के लिए विशेष प्रयत्न किए जाएंगे।

सिंचाई सुधार के साथ-साथ किसानों को दीर्घ व लघु अवधि के ऋण उपलब्ध करवाए जाएंगे। इस योजना से देश के 1.7 करोड़ किसान लाभान्वित होंगे। हिमाचल प्रदेश से भी इस कार्यक्रम के अंतर्गत किसी एक जिले को चुने जाने की संभावना है। पहले भी सबसे कम विकसित जिलों की आर्थिक प्रगति के लिए चलाई गई एकांक्षी जिला योजना के अंतर्गत हिमाचल प्रदेश के चंबा जिला को चुना गया था। फल व सब्जी उत्पादन व खाद्य और फल प्रसंस्करण के लिए भी देश में व्यापक कार्यक्रम चलाए जाने का प्रस्ताव है। हिमाचल प्रदेश, देश के फल राज्यों में से एक है। राज्य में सेब की पैदावार सबसे अधिक होने के कारण इसे सेब राज्य की संज्ञा दी गई है। हिमाचल प्रदेश को गैर मौसमी सब्जियां उगाने की भी महारत हासिल है। ऐसे में हमारे बागवानों और सब्जी उत्पादकों को भी लाभ मिलना सुनिश्चित है। केंद्रीय बजट में किसान क्रेडिट कार्ड के माध्यम से किसानों को दिए जाने वाले ऋणों की ऋण सीमा तीन लाख से पांच लाख तक बढ़ाए जाने की घोषणा की गई है। हिमाचल में 10 लाख के करीब सीमांत, लघु, मझोली और बड़ी किसानी जोते हैं। इस बढ़ोतरी का लाभ हिमाचल के खेती किसानों, डेयरी किसानों और यहां तक कि मछुआरे भी उठा सकते हैं। प्रदेश में 13000 के लगभग मछुआरे हैं। एमएसएमई और स्टार्टअप (सूक्ष्म और मध्यम उद्यम), एमएसएमई व स्टार्टअप के लिए वर्गीकरण से संबंधित निवेश और कारोबार की सीमाओं को 2.5 व 2.0 गुणा बढ़ाया जा रहा है। उन्हें ऋण तक पहुंच बनाने के लिए ऋण गारंटी कवर बढ़ाने की घोषणा भी हुई है। सूक्ष्म और लघु उद्यमों के लिए रुपए 5 करोड़ से रुपए 10 करोड़, स्टार्टअप के लिए 10 करोड़ से बढ़ा कर 20 करोड़, उत्तम चल रहे निर्यातक एमएसएमई के लिए रुपए 20 करोड़ के सावधि ऋण की व्यवस्था की जा रही है। हिमाचल प्रदेश के उद्यमियों को भी इससे लाभ पहुंचेगा और उद्यमियों के साथ-साथ प्रदेश में युवाओं के लिए भी रोजगार बढ़ेगा। प्रदेश में इस समय 136000 उद्यम पंजीकृत हैं जिसमें 97.5 प्रतिशत सूक्ष्म, 2.37 प्रतिशत लघु और 0.28 प्रतिशत मध्यम किस्म के हैं।

शिक्षा और कौशल विकास : बच्चों में जिज्ञासा और नवाचार की भावना उत्पन्न करने की उद्देश्य से देश में पहले से ही अटल टिंकरिंग लैब कार्यक्रम चल रहा है। अगले पांच सालों में 50000 और अटल टिंकरिंग लैब खोले जाने का प्रस्ताव है। निश्चित तौर पर हिमाचल प्रदेश के कई विद्यालय इस सुविधा को प्राप्त कर सकेंगे। भारतीय नेट परियोजना के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में सरकारी माध्यम पाठशालाओं को ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी प्रदान की जाएगी जिसमें हिमाचल के भी कई स्कूलों को कनेक्टिविटी मिलेगी। भारतीय भाषा पुस्तक स्कीम के तहत स्कूल और उच्चत्तर में शिक्षा के लिए भारतीय भाषाओं में डिजिटल रूप में पुस्तकें प्रदान की जाएंगी जिससे प्रदेश के विद्यार्थी भी लाभान्वित होंगे। आईआईटी में प्रवेश के लिए आगामी वर्ष 6500 अतिरिक्त सीटें और मेडिकल कॉलेजों में 10000 नई सीटें सृजित होंगी। मेडिकल कॉलेजों में आगामी पांच सालों में 75000 नए प्रवेश दिए जाने का प्रस्ताव है, जिससे हिमाचल प्रदेश के इच्छुक विद्यार्थियों को भी लाभ मिलेगा। इसी तरह कौशल निर्माण के लिए देश में राष्ट्रीय कौशल उत्कृष्टता केंद्र खोले जा रहे हैं जिससे राज्य के युवक भी प्रशिक्षण प्राप्त कर सकेंगे। स्वास्थ्य : केंद्रीय बजट में कैंसर व अन्य गंभीर बीमारियों से पीड़ित लोगों को राहत देने के उद्देश्य से 36 जीवन रक्षक दवाइयों को बुनियादी सीमा शुल्क में पूरी तरह से छूट दी गई है। कुछ अन्य जीवनरक्षक दवाइयों को 5 फीसदी रियायती सीमा शुल्क की सूची में डाला गया है। इससे रोगियों को सस्ती दवाइयां उपलब्ध होंगी। अगले तीन सालों में देश के प्रत्येक जिले के अस्पतालों में डे-केयर सेंटर स्थापित होंगे।

जाहिर है कि हिमाचल के भी सभी जिले चरणबद्ध तरीके से इससे लाभान्वित होंगे। ऑनलाइन कंपनियों में डिलीवरी के साथ जुड़े या अन्य अस्थायी कर्मचारी जिन्हें गिग वर्कर्स कहा जाता है, को प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के तहत लाए जाने का प्रस्ताव है जो अत्यंत सुखद है। पर्यटन : केंद्रीय बजट में देश में 50 पर्यटक स्थलों को विकसित किया जा रहा है। इसमें राज्यों की भागीदारी भी सुनिश्चित की जाएगी। उड़ान योजना में देश में 120 नए गंतव्यों को कनेक्टिविटी प्रदान करने के लिए हेलिपैड या छोटे हवाई अड्डे बनाने का प्रावधान किया गया है। आशा की जानी चाहिए कि प्रदेश के तीर्थों, देवस्थलों के विकास व उनकी कनेक्टिविटी बढ़ाने के लिए केंद्र से उचित सहायता प्राप्त होगी। पहाड़ी क्षेत्रों में मेडिकल टूरिज्म को बढ़ावा देने का भी विचार है। हिमाचल का स्वच्छ पर्यावरण मेडिकल अर्थात हेल्थ पर्यटन के लिए बहुत ही अनुकूल है। केंद्रीय बजट मध्यम वर्ग को राहत देने वाला है। नई आय कर सरंचना से हिमाचल के कर्मचारियों-पेंशनरों को भी राहत पहुंचेगी।

-केआर भारती

एफपीआई ने फरवरी में इक्विटी से 21,272 करोड़ रुपये निकाले, 2025 में कुल निकासी ₹1 लाख करोड़ के करीब

परिवहन विशेष न्यूज

विदेशी निवेशकों की भारतीय इक्विटी बाजार से भारी बिकवाली के बीच जियोजित फाइनेंशियल सर्विसेज के मुख्य निवेश रणनीतिकार वीके विजयकुमार का मानना है कि जब डॉलर सूचकांक नीचे जाएगा, तब एफपीआई की रणनीति में बदलाव दिख सकता है। आंकड़ों के अनुसार, विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) ने इस महीने (14 फरवरी तक) अब तक भारतीय इक्विटी से 21,272 करोड़ रुपये के शेयर बेचे हैं। विदेशी निवेशकों की ओर से क्यों हो रही है बिकवाली, आगे क्या संभावनाएं हैं, आइए जानें।

नई दिल्ली। अमेरिका की ओर से आयात पर शुल्क लगाये जाने के बाद बढ़े वैश्विक तनाव के कारण विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) की ओर से भारतीय शेयर बाजार से अपने पैसे निकालना जारी है। फरवरी महीने के पहले दो सप्ताह में ही एफपीआई ने 21,272 करोड़ रुपये निकाल लिए हैं। इससे पहले जनवरी महीने में एफपीआई की ओर से 78,027 करोड़ रुपये की निकासी की गई थी। शेयर बाजार की डिपॉजिटरी के आंकड़ों से पता चलता है कि 2025 में अब तक एफपीआई की ओर से की गई कुल निकासी करीब 99,299 करोड़ रुपये यानी करीब 1 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गई है।

डॉलर में कमजोरी आई तो दिख सकता है विदेशी निवेशकों के रुख में बदलाव

जियोजित फाइनेंशियल सर्विसेज के मुख्य निवेश रणनीतिकार वीके विजयकुमार के अनुसार जब डॉलर सूचकांक नीचे जाएगा, तब एफपीआई की रणनीति में बदलाव दिख सकता है। आंकड़ों के अनुसार, विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) ने इस महीने (14 फरवरी तक) अब तक भारतीय इक्विटी से 21,272 करोड़ रुपये के शेयर बेचे हैं।

मॉर्निंगस्टार इन्वेस्टमेंट रिसर्च इंडिया के एसोसिएट निदेशक-प्रबंधक शोध हिमांशु श्रीवास्तव के अनुसार अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की ओर से इस्पात और एल्युमीनियम आयात पर नये शुल्क लगाने और कई देशों पर पारस्परिक टैरिफ लगाने की योजना की घोषणा से वैश्विक स्तर पर बाजार की चिंताएं बढ़ गई हैं। उन्होंने कहा कि इन घटनाक्रमों से संभावित वैश्विक व्यापार युद्ध की आशंकाएं फिर से बढ़ीं हैं। इससे के बाद, एफपीआई भारत सहित उभरते बाजारों में अपने निवेश का पुनर्मूल्यांकन करने के लिए प्रेरित हुआ है।

वाटरफील्ड एडवाइजर्स के वरिष्ठ निदेशक (सूचीबद्ध निवेश) विपुल भोवार ने कहा, ₹वैश्विक नीतियों में बदलाव, विशेष रूप से अमेरिका से जुड़े बदलाव, एफपीआई के बीच अनिश्चितता की भावना पैदा कर रहे हैं, जो बदले में भारत जैसे गतिशील बाजारों में उनकी निवेश रणनीतियों को नया आकार दे रहे हैं।₹

कंपनियों की कम आय और रुपये में गिरावट से बाजार का आकर्षण प्रभावित

श्रीवास्तव ने कहा कि घरेलू मोर्चे पर, कॉरपोरेट आय में कमी और भारतीय रुपए में लगातार गिरावट, जो कई वर्षों के निचले स्तर को छू गई है, ने भारतीय परिसंपत्तियों के आकर्षण को और घटा दिया है। दूसरी ओर, एफपीआई उक्त अवधि के दौरान ऋण बाजार में खरीदार रहे। उन्होंने ऋण सामान्य सीमा (Debt General Limit) के तहत 1,296 करोड़ रुपये और ऋण स्वैच्छिक प्रतिधारण मार्ग (Debt Voluntary Retention Route) के तहत 206 करोड़ रुपये की खरीदारी की है।

घरेलू शेयर बाजार में विदेशी निवेशकों का हालिया रुख उनकी सतर्क रणनीति का संकेत देती है। विदेशी निवेशकों 2024 में भारतीय इक्विटी में निवेश को 427 करोड़ रुपये की शुद्ध खरीदारी के साथ बढ़ाया था। हालांकि, 2024 में विदेशी निवेशकों की ओर से की गई शुद्ध खरीदारी का आंकड़ा, 2023 की 1.71 लाख करोड़ रुपये की खरीदारी के विपरीत है। 2023 में भारत के मजबूत आर्थिक बुनियादी ढांचे के प्रति बढ़ी उम्मीद के कारण विदेशी निवेशकों ने असाधारण खरीदारी की थी। वहीं, 2022 में वैश्विक केंद्रीय बैंकों की ओर से आक्रामक दर वृद्धि के बीच विदेशी निवेशकों ने 1.21 लाख करोड़ रुपये की शुद्ध बिकवाली की थी।

ईडी की पीएमएलए के तहत बड़ी कार्रवाई, 1646 करोड़ रुपये के सबसे बड़े क्रिप्टो फंड को किया जब्त

परिवहन विशेष न्यूज

ईडी ने अब तक का सबसे बड़ा क्रिप्टो फंड 1,646 करोड़ रुपये जब्त किया, जो एक धोखाधड़ी वाली निवेश योजना से जुड़ा था। निवेशकों को सुरक्षित निवेश के नाम पर जाल में फंसाया गया था।

नई दिल्ली। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने धनशोधन जांच के तहत अब तक का सबसे बड़ा क्रिप्टो फंड जब्त किया है, जिसकी कीमत 1,646 करोड़ रुपये है। सुरक्षित निवेश के नाम पर कई जमाकर्ताओं को धोखा दिया गया था। आधिकारिक सूत्रों ने यह जानकारी दी।

केंद्रीय जांच एजेंसी के अहमदाबाद कार्यालय ने शनिवार को 'बिटकनेक्ट लेंडिंग प्रोग्राम' के तहत धोखाधड़ी के मामले में तलाशी अभियान चलाया, जिसके बाद 13.50 लाख रुपये नकद, एक एसयूवी कार और कई डिजिटल उपकरण (जैसे मोबाइल और कंप्यूटर) जब्त किए हैं। बिटकनेक्ट लेंडिंग प्रोग्राम बिना पंजीकरण के चल रहा था, जिसमें सिक्योरिटी की बिक्री और निवेश में धोखाधड़ी की गई।

दरअसल, सूरत पुलिस की अपराध शाखा ने धोखाधड़ी की प्राथमिकी दर्ज की थी। आरोप है कि नोटबंदी के बाद नवंबर 2016 से जनवरी 2018 के बीच यह धोखधड़ी की गई। इसी प्राथमिकी के आधार पर ईडी ने धनशोधन रोकथाम अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया।

क्रिप्टो वॉलेट में किए गए लेन-देन का किया विश्लेषण

इसके बाद ईडी ने अपनी टीम के तकनीकी विशेषज्ञों को तैनात किया, जिन्होंने क्रिप्टो वॉलेट में किए गए लेन-देन का विश्लेषण किया और इन वॉलेट के मूल और उनको चलाने वालों का पता लगाया। पाया गया कि कई लेन-देन डॉर्क वेब के जरिए किए गए थे, ताकि इन्हें आसानी ट्रैक न किया जा सके।

अब तक की सबसे बड़ी डिजिटल संपत्ति की जब्ती

ईडी ने कई वेब वॉलेट की निगरानी की और जानकारी जुटाकर उन वॉलेट और स्थानों का पता लगाया, जहां क्रिप्टो करंसी मौजूद थी। सूत्रों के मुताबिक, कुल 1,646 करोड़ रुपये की क्रिप्टो करंसी जब्त की गई और इसे ईडी के विशेष क्रिप्टो वॉलेट में ट्रांसफर कर दिया गया है। यह अब तक की सबसे बड़ी डिजिटल संपत्ति की जब्ती है।

जालसाजों ने बनाया था वैश्विक नेटवर्क, दिया जाता था कमीशन

जांच में यह भी सामने आया कि बिटकनेक्ट के संस्थापक ने प्रमोटर्स का एक वैश्विक नेटवर्क बनाया हुआ था और उन्हें उनके प्रचार के लिए कमीशन दिया जाता था। निवेशकों को आकर्षित करने के लिए बिटकनेक्ट ने दावा किया वह एक वोलैटिलिटी सॉफ्टवेयर ट्रेडिंग बोट (एक प्रकार का कंप्यूटर प्रोग्राम, जो बाजार में होने वाले उतार-चढ़ाव का विश्लेषण करता है और निवेशकों के पैसे का इस्तेमाल करके ट्रेडिंग करता है) का उपयोग करके निवेशकों के फंड से 40 फीसदी तक मासिक रिटर्न हासिल करेगा।

ईडी ने पाया कि ये दावे झूठे थे क्योंकि आरोपियों को पता था कि बिटकनेक्ट ने निवेशकों के फंड को ट्रेडिंग बोट के जरिए ट्रेड नहीं किया, बल्कि उन्होंने इन फंड को अपने सहयोगियों के लाभ के लिए अपने क्रिप्टो वॉलेट में ट्रांसफर कर दिया।

न्यू इंडिया को-ऑपरेटिव बैंक घोटाले के आरोपी हितेश मेहता को हॉलिडे कोर्ट लाया गया, जानें अपडेट्स

परिवहन विशेष न्यूज

न्यू इंडिया को-ऑपरेटिव बैंक लिमिटेड के पूर्व महाप्रबंधक हितेश प्रवीणचंद मेहता पर कथित तौर पर दादर और गोरेगांव शाखाओं की जिम्मेदारी अपने पास होने के दौरान बैंक से 122 करोड़ रुपये निकालने का आरोप है। दूसरी ओर, केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने शनिवार को कहा कि महंगाई को नियंत्रण में रखते हुए भारत सबसे तेजी विकास करने वाली अर्थव्यवस्था बना हुआ है। उन्होंने कहा कि आने वाले वर्षों में भारत 6 से 8 फीसदी की दर से तेजी से विकास करेगा। जानें कारोबार जगत की अहम खबरें।

नई दिल्ली। न्यू इंडिया को-ऑपरेटिव बैंक घोटाले के आरोपी हितेश मेहता को मुंबई की हॉलिडे कोर्ट में सुनवाई के लिए पेश किया जाएगा। न्यू इंडिया को-ऑपरेटिव बैंक लिमिटेड के पूर्व महाप्रबंधक हितेश प्रवीणचंद मेहता पर कथित तौर पर दादर और गोरेगांव शाखाओं की जिम्मेदारी अपने पास होने के दौरान बैंक से 122 करोड़ रुपये निकालने का आरोप है। आरोप हैं कि उन्होंने अपने पद का दुरुपयोग करते हुए दोनों शाखाओं के खातों से 122 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी की।

अश्विनी वैष्णव बोले- भारत सबसे तेज बढ़ती अर्थव्यवस्था, महंगाई नियंत्रण में

केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने शनिवार को कहा कि महंगाई को नियंत्रण में रखते हुए भारत सबसे तेजी विकास करने वाली अर्थव्यवस्था बना हुआ है। उन्होंने कहा कि आने वाले वर्षों में भारत 6 से 8 फीसदी की दर से तेजी से विकास करेगा, जिसका पूरा श्रेय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण को जाता है। केंद्रीय मंत्री वैष्णव ने कहा, हम एक ऐसी अर्थव्यवस्था देख रहे हैं, जो आज सबसे तेजी से बढ़ती बड़ी अर्थव्यवस्था है। कोरोना महामारी के बावजूद महंगाई नियंत्रण में है। हम आज ऐसी स्थिति में हैं. जहां हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि आने वाले वर्षों में महंगाई को नियंत्रण में रखते हुए 6-8 प्रतिशत की दर से विकास करना जारी रखेंगे।

प्रधानमंत्री मोदी और वित्त मंत्री सीतारमण ने हमेशा निम्न और मध्य आय वाले परिवारों को अपनी सोच के केंद्र में रखा है। इन परिवारों के लिए कई नई योजनाएं शुरू की गई हैं। बजट में सबसे बड़ी राहत दी गई है। इसमें 12 लाख रुपये की सालाना आय को टैक्स फ्री कर दिया गया है। इससे पहले मंगलवार को वैष्णव ने अमेरिका स्थित सेमीकंडक्टर सेवा कंपनी लैम रिसर्च से भारत में 10,000 करोड़ रुपये से अधिक के बड़े निवेश की जानकारी दी थी।

यूपीआई नियम में किया गया बदलाव, ट्रांजैक्शन फेल होने पर तुरंत मिलेगा रिफंड

देश के करोड़ों यूपीआई उपभोक्ताओं के लिए अच्छी खबर है। अब यूपीआई से ट्रांजैक्शन फेल होने पर रिफंड झट से मिल जाएगा। दरअसल, भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम (एनपीसीआई) ने अब चार्जबैक अनुरोधों के लिए स्वीकृति और अस्वीकृति प्रक्रिया को ऑटोमेटेड कर दिया है।

विशेषज्ञों का कहना है कि यूपीआई ट्रांजैक्शन फेल होने की स्थिति में सहज और प्रभावी बनाने की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण कदम है। नई ऑटोमेटेड प्रक्रिया 15 फरवरी, 2025 यानी शनिवार से शुरू हो गई है। अभी अगर आपका यूपीआई ट्रांजेक्शन फेल हो गया है और आपको अभी तक रिफंड नहीं मिला है, तो आपको अपने बैंक से चार्जबैक रिक्वेस्ट करनी होती है। बदले नियम के अनुसार अब आपके बैंक की ओर से उठाया गया यह अनुरोध पहले से ज्यादा तेजी से निपटाया जाएगा, क्योंकि इसे स्वीकार या अस्वीकार करने की प्रक्रिया ऑटोमेटेड (खुद-ब-खुद) हो गई है। यानी प्रक्रिया तेज होने से रिफंड कम समय में जारी होगा। इस नए नियम की अधिसूचना 10 फरवरी, को जारी की गई थी।

एसबीआई: होम लोन सहित सभी कर्ज 0.25% सस्ते

नई दिल्ली। भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) ने होम लोन, कार लोन सहित सभी तरह के कर्ज पर ब्याज दर 0.25 फीसदी घटा दी है। इससे कर्जदार किस्त की रकम या फिर कर्ज की अवधि घटा सकते हैं। बैंक ने बताया, नई दर 15 फरवरी से लागू हो गई हैं। बैंक ने बाहरी बेंचमार्क आधारित कर्ज की दर 9.15% से घटाकर 8.90% और रेपो से जुड़ी कर्ज की दर 8.75% से घटाकर 8.50% कर दी है। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने इसी महीने रेपो दर में 0.25% की कटौती की थी। इसके बाद केनरा बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, यूनियन बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा और अन्य बैंकों ने भी कर्ज की ब्याज दरों में 0.25% की कटौती की थी।

नीता अंबानी को उनके दूरदर्शी नेतृत्व और समाज में असाधारण योगदान के लिए मिला सम्मान, जानें डिटेल्स

रिलायंस फाउंडेशन ने एक्स पर एक सोशल मीडिया पोस्ट में कहा कि यह प्रशस्ति पत्र शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, खेल, कला, संस्कृति और महिला सशक्तिकरण जैसे क्षेत्रों में उनके परिवर्तनकारी प्रभाव के लिए नीता अंबानी की सराहना करता है, जिससे भारत और विश्व भर में लाखों लोगों को लाभ हुआ है।

नई दिल्ली। रिलायंस फाउंडेशन की संस्थापक और अध्यक्ष नीता अंबानी को उनके दूरदर्शी नेतृत्व और समाज में असाधारण योगदान के लिए मैसाचुसेट्स की गवर्नर मौरा हीली की ओर से प्रतिष्ठित गवर्नर प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया है।

रिलायंस फाउंडेशन ने एक्स पर एक सोशल मीडिया पोस्ट में इसकी जानकारी दी। पोस्ट में कहा गया, 'यह प्रशस्ति पत्र शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, खेल, कला, संस्कृति और महिला सशक्तिकरण जैसे क्षेत्रों में उनके परिवर्तनकारी प्रभाव के लिए नीता अंबानी की सराहना करता है, जिससे भारत और विश्व भर में लाखों लोगों को लाभ हुआ है।'

प्रशस्ति पत्र के अनुसार उन्होंने (नीता अंबानी ने) भारत और उसके बाहर लाखों लोगों के जीवन को प्रभावित किया है। बोस्टन में यह प्रशस्ति पत्र दिए जाने के अवसर पर नीता अंबानी ने एक शानदार हाथ से बुनी शिकारगाह बनारसी साड़ी पहनकर भारत की समृद्ध कलात्मक विरासत का परिचय दिया। यह साड़ी जटिल कड़वा बुनाई तकनीक और पारंपरिक कोन्या डिजाइन की विशेषता वाली भारतीय शिल्प कौशल की एक उत्कृष्ट कृति है।

एस जयशंकर जर्मनी में इस्राइल के विदेश मंत्री गिदोन सार से मिले, जानिए किन मुद्दों पर हुई चर्चा

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने जर्मनी में अपने इस्राइली समकक्ष गिदोन सार से मुलाकात की और पश्चिम एशिया की स्थिति और इस्राइल के जरिए एशिया, यूरोप और अमेरिका को जोड़ने के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के दृष्टिकोण सहित कई महत्वपूर्ण मामलों पर चर्चा की। आइए इस मुलाकात के बारे में और जानें।

नई दिल्ली। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने जर्मनी में अपने इस्राइली समकक्ष गिदोन सार से मुलाकात की और पश्चिम एशिया की स्थिति और इस्राइल के जरिए एशिया, यूरोप और अमेरिका को जोड़ने के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के दृष्टिकोण सहित कई महत्वपूर्ण मामलों पर चर्चा की।

दोनों नेताओं ने शनिवार को म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन के अवसर पर मुलाकात की, जो सुरक्षा-कूटनीतिक मामलों पर चर्चा करने के लिए एक प्रमुख वैश्विक मंच है। जयशंकर ने एक्स पर लिखा, ₹#एमएससी2025 के मौके पर इजराइल के विदेश मंत्री गिदोनसार से मिलकर बहुत खुशी हुई। पश्चिम एशिया/मध्य पूर्व की मौजूदा स्थिति पर विचारों का आदान-प्रदान हुआ। हमारी द्विपक्षीय साझेदारी की मजबूती और महत्व को रेखांकित किया गया।₹

इस्राइली विदेश मंत्री के कार्यालय की ओर से जारी एक बयान में कहा गया इस्राइल भारत के साथ अपने संबंधों को रणनीतिक महत्व देता है। बयान में कहा गया कि उन्होंने (सार ने) इस्राइल से होकर एशिया, यूरोप और अमेरिका को जोड़ने के ट्रम्प के दृष्टिकोण पर चर्चा की।

वाशिंगटन में गुरुवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ एक संयुक्त सम्मेलन में ट्रम्प ने कहा कि अमेरिका और भारत ₹इतिहास के सबसे महान व्यापार मार्गों में से एक₹ के निर्माण में मदद करने के लिए मिलकर काम करने पर सहमत हुए हैं। उन्होंने कहा, ₹यह भारत से इस्राइल, इटली और फिर संयुक्त राज्य अमेरिका तक जाएगा, और हमारे साझेदारों को बंदरगाहों, रेलमार्गों और समुद्र के नीचे बिछाई गई बहुत सारी केबलों से जोड़ेगा। यह एक बड़ी उपलब्धि है।₹

उन्होंने कहा, ₹इसमें बहुत सारा पैसा खर्च होगा, और हमने पहले ही कुछ खर्च कर दिया है, लेकिन आगे बने रहने तथा अग्रणी बने रहने के लिए हमें और भी अधिक खर्च करना होगा।₹ भारत से मध्य पूर्व के माध्यम से यूरोप तक बुनियादी ढांचे को जोड़ने के लिए एक मौजूदा परियोजना है। इस परियोजना की घोषणा नई दिल्ली में 2023 जी20 शिखर सम्मेलन में की गई थी।

इस्राइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने तब इसे ₹हमारे इतिहास की सबसे बड़ी सहयोग परियोजना₹ बताया था और कहा था कि यह ₹मध्य पूर्व, इजरायल की सूरत बदल देगी और पूरे विश्व को प्रभावित करेगी।₹ इस्राइल के बयान में कहा गया कि जयशंकर और सार ने हूथियों और ईरान द्वारा व्यापार मार्गों पर हमलों से उत्पन्न चुनौतियों के बारे में भी बात की। हाल ही में इस्राइल और हमास के बीच संघर्ष के दौरान हौथियों ने रणनीतिक बाब-अल-मन्देब क्षेत्र में जहाजों पर बार-बार हमले किए हैं, उनका दावा है कि वे इजरायल से जुड़े जहाजों को निशाना बना रहे हैं।

खाद्य तेल की कीमतें एक साल में 39 फीसदी तक बढ़ीं, फिर बेपटरी हो सकती है तेजी से घट रही खुदरा महंगाई दर

परिवहन विशेष न्यूज

उपभोक्ता मामलों के मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक, मूंगफली तेल के दाम 14 फरवरी, 2024 को 190 रुपये लीटर थे, जो अब 192 रुपये लीटर के पार पहुंच गया है। सरसो तेल का दाम इसी दौरान 136 से 169 रुपये लीटर हो गया है। यानी 24 फीसदी की बढ़त हुई है।

नई दिल्ली। खाने वाले तेल की कीमतें एक बार फिर तेजी से बढ़ रही हैं। एक साल में इनके दाम 39 फीसदी तक बढ़ गए हैं। अगर यही रुझान रहा तो पिछले तीन महीने से तेजी से घट रही खुदरा महंगाई दर फिर बेपटरी हो सकती है। इससे विकास को बढ़ावा देने और रेपो दर में कटौती की आरबीआई की योजना को भी झटका लग सकता है। उपभोक्ता मामलों के मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक, मूंगफली तेल के दाम 14 फरवरी, 2024 को 190 रुपये लीटर थे, जो अब 192 रुपये लीटर के पार पहुंच गया है। सरसो तेल का दाम इसी दौरान 136 से 169 रुपये लीटर हो गया है। यानी 24 फीसदी की बढ़त हुई है। वनस्पति तेल का भाव 21 प्रतिशत तेजी के साथ 151 रुपये लीटर हो गया है, जो एक साल पहले 125 रुपये लीटर बिक रहा था।

आंकड़े बताते हैं कि सोयातेल भी 19 फीसदी महंगा हुआ है। इसका दाम 122 से बढ़कर 145 रुपये लीटर पर पहुंच गया है। सूरजमुखी तेल 27 फीसदी महंगा हुआ है। इसका दाम 123 से बढ़कर 156 रुपये लीटर पर पहुंच गया है। सबसे अधिक 39 फीसदी की तेजी पाम तेल में आई है। एक साल पहले इसकी कीमत 99 रुपये लीटर थी, लेकिन अब यह 137 रुपये के पार हो गया है।

पाम तेल का असर रोजाना उपयोग वाली वस्तुओं पर

पाम तेल महंगा होने से रोजाना उपयोग वाली वस्तुओं पर पड़ता है। एफएमसीजी कंपनियां अपने उत्पादों जैसे साबुन, शैंपू आदि को बनाने के लिए बड़े पैमाने पर पाम तेल का उपयोग करती हैं। ऐसे में इसकी तेजी से इन वस्तुओं की महंगाई दर बढ़ जाती है। हाल में एफएमसीजी कंपनियों ने अपने उत्पादों की कीमतों में अच्छी खासी बढ़त भी की है।

आलू और प्याज भी हुए महंगे

पिछले एक साल के दौरान आलू और प्याज भी महंगे हो गए हैं। हालांकि, इस समय अन्य सब्जियां काफी सस्ती हैं। आलू एक साल पहले 22 रुपये किलो बिक रहा था, जो अब 25 रुपये किलो के पार है। इसी तरह प्याज भी 32 रुपये से बढ़कर 36 रुपये किलो पर पहुंच गया है। हालांकि, खुदरा बाजारों में इनकी कीमतें इससे भी ज्यादा है।

टमाटर थोक भाव में 3 रुपये किलो, नहीं निकल रही लागत

उधर, टमाटर की कीमतें अब तीन रुपये किलो थोक भाव में आ गई हैं। हालात यह है कि कीमतें इतनी कम होने से अब किसानों की लागत भी नहीं निकल पा रही है। इस वजह से वे टमाटर को खेतों में ही छोड़ रहे हैं। हालांकि, खुदरा बाजार में यह अभी भी 20-25 रुपये किलो बिक रहा है। छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र में टमाटर किसानों को बहुत ज्यादा घाटा हो रहा है। छत्तीसगढ़ के दुर्ग, जशपुर, महासमुंद, मुंगेली, बालोद जिले में बड़े पैमाने पर टमाटर उत्पादन व उसका निर्यात होता है। यहां थोक में 2 रुपये तो खुदरा में 5 रुपये टमाटर बिक रहा है।

सभी राज्यों में टमाटर की खेती अच्छी

छत्तीसगढ़ के कारोबारी बताते हैं कि यहां का टमाटर महाराष्ट्र, बंगाल व अन्य प्रदेशों में जाता था, लेकिन इस साल दूसरे राज्यों में टमाटर का उत्पादन अच्छा हुआ है। इसके अलावा पहले पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल व अन्य पड़ोसी देशों में राज्य का टमाटर जाता था। कुछ सालों से नेपाल छोड़ अन्य देशों में आपूर्ति बंद है।

बचा जा सकता है मानव निर्मित आपदा से !

15 फरवरी 2025 की रात नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर भगदड़ मचने से 15 लोगों की मौत हो गई, यह बहुत ही दुखद है। मरने वालों में 11 महिलाएं, दो पुरुष और दो बच्चे शामिल बताए जा रहे हैं। हादसे में 15 लोग घायल हो गए, जिन्हें अस्पतालों में भर्ती कराया गया है। दरअसल, प्रयागराज जाने के लिए स्टेशन पर भारी भीड़ जुटी थी। प्रयागराज एक्सप्रेस के कारण प्लेटफार्म नंबर 14 और 15 पर भारी भीड़ थी। हाल फिलहाल, रेलवे बोर्ड ने घटना की उच्च स्तरीय जांच के आदेश दे दिए हैं। हादसे के बाद राहत कर्मियों को तैनात कर दिया गया है और एलजी इसकी लगातार निगरानी कर रहे हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि दिल्ली रेलवे स्टेशन पर अव्यवस्थाओं के चलते और भगदड़ के कारण जान-माल दोनों का ही नुकसान हुआ है।इसी बीच रेलवे ने प्रयागराज महाकुंभ के लिए चार विशेष गाड़ियां भी चलाने की घोषणा कर दी है, इससे भीड़ में कमी देखने को मिल रही है। बताया जा रहा है कि ट्रेनों के रद्द होने की अफवाह से भगदड़ मची थी। वास्तव में, यह घटना नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर उस समय हुई, जब अचानक प्रयागराज जाने वाली दो ट्रेनों के रद्द होने की अफवाह के बाद यात्रियों में अफरा-तफरी मच गई। बताया जा रहा है कि प्लेटफार्म नंबर 14 और 15, जो एक साथ हैं, के बीच अचानक भारी भीड़ पहुंच गई। रेलवे अधिकारियों के मुताबिक रविवार को अवकाश होने के कारण शनिवार को प्रयागराज जाने के लिए काफी संख्या में लोग जुट गए। पाठकों को बताता चलूं कि इससे पहले 29 जनवरी को प्रयागराज के महाकुंभ में 40 लोगों की मौत हो गई थी।वहीं, 10 फरवरी 2013 को भी कुंभ के दौरान प्रयागराज स्टेशन पर भगदड़ मची थी। जानकारी के अनुसार इस हादसे में 36 लोग मारे गए थे। वास्तव में देश में महाकुंभ एक बड़ा आयोजन है और इसमें भारी संख्या में भीड़ उमड़ रही है। भारत ही नहीं विदेशों तक से महाकुंभ में अनेक लोग आ रहे हैं। अमूमन देश में किसी त्योहार पर भी इतनी भीड़ नहीं उमड़ती है लेकिन इस बार महाकुंभ में भीड़ का सैलाब है। मीडिया रिपोर्ट्स के हवाले से दिल्ली हादसे को लेकर यह खबरें भी आ रहीं हैं कि गलत अनाउंसमेंट और प्रशासन की लापरवाही इस हादसे का मुख्य कारण बनी। दिल्ली भारत की राजधानी है और अक्सर यहां रेलवे स्टेशन पर काफी भीड़ रहती है। महाकुंभ के कारण पहले से ही यात्रियों की संख्या अधिक थी। ऐसे में भीड़ प्रबंधन की ठोस व्यवस्थाएं की जानी बहुत जरूरी थी। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, अचानक प्लेटफॉर्म बदलाव की गलत घोषणा हुई, जिससे यात्रियों में अफरातफरी मच गई और भगदड़ हो गई।शुरुआती जांच में रेलवे प्रशासन और स्टेशन प्रबंधन की गंभीर लापरवाही सामने आ रही है। पुलिस सूत्रों के अनुसार, गलत घोषणाएं करने वाले अधिकारियों की पहचान की जा रही है। रेलवे और सुरक्षा एजेंसियों की ओर से भीड़ नियंत्रण की योजना की जांच हो रही है। घटना के समय ड्यूटी पर मौजूद अधिकारियों से भी लगातार पूछताछ जारी है। बताया यह भी जा रहा है कि भीड़ को कंट्रोल करने के लिए प्लेटफॉर्म 14 और 15 की एक-एक सीढ़ी बंद कर दी गई थी। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि यह पहली बार नहीं है जब इस तरह से अचानक रेलवे स्टेशन पर भगदड़ मची हो। इससे पहले भी इस तरह की कई घटनाएं घटित हो चुकी हैं। 29 सितंबर 2017 को मुंबई के एलफिंस्टन रोड रेलवे स्टेशन के फुट ओवरब्रिज पर भगदड़ मच गई थी और इस भगदड़ में 23 लोगों की मौत हो गई थी औ 39 अन्य यात्री घायल हो गए थे। दरअसल ,यह हादसा पुल गिरने की अफवाह के कारण हुआ था। इसी प्रकार से महाराष्ट्र के मुंबई में बांद्रा रेलवे स्टेशन पर भगदड़ मच गई थी, जिससे भगदड़ में 9 यात्री घायल हो गए थे। इतना ही नहीं,

10 फरवरी 2013 को कुंभ मेले के दौरान उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद रेलवे स्टेशन पर अचानक मची भगदड़ में भी 32 लोगों की मौत हो गई थी। इसी प्रकार से वर्ष 2007 में भी मुगल सराय जंक्शन भगदड़ में 14 महिलाओं की मौत हो गई थी।वहीं इस घटना में 40 से अधिक यात्री घायल हो गए थे। वास्तव में,भगदड़ भीड़ प्रबंधन की असफलता या अभाव की स्थिति में पैदा हुई मानव निर्मित आपदा है। अक्सर भगदड़ किसी अफवाह के कारण पैदा होती है और भगदड़ में लोग दिशाहीन होकर इधर-उधर भागने लगते हैं, जिसके परिणामस्वरूप दम घुटने व कुचलने से चोटिल होने एवं मृत्यु की घटनाएँ होती हैं। अक्सर भगदड़ मचने के पीछे जो

कारण निहित होते हैं उनमें क्रमशः मनोरंजन कार्यक्रम,एस्केलेटर और मूविंग वॉकवे, खाद्य वितरण, जुलूस, प्राकृतिक आपदाएँ, धार्मिक आयोजन, धार्मिक/अन्य आयोजनों के दौरान आग लगने की घटनाएँ, दंगे, खेल आयोजन, मौसम संबंधी घटनाएँ आदि शामिल होते हैं। बैरिकेड्स, अवरोध, अस्थायी पुल, अस्थायी संरचनाएँ और पुल की रेलिंग का गिरना, दुर्गम क्षेत्र (पहाड़ियों की चोटी पर स्थित धार्मिक स्थल जहाँ पहुँचना मुश्किल है), फिसलन युक्त या कीचड़ युक्त मार्ग, संकरी गलियाँ एवं संकरी सीढ़ियाँ, खराब सुरक्षा रेलिंग, कम रोशनी वाली सीढ़ियाँ, बिना खिड़की वाली संरचना, संकीर्ण एवं बहुत कम प्रवेश या निकास स्थान, आपातकालीन निकास का अभाव भी बहुत बार भगदड़ के कारण बन सकते हैं। अप्रभावी भीड़ प्रबंधन तो भगदड़ मचने का कारण है ही। बहुत बार यह देखा जाता है कि किसी एक प्रमुख निकास मार्ग पर ही लोगों की निर्भरता होती है ,जो भगदड़ का कारण बन जाती है। आज अक्सर यह भी देखने को मिलता है कि किसी कार्यक्रम विशेष के लिए क्षमता से अधिक लोगों को अनुमति दे दी जाती है। बहुत से स्थानों पर उचित सार्वजनिक संबोधन प्रणाली का भी अभाव होता है, जिससे सूचना देने में दिक्कत आती है। भीड़ अनेक बार गैर-जिम्मेदाराना व्यवहार अपनाती है और सुरक्षा नियमों का ठीक से पालन नहीं करती है। आग या बिजली का प्रसार भी अनेक बार भगदड़ मचने का कारण बन सकता है। इसलिए सुरक्षा और निगरानी के उपाय पुख्ता होने चाहिए। सुरक्षाकर्मियों की नियुक्ति से पूर्व रिहर्सल प्रैक्टिस भी की जानी चाहिए ताकि भगदड़ आदि के समय सुरक्षा उपायों को तुरंत किया जा सके। सीसीटीवी, आधुनिक तकनीक को भी इस्तेमाल में लाया जा सकता है।पुलिस प्रशासन, अग्निशमन सेवा, चिकित्सा सेवा एजेंसियों और आयोजक प्रबंधन के बीच समन्वय होना भी बहुत ही जरूरी और आवश्यक है। संचार व्यवस्थाएं भी अच्छी और सुदृढ़ होनी चाहिए। भगदड़ से बचने के लिए भगदड़ वाले स्थानों पर आगमन एवं निकास की समुचित व्यवस्था (पुरूष एवं महिलाओं के लिए अलग-अलग) यथा बैरिकेडिंग की व्यवस्था होनी चाहिए।चिकित्सा दल एवं एम्बुलेंस की पर्याप्त व्यवस्था, बिजली के तारों एवं उपकरणों में सुरक्षा के पूर्ण उपायों की व्यवस्था, पार्किंग की समुचित एवं सुचारू व्यवस्था, नियंत्रण कक्ष, पर्याप्त रौशनी, वॉच टावर की व्यवस्था होनी चाहिए। इतना ही नहीं

उपहार, भोजन, प्रसाद, कबंल आदि मुफत वितरण के दौरान भगदड़ रोकने की व्यवस्था की जाए एवं अधिक भीड़ होने पर सामग्री के विवरण पर प्रतिबंध लगाने हेतु आयोजकों केा पर्याप्त निर्देश दिए जाने चाहिए। किसी भी स्थान पर अनावश्यक रूप से एक स्थान पर भीड़ नहीं लगानी चाहिए।छोटे बच्चों, महिलाओं, बीमारों या वृद्धों को मेले में ले जाते समय उनकी जेब में (या गले में लॉकेट की तरह) घर का पता और फोन नम्बर साथ रखा जाना चाहिए।भगदड़ के समय संयम पूर्ण व्यवहार करना चाहिए और घबराना नहीं चाहिए।किसी भी आपात स्थिति में तत्काल नियंत्रण कक्ष में संपर्क स्थापित करने के प्रयास किए जाने चाहिए।भीड़ वाले स्थान पर किसी भी प्रकार के पटाखे/ज्वलनशील पदार्थ नहीं ले जाना चाहिए तथा धूमपान नहीं करना चाहिए।प्रशासन की ओर से की जाने वाली घोषणाओं को ध्यान से सुनना चाहिए और उसके अनुसार व्यवहार करना चाहिए।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड

संस्कारशाला : फरीदाबाद के टाउन पार्क सेक्टर 31 में मॉर्निंग वॉक क्लब

परिवहन विशेष न्यूज

आज की भागदौड़ भरी ज़िंदगी में, जहाँ लोग मोबाइल और सोशल मीडिया की दुनिया में उलझे हुए हैं, वहीं कुछ वरिष्ठ नागरिक अपने दिन की शुरुआत हंसी-ठिठोली, योग और सकारात्मक विचारों के आदान-प्रदान से करते हैं। फरीदाबाद के टाउन पार्क, सेक्टर 31 में मॉर्निंग वॉक क्लब न केवल एक व्यायाम स्थल है, बल्कि यह समाज के वरिष्ठ नागरिकों के लिए एक मिलन स्थल भी बन चुका है।

हंसी और स्वास्थ्य का संगमहर सुबह यहाँ पर वरिष्ठ नागरिक इकट्ठा होते हैं और हंसी-योग (लाफ्टर थेरेपी) के माध्यम से अपने शरीर और मन को ताजगी से भर देते हैं। उनकी मुस्कान और खिलखिलाहट पूरे पार्क में ऊर्जा का संचार करती है। योग, ध्यान और सकारात्मक बातचीत के ज़रिए वे न केवल खुद को स्वस्थ रखते हैं, बल्कि समाज में भी एक सकारात्मक माहौल का निर्माण करते हैं।

संस्कारशालाः युवाओं और वरिष्ठ नागरिकों के बीच सेतुसंस्कारशाला का उद्देश्य सिर्फ़ सीखना ही नहीं, बल्कि अनुभवों को साझा करना भी है। वरिष्ठ नागरिकों के अनुभव हमारे लिए अमूल्य हैं, लेकिन वर्तमान डिजिटल युग में हम उनसे संवाद स्थापित

करने में पीछे रह जाते हैं। ऐसे में संस्कारशाला के माध्यम से युवाओं को प्रेरित किया जाता है कि वे वरिष्ठ नागरिकों से जुड़े, उनसे जीवन के अनुभवों को सीखे और समाज में एक स्वस्थ और प्रेरणादायक वातावरण तैयार करें।

समाज के लिए एक नया संदेशयह पहल सिर्फ़ एक पार्क तक सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि इसे हर समाज, हर कॉलोनी और हर पार्क में लागू किया जाना चाहिए। यदि हम अपनी व्यस्त दिनचर्या में से कुछ समय निकालकर अपने वरिष्ठ नागरिकों के साथ व्यतीत करें, तो न केवल उनका जीवन खुशहाल बनेगा, बल्कि हमें भी उनके अनुभवों से सीखने का अवसर मिलेगा।

संस्कारशाला के इस अभियान में सभी को आगे आकर योगदान देना चाहिए, ताकि हम एक ऐसा समाज बना सकें, जहाँ हर पीढ़ी एक-दूसरे से सीखें, मिलकर हंसे और एक सकारात्मक परिवेश का निर्माण करें।

मेडिकल रिप्रजेंटेटिव के दो दिवसीय क्रिकेट मैच का हुआ शुभारंभ

परिवहन विशेष अनूप कुमार शर्मा

भीलवाड़ा राजस्थान मेडिकल एवं सेल्स रिप्रजेंटेटिव यूनियन (आरएमएसआरयू) भीलवाड़ा यूनिट के तीसरे वार्षिक क्रिकेट टूर्नामेंट का सुखाड़िया स्टेडियम में विधायक महोदय श्रीमान अशोक जी कोठारी ने शुभारंभ किया।

इस टूर्नामेंट में मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमान एडवोकेट आजाद जी शर्मा व श्री हरि कंसल्टेंसी के डायरेक्टर डॉक्टर श्री राजेन्द्र जी छिपा रहे जिन्होंने सभी खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन कर शुभकामनाएं दी।

आरएमएसआरयू के जिला सचिव रामेश्वर लाल जाट व कोषाध्यक्ष कपिल वर्मा ने बताया कि भीलवाड़ा व चित्तौड़ के मेडिकल रिप्रजेंटेटिव के क्रिकेट टूर्नामेंट 15 व 16 फरवरी को सुखाड़िया स्टेडियम में आयोजित हो रहा है, जिसमे 7 टीमें भाग ले रही हैं।

स्टेट वर्किंग कमेटी मेंबर सूर्यप्रकाश सेन व सभी वर्किंग कमेटी मेंबर रूपेश साहू, कुलदीप सिंह, महावीर पांडे, राजेंद्र पांडे, सोहन सिंह नेगी, अंकुर माहेश्वरी, भरत सेन, सत्यनारायण साहू आदि ने भरपूर मेहनत करके पहले दिन टूर्नामेंट का सफल आयोजन करने में सहयोग किया।

रैकेट के जरिए नियुक्तियों को लेकर चर्चा में यूपी का स्वास्थ्य विभाग : एच एम के पी ने की कार्यवाही की मांग

– मिली भगत के चलते ही भर्तियों में रोक के बाद भी पहले संविदा आउट सोरसिंग पर भर्ती फिर कोर्ट से सीधे स्थायी नियुक्ति के एक पक्षीय आदेश के जरिए घर बैठे बेतन के रूप में लाखों रुपए के बंदर वाट में भी गिरोह के जरिए भारी लाभ उठा रहे कई अधिकारी

सुनील बाजपेई, कानपुर। उत्तर प्रदेश में कुछ अधिकारियों कर्मचारियों की मिली भगत वाला एक ऐसा भी शातिर दिमाग गिरोह सक्रिय है ,जो मुंह मांगी कीमत लेकर स्वास्थ्य विभाग में नौकरी लगवाने को लेकर चर्चा का विषय बना हुआ है। विभागीय सूत्रों द्वारा किए गए दावे पर यकीन करें तो इस गिरोह की वजह से ही स्वास्थ्य विभाग के कई अधिकारी और कर्मचारी आय से अधिक लाखों करोड़ों की नामी बेनामी चल अचल संपत्ति के मालिक भी बनने में सफल हो चुके हैं। स्वास्थ्य विभाग में इस जबर्दस्त आर्थिक भ्रष्टाचार की इस वास्तविक वजह का मुख्य संबंध मुंह मांगी कीमत लेकर नियुक्तियां के खेल से बताया गया है। मामले में योगी सरकार से जांच कर प्रभावी कार्रवाई किए जाने की मांग भी की गई है।

सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार सीधी भर्तियों में रोक के बाद भी स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी व बिचौलियों तथा शासन तंत्र में बैठे कुछ लोग स्थायी नियुक्ति कराने के लिए पहले संविदा और आउट सोरसिंग पर भर्ती कराने के साथ साथ गैर नियुक्ति अधिकारी को प्रतिवादी बनाते हुए उनके खिलाफ श्रम न्यायालयों में वाद प्रस्तुत कर देते हैं।

सूत्रों के मुताबिक इसके बाद अधिकारियों की मिली भगत से उदासीनता दिखाते हुए एक पक्षीय आदेश करा लिया जाता है और फिर इसी को आधार बनाकर कर्मचारियों को सीधे नियुक्ति किए जाने का आदेश हो जाता है ,जिसका परिणाम यह होता है कि संबंधित व्यक्ति अपनी पूरी बैठकी के वेतन के साथ अधिनियमों का धता बताते हुए न केवल नियुक्ति पा जाता है बल्कि सालों घर बैठे रहने के बावजूद भी लाखों रुपए बेतन के रूप में भी पा जाता है।

सूत्रों ने यह भी दावा किया कि स्वास्थ्य विभाग में अनुचित तरीके से नियुक्तियों के इस खेल में बिचौलियों की अच्छी खासी भूमिका होती है। बताया कि इस तरह के विवादों में अधिकारियों द्वारा एक रैकेट के माध्यम से श्रम न्यायालय, उच्च न्यायालय, व उच्चतम न्यायालय में मन माने ढंग से उदासीनता दिखाते हुए एक पक्षीय आदेश को पुर्नास्थापित किया जाता रहता है। जिसके पीछे की मुख्य मंशा संबंधित को मिलने लाभ के बंदरबाट भारी आर्थिक फायदा उठाना भी बताई जाती है

भरोसेमंद सूत्रों ने भी दावा किया कि इस संदर्भ में लाभप्राप्त व्यक्ति द्वारा स्वास्थ्य भवन के साथ-साथ स्वास्थ्य मंत्री को भी गुमराह कर आदेश प्राप्त किये जाते हैं। इस रैकेट में अपने आपको काली का भक्त कहने वाला एक बाहरी व्यक्ति भी सम्मिलित है। स्वास्थ्य भवन और श्रम विभाग के अधिकारी इसी की साजिश युक्त योजना के मुताबिक करोड़ों रूपये की चपत स्वास्थ्य विभाग को लगाने में लगातार सफल हो रहे हैं।

सूत्रों के मुताबिक अधिकारियों की मिली भगत का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि स्वास्थ्य विभाग के मुख्यालय अधिकारियों द्वारा सरकार को आर्थिक क्षति पहुँचाने वाले ऐसे विवादों पर ध्यान ही नहीं दिया जाता है।

विभागीय सूत्र इस गंभीर मामले में भाऊराव देवरस संयुक्त चिकित्सालय, महानगर लखनऊ के मुख्य चिकित्सा अधीक्षक का भी उदाहरण देते हैं ,जिसके मुताबिक पूर्ववर्ती 2013 से 2018 के मध्य नियुक्त किये गये मुख्य चिकित्सा अधीक्षक द्वारा फर्जी व बिना अधिकार क्षेत्र के लाभ पहुंचाने की दृष्टि से एक महिला की कम्प्यूटर आपरेटर के पद पर नियुक्त दर्शा दिया गया। जबकि अनुचित तरीके से नियम विरुद्ध की गई यह नियुक्ति और इसी क्रम में उसे नियमित करने का विषय भी उनके अधिकारक्षेत्र में था ही नहीं। मतलब ना तो उनके पास नियुक्ति का अधिकार क्षेत्र था और न ही नियमित करने का कोई आधार।

स्वास्थ्य भवन मुख्यालय से जुड़े सूत्रों ने यह भी दावा किया कि भ्रष्टाचार के इस प्रकरण में शासनादेशों के विपरीत सेवा समाप्ति के पश्चात लचीला रूख अपनाते हुए उसे श्रम विभाग में नियमितीकरण के आदेश भी कराये गये और फिर उसी आदेश को मा० उच्च न्यायालय व उच्चतम न्यायालय में भी बिना समुचित सुनवाई के यथावत रखा गया। मतलब इस प्रकार सीधी भर्ती का रास्ता जबरन खोलकर उसके भुगतान का भी रास्ता खोल दिया गया।

खास बात यह भी कि इस सम्बन्ध में विभाग के अधिकारियों और उनके प्रतिनिधियों द्वारा भी घोर लापरवाही बरती गयी, जिसके फल स्वरुप ही इसी तरह के तमाम वाद स्वास्थ विभाग में संविदा आधारित कर्मचारियों द्वारा उठाये जा रहे हैं।

स्वास्थ भवन में हो रही चर्चाओं के आधार पर भरोसे मंद द्वारा दी गई जानकारी के मुताबिक स्वास्थ्य मंत्री भी बिना स्थितियों को समुचित संज्ञान में लिये ना जाने कितने प्रार्थना पत्रों पर अग्रेतर कार्यवाही का आदेश जारी कर चुके बताए जाते हैं। साथ भी स्वास्थ्य सचिव व स्वास्थ्य निदेशक का मौन भी चर्चा में बताया जाता है।

फिलहाल हिन्द मजदूर किसान पंचायत के राष्ट्रीय सचिव व प्रदेश महामंत्री और पाण्डेय एसोसिएट के कार्यकर्ता वरिष्ठ श्रमिक नेता राकेश मणि पाण्डेय ने मामले में घोर चिन्ता व्यक्त करते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और स्वास्थ्य मंत्री बृजेश पाठक से शासन के दिशा निर्देशों की अवहेलना करते हुए इस प्रकार की नियुक्तियों में सहायक स्वास्थ्य विभाग के भ्रष्ट अधिकारियों और उनके संरक्षण में संचालत शातिर रैकेट के भी खिलाफ उच्च स्तरीय जांच कर प्रभावी कार्यवाही किए जाने की जोरदार मांग भी की है। क्या वास्तव में ऐसा हो पाएगा या फिर यह शातिर दिमाग गिरोह अपने संरक्षण दाता अधिकारियों की मिली भगत से अपने को साफ बचा ले जाएगा। यह आने वाला वक्त ही बताएगा।

रिदमशाला ने सूरजकुंड मेले 2025 में नाइजीरियाई कलाकारों संग दी मनमोहक प्रस्तुति

परिवहन विशेष न्यूज

सूरजकुंड मेला 2025 में संगीत और संस्कृति के रंग बिखेरते हुए रिदमशाला ने नाइजीरिया के प्रतिष्ठित कलाकारों के साथ एक शानदार लाइव प्रस्तुति दी। इस विशेष सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम में अंकुर शरण और नाइजीरियाई रिदमिस्ट्स ने पारंपरिक नाइजीरियाई वाद्ययंत्रों की मनमोहक ध्वनियों से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

लोकल बीट्स का अनूठा संगमरिदमशाला द्वारा प्रस्तुत इस संगीतमय कार्यक्रम में नाइजीरियाई पारंपरिक वाद्ययंत्रों की मधुर ध्वनियां गूंजी, जिसने भारतीय दर्शकों को वैश्विक संगीत की विविधता से परिचित कराया। ढोल, जांबे और अन्य लोक वाद्ययंत्रों की अनुगूंज ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

जनसमुदाय ने सराहा सांस्कृतिक मेल-

जोल कोयह सांस्कृतिक समागम भारत और नाइजीरिया के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान की भावना को मजबूत करने वाला साबित हुआ। दर्शकों ने इस अनूठे प्रयास की भरपूर सराहना की और कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रमों से विभिन्न देशों की सांस्कृतिक विरासत को और भी गहराई से समझने का अवसर मिलता है। वहीं, नाइजीरियाई कला समुदाय भी इस पहल से अत्यंत प्रसन्न दिखा और उन्होंने इस आयोजन का हिस्सा बनने पर गर्व महसूस किया।

रिदमशालाः एक वैश्विक मंच रिदमशाला केवल एक संगीत मंच नहीं, बल्कि यह राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय कलाकारों के बीच सांस्कृतिक और कलात्मक साझेदारी को प्रोत्साहित करने वाला एक सशक्त मंच बन चुका है। रिदमशाला समय-समय पर विभिन्न कार्यशालाओं और पहल का आयोजन करती है, जिससे कलाकारों को अपनी कला को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शित करने का अवसर मिलता है।

रिदमशाला की यह प्रस्तुति न केवल भारतीय संगीत प्रेमियों के लिए एक अविस्मरणीय अनुभव थी, बल्कि यह भारत और नाइजीरिया के सांस्कृतिक संबंधों को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने में भी महत्वपूर्ण साबित हुई। आने वाले समय में रिदमशाला और भी कई सांस्कृतिक आयोजनों एवं कार्यशालाओं की मेजबानी करेगा, जिसमें विभिन्न देशों के कलाकार एकजुट होकर संगीत और कला के माध्यम से प्रेम और एकता का संदेश देंगे।

भारत का लोकतंत्र: केवल व्यवस्था नहीं, आत्मसम्मान की पराकाष्ठा लोकतंत्र: पश्चिमी बपौती नहीं, भारतीय विरासत

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वरः मो बॉस परेशान कर रहा है। कभी-कभी मैं अपनी बस दुर्घटना के बारे में सोचकर उत्साहित हो जाता हूं। और कहाँ मेरी बस दुर्घटना के कारण छात्रों की मृत्यु हो रही है? कहाँ लोगों ने बुजुर्गों और महिलाओं को कुचला है? कहाँ लोगों ने मेरी बस में आग लगाई है? बस दुर्घटनाओं को लेकर दिन-प्रतिदिन मिल रही शिकायतों के बाद अब सरकार ने दुर्घटनाओं को कम करने के लिए तकनीक का उपयोग करने का बड़ा कदम उठाया है।मो बस ADAS (एडवांस ड्राइवर असिस्टेंस सिस्टम) से सुसज्जित होगी। आपको चेतावनी देने के लिए सायरन बजेगा। शहरी विकास मंत्री कृष्ण चंद्र महापात्रा ने इस संबंध में जानकारी दी। यह कदम पिछले कुछ दिनों से मो बस में हो रही दुर्घटनाओं को रोकने के लिए उठाया गया है। यदि चालक पलक झपकाएगा या कोई अन्य गलती करेगा तो सायरन बज उठेगा। इसके साथ ही मेरी सभी बसों में कैमरे लगाए जाएंगे। मंत्री ने कहा कि दुर्घटनाओं में कमी लाने के लिए 40 किलोमीटर प्रति घंटे का स्पीड गवर्नर लगाया गया है।यह एक ऐसा साधन है जिससे दुर्घटनाओं को रोका जा सकता है। यदि यह तकनीक लागू हो जाए तो वाहन स्वचालित रूप से यातायात संकेतों को पहचानने में सक्षम हो जाएगा। इस स्थिति में वाहन एक लेन से दूसरी लेन में चला जाएगा। वाहन की गति सीमा क्या होगी? किस क्षेत्र में वाहन की गति क्या होगी? यह वाहन के सामने लगे संकेतों या पट्टिकाओं का भी पता लगा सकता है तथा तदनुसार वाहन की गति को प्रतिबंधित कर सकता है।

डॉ मुश्ताक अहमद शाह सहज़ हरदा मध्यप्रदेश

प्रकाशन हेतु रचना

अल्फ़ाज़ों को हिफ़ाज़त से छुपा भी देना,

नाराज़ है जो तु तो मैं भी बेचैन बड़ा हूं,
बेरुखी का सबब मुझको बता भी देना,

जा रहे हो तर्क तआलूक इस तरह करके,
बहुत जल्दी हमें सरकार भुला भी देना,

खतों के लिए बेताबी तेरी बजा है लेकिन,
अल्फ़ाज़ों को हिफ़ाज़त से छुपा भी देना,

तेरे दीदार की तलब है जैसे तु कोई चांद,
मुस्कुरा कर ज़रा चहरे को छुपा भी लेना ,

हाथों से तेरे जन्नत निकल जाये न कहीं,
नाज़ वाल्दैन के ₹मुश्ताक₹ उठा भी लेना,

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095 . newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी .आर .बी . एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023